चोटी की पकड़

[१]

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

किताब महल
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण, १९४९

प्रकाशक—किताब महल, ज़ीरो रोड, इलाहाबाद।

मुद्रक—भगवनकृष्ण दीक्षित, दीक्षित प्रेस, इलाहाबाद।

श्रीमत् स्वामी विवेकानन्द जी

महाराज की

पुण्य स्मृति में

—निराला

निवेदन

'चोटी का पकड़' आपके सामने है। स्वदेशी-आन्दोलन की कथा है। लम्बी है, वैसी ही रोचक। पढ़ने पर आपकी समझ में आ जायगा। युग की चीज़ बनाई गई है। जितना हिस्सा इसमें है, कथा का हिसाब उससे समझ में आ जायगा। इसकी चार पुस्तकें निकालने का विचार है। मुमकिन, दूसरी इससे कुछ बड़ी हो। चरित्र इसमें मुन्ना बाँदी का निखरा है। अगले में प्रभाकर का। इस बड़े उपन्यास को पढ़िएगा तो ज्ञान और आनन्द वैसे ही बढ़ेंगे।

—निराला

चोटी की पकड़

[१]

सत्रहवीं सदी का पुराना मकान। मकान नहीं, प्रासाद; बल्कि गढ़। दो मील घेरकर चारदीवार। बड़े-बड़े दो प्रासाद। एक पुराना, एक नया। हमारा मतलब पुराने से है। नये में जागीरदार रहते हैं। हैसियत एक अच्छे राजे की। कई ड्योढ़ियाँ। हर ड्योढ़ी पर पहरेदार। कितने ही मन्दिर, उद्यान, मैदान, तालाब, प्राचीर, कचहरी। दोनों ओर आम-लगी सीधी-तिरछी चौड़ी-सकरी सजी सड़कें। पीपल के नीचे चबूतरा, देवता। इक्के-दुक्के आदमी आते और जाते हुए।

भयङ्कर अट्टालिका। पीछे की तरफ कुछ गिरी हुई। फिर भी विशाल उद्यान की ऊँची प्राचीर से सुरक्षित। भीतर भी रक्षा का अन्तराल उठा हुआ। निकासों पर पहरे। पुरखों के सदी-सदी के जरीन वस्त्र, बासन, तम्बू, राजगृह के अनेकानेक साधन, माल-असबाब, कागज़ात और ख़ज़ाना रहता है। कितने ही कमरों में, दालानों में, बड़ी-बड़ी बैठकों में, आदम-आकार की गची काठ की सैकड़ों पेटियाँ हैं, भीतर से कुफ़्ल लगा हुआ। नीचे, सिंह-द्वार पर, लोहे के बड़े-बड़े सन्दूकों में राजकोष है। बन्दूक़ का पहरा। ५-६ बड़े-बड़े आँगन। पीछे, दक्षिण की ओर, एक अहाते में कुल देवता रघुनाथजी का मन्दिर। दूसरी ओर, ऊपर की मंज़िल पर, कई अच्छे कमरों के एक अन्तःपुर

में बूढ़ी मौसी के साथ बुआ रहती हैं। बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ, प्राकार, उद्यान और सरोवर दिखते हैं। सूर्य की किरणों में चमकती हुई हरियाली। प्रात और सन्ध्या की स्निग्ध वायु। रात में तारों से भरा आकाश। चाँद, चाँदनी, सूनापन।

बुआ विधवा हैं, मौसी भी विधवा। बुआ की उम्र पचीस होगी। लम्बी सुतारवाली बँधी पुष्ट देह। सुढर गला, भरा उर। कुछ लम्बे मांसल चेहरे पर छोटी-छोटी आँखें; पैनी निगाह। छोटी नाक के नीचों बीच कटा दाग। एक गाल पर कई दाँत बैठे हुए। चढ़ती जवानी में किसी बलात्कारी ने बात न मानने पर यह सूरत बनाई, फिर शान छोड़कर भग खड़ा हुआ। इज्ज़त की बात, ज्यादा फैलाव न होने दिया गया।

बुआ की देह जितनी सुन्दर है, चेहरा उतना ही भयङ्कर। यह जागीरदार-खानदान की लड़की नहीं, मान्य की मान्य है। बुआ के भतीजे का भाग। ग़रीब थे। जागीरदार को लड़की ब्याहनी थी। लड़का ढूंढा। वह पसन्द आये। बुला लिया। बच्चे थे। पढ़ाया लिखाया। उठना-बैठना, बातचीत, रईसी के अदब और क़रीने सिखलाये। फिर निबाह के लिए एक अच्छी-खासी ज़मींदारी लड़की के नाम ख़रीदकर उनके साथ ब्याह कर दिया। ब्याह पर दामाद साहब का लम्बा कुनबा आ धमका। बुआ इसी में है बहुत निकट की। जब भी बङ्गाल के प्रतिष्ठित प्रायः सभी ब्राह्मण और कायस्थ पहले के युक्तप्रान्त के रहने वाले हैं, पर वे बङ्गाली हो गये हैं; यह जागीरदार-परिवार पदवी आदि से युक्तप्रान्तीयता की रक्षा कर रहा है।

आने पर, समधिन-साहबा यानी राजकुमारी की मां रानी साहबा ने बुआ को बुलाया; अपनी सोलह कहारों वाली गद्दीदार पालकी भेज दी। साथ वर्दी पहने चार सशस्त्र सिपाही। खिड़की के कब्ज़े पकड़ने के लिए दोनों बग़ल दो नौकरानियां। विधवा बुआ विधवा के श्वेत स्वच्छ वस्त्र से गईं। रानी साहबा नई अट्टालिका में रहती थीं। बड़े तख़्त पर ऊँची-ऊँची गद्दियां बिछी थीं। ऊपर स्वच्छ चादर, कितने ही तकिए लगे हुए। सामने ऊँची चौकी पर पीकदान रक्खा हुआ। बग़ल में पानदान। विशाल कक्ष। साफ़ सुथरा। संगमरमर का फ़र्श। दीवारों और छत पर अति-सुन्दर चित्रकारी। बीच में श्वेत प्रस्तर की मेज़ पर चीनी फूलदानी में सुगन्धित पुष्प। हाथ से खींचे जाने वाले पंखे की रस्सी, दीवार में किये छेद से बाहर निकालकर घिर्री पर चढ़ाई हुई। तीन घंटे दिन और तीन घंटे रात की ड्यूटी। पर चार पंखा-बेयरर लगे हुए। पंखा चल रहा है। तख़्त की बग़ल में एक गद्दीदार चौकी रक्खी हुई है बुआ के बैठने के लिए।

जागीरदार साहब कुलीन हैं। साथ ही राजसी ठाट के धनिक। इनके यहाँ मान्यों की वह मान्यता नहीं रहती जो दूसरी जगह रहती है। यद्यपि इसका मुख्य कारण घमन्ड है, फिर भी ये अपनी बचत का रास्ता निकाले रहते हैं। इनका कहना है कि राज्य की मुहर रघुनाथ जी के नाम है, हम उनके प्रधान कर्मचारी हैं; हमारे सर पर केवल रघुनाथ जी ही रहते हैं; दूसरे अगर इस राज्य की हद में हमारे सर हुए तो वही जैसे इस राज्य के राजा बन गये; इससे रघुनाथ जी का अपमान होता है। इस आधार पर जलसों में जागीरदार साहब के

मान्यों के आसन उनके पीछे ही रक्खे जाते हैं, हल्के आसनों पर, बग़ल में भी नहीं।

आने पर बुआ की सेवा के लिए रानी साहबा ने एक बाँदी भेजी, नाम मुन्ना। रानी साहबा की प्रायः दस दासियों में एक मुन्ना भी। पाँच-छ साल से नौकर। हाल का ब्याह, ख़ातिरदारी कसरत पर और कुछ इस उद्देश से भी कि ऐसा दूसरा नहीं कर सकता, इतना सुख कहीं भी नहीं। मुन्ना की उतनी ही उम्र है जितनी बुआ की। उतनी ऊँची नहीं, पर नाटी भी नहीं। चालाकी की पुतली। चपल, शोख़। श्याम रङ्ग। बड़ी-बड़ी आंखें। बङ्गाल के लम्बे-लम्बे बाल। विधवा, बदचलन, सहृदय। प्रायः हर प्रधान सिपाही की प्रेमिका। भेद लेने में लासानी। कितने ही रहस्यों की जानकार। प्रधान-अप्रधान नायिका, दूती, सखी। रानी साहबा ने जब-जब रंडी रखने के जवाब में पति को प्रेमी चुनकर झुकाया, तब तब मुन्ना ने प्रधान दूती का पाठ अदा किया। उसीसे रानी साहबा को ख़बर मिली, बुआ की नाक कटी है, गाल पर दांतों के दाग़ हैं। अनुगामिनी सहचरी बनाने का इतना साधन काफ़ी है। रानी साहबा ने समधिन को बुलाया।

मुन्ना की ज़बान बंगला है। असल में इसका नाम है मोना या मनोरमा। बुआ इलाहाबाद की ठेठ देहाती बोलती हैं। मुन्ना ने अपनी सरल सुबोध बंगला में रानी साहबा से मिलने के क़रीने कई दफ़े समझाये, पर बुआ की समझ में कुछ न आया। फिर बुआ की मान्य के मान्य के सम्बन्ध में युक्तप्रान्त की बँधी धारणा थी, उसमें

पर अनेम हिन्दूपन से हाथ धोना था। मुन्ना के सश्रद्ध रानी साहबा के उच्चारण से बुआ अपने बड़प्पन को दबाकर ख़ामोश रह जाती थीं, सोचती थीं, धर्म के अनुसार रानी साहबा में और मुन्ना में उनके समक्ष कौन सा फ़र्क़ है?—जो काम उनके लिए मुन्ना करती है, वही रानी साहबा भी पुण्य के सञ्चय के लिए कर सकती हैं। जो कुछ उन्होंने सीखा, वह है बङ्गाली ढंग से साड़ी पहनना, मशहरी लगाना, तकिये का सहारा लेना, बङ्गाली भाजियों को पूर्वापर विधि से खाना। यह भी इसलिए कि उनसे कहा गया था कि उनकी बहू अर्थात् राजकुमारी बिना इसके उनसे मिलेंगी नहीं, जब वह आयेंगी तब इसी वेश में रहना होगा, उनके जल-पान के लिए ऐसी ही भाजियाँ देनी होंगी, थाली इसी तरह लगाई जायगी; नहीं तो वह भग जायँगी, एक क्षण के लिए नहीं ठहर सकतीं।

[२]

मुन्ना के बतलाये हुए ढंग से बुआ ने एक सफ़ेद साड़ी पहनी। विधवा के रजत वेश से पालकी पर बैठीं। वहाँ के सभी कुछ उन्हें प्रभावित कर चुके थे, पालकी एक ओर हुई। कहारों ने पालकी उठाई और अपनी ख़ास बोली से कोलाहल करते हुए बढ़े। अगल-बग़ल दो दासियाँ, पीछे मुन्ना। दो सिपाही आगे, दो पीछे। पुरानी अट्टालिका से नई चार फर्लांग के फ़ासले पर है। पालकी नई अट्टालिका के अन्दर के उद्यान में आई। गुलाबों की क्यारियों के बीच से गुज़रती हुई खिड़की के विशाल ज़ीने पर लगा दी गई। सिपाही और कहार हट गये। जिस बाज़ू लगी, उधर की दासी ने दरवाजा खोला। मुन्ना

पानदान लिये हुए सामने आई और उतरने के लिए कहा। बुआ उतरीं।

दूसरी तरफ़वाली दासी रानी साहब को ख़बर देने के लिए रनवास चली गई थी। रानी साहबा तख़्त की गद्दी पर बैठी थीं। लापरवाही से, ले आने के लिए कहा। उनकी लड़की, राजकुमारी, बुला ली गई थीं। माता की बग़ल में, बुआ वाली चौकी से कुछ हटकर, एक सोफ़ा डलवाकर बैठी थीं।

दासी बुआ को लेकर चली, साथ मुन्ना। बुआ पर प्रभाव पड़ने पर भी मन में धर्म की ही विजय थी। उनका भतीजा ब्याहा हुआ है जिसके इन्होंने पैर पूजे हैं। ये उससे और उसकी मां से बराबरी का दावा नहीं कर सकते, बुआ तो उनके इष्टदेवता से भी बढ़कर हैं।

भाव में तनी हुई बुआ रनवास के भीतर गईं। वह समझे हुए थीं, समधिन मिलेंगी, भेंट देंगी, आदर से ऊँचे आसन पर बैठा लेंगी, तब उससे कुछ नीची जगह पर बैठेंगी; जाति की हैं, जाति की बर्ताव-वाली बातें जानती हैं, इसीलिए मुन्ना की बातें कुछ समझकर भी अनसुनी कर गई थीं; सोचा था, यह बङ्गालिन हमारे रस्मोरवाज क्या जानती है! पर भीतर पैर रखते ही उनके होश उड़ गये। रानी साहबा पत्थर की मूर्ति की तरह मसनद पर बैठी रहीं। एक नज़र उन्होंने बुआ को देख लिया, उनके चेहरे का सुना हुआ वर्णन मिला कर चुपचाप बैठी रहीं। राजकुमारी ने आँख ही नहीं उठाई। एक दफ़े माता को देखकर सर झुका लिया। मुन्ना ने भक्ति-भाव से हाथ जोड़कर रानी साहबा को, फिर राजकुमारी को प्रणाम किया।

बड़े सम्मान के स्वर से बुआ को परिचय दिया—महारानी जी, राजकुमारी जी।

बुआ पसीने-पसीने हो गईं। कोई नहीं उठीं, उनकी बहू को भी यह सीख नहीं दी गई। पद की मर्यादा सर हो गई। चुपचाप दो रुपये निकाले और बहू की निछावर करके मुन्ना को देने के लिए हाथ बढ़ाया। मुन्ना घबराकर उन्हें देखने लगी। लेने के लिए हाथ नहीं बढ़ाया। यह रानी साहबा का अपमान था।

रानी साहबा देखती रहीं। चौकी की तरफ़ उँगली उठाकर बँगला में बैठने के लिए कहा।

बुआ को यह और बड़ा अपमान जान पड़ा। आसन नीचा था। उनकी नसों में बिजली दौड़ने लगी। वह द्रुत पद से मसनद के सिरहाने की तरफ़ गईं और तकिए के पास बैठकर रानी साहबा की आँख से आँख मिलाते हुए कहा, "समधिन, हम वहाँ नहीं बैठेंगे। वह जगह तुम्हारी है। अगर बड़प्पन का इतना बड़ा अभिमान था तो ग़रीब का लड़का क्यों चुना ?" रानी साहबा का पानी उतर गया। अपमान से बोल बन्द हो गया। क्षमा उनके शास्त्र में न थी। दांत पीसकर आधी बंगला आधी हिन्दी में कहा, "तुम्हारा नाक पर क्या है, तुम्हारा गाल पर किसका दाग़ है ?"

"मर्दों की तरह औरत पर हुए अपमान के दाग़ हैं। लेकिन हमारा चेहरा तुम्हारे दामाद से मिलता-जुलता भी है ?—जैसा हमारा, हमारे भाई का, वैसा ही उसका; वह चेहरा भी ब्याह से पहले तुम लोगों को कैसे पसन्द आ गया ?

रानी साहबा पर जैसे घड़ों पानी पड़ा। राजकुमारी झेपकर उठकर चल दीं। शोर-गुल होते ही कई दासियाँ दौड़ीं। रानी साहबा ने बुआ को उसी वक्त ले जाने की आज्ञा दी।

बुआ दूसरे कमरे में ले जाई गईं। बाँदियों ने अपनी एक चटाई बिछा दी। बुआ ने वहाँ कोई विचार न किया। बैठ गईं। रनवास गर्म हो रहा था। राजकुमारी ने अपने पति से शिकायत की—बुआ जी असभ्य हैं। दामाद साहब के मन में यह धारणा जड़ पकड़ चुकी थी। उन्होंने बात को दोहराया। अब रानी साहबा भी आ गईं और अतिशयोक्ति अलङ्कार का सहारा लिया।—बुआ रानी साहबा पर चढ़ बैठीं, गद्दी का सरहाना दबाकर उनका अपमान किया, अपशब्द कहे, रानी साहबा ने उन्हें अपनी पालकी भेजकर बुलाया था, बैठने के लिए चन्दन की जड़ाऊ चौकी रखवाई थी, भूत झाड़ने की तरह एक या दो रुपये लेकर राजकुमारी के सर पर मुट्ठी घुमाने लगीं, फिर मुन्ना-दासी को देना चाहा, दासी ने नहीं लिया, वह कैसे ले सकती थी, फिर तरह-तरह की बातें सुनाईं जो गालियों से बढ़कर थीं। दामाद साहब ने सलाह दी, अब बिदा कर देना चाहिए। रानी साहबा इस पर सहमत नहीं हुईं। कहा—आदमी बनाकर भेजना अच्छा होगा। फिर कहा, जायगी भी कहाँ?—तुम्हारी सगी बुआ है, अदब-क़रीने सीख जायगी तो बिभा (विभावती राजकुमारी) की मदद किया करेगी। रानी साहबा की सहानुभूति से दामाद साहब ने प्रसन्न होकर सम्मति दी।

एक दूसरे कमरे में रानी साहबा ने मुन्ना को बुलाया और बुआ

के सुधार के लिए आवश्यक शिक्षा दी। मुन्ना ने उनसे बढ़ाकर कहा कि लाख बार समझाने पर भी बुआ ने कहना नहीं माना। मुन्ना रोज़ बीसियों दफ़े उन पर रानी साहबा का बड़प्पन चढ़ाती थी; पर वह सुनी अनसुनी कर जाती थीं। रानी साहबा ने अब के उपदेश के साथ अपने सम्मान से काम लेने के लिए कहा, जैसे स्वयम् वह रानी साहबा हो।

इस बार बड़ी पालकी की जगह साधारण चार कहारोंवाली पालकी आई। सिपाही और दासियाँ नदारद, सिर्फ़ मुन्ना। बुआ चुपचाप बैठकर चली आईं।

[२]

ब्याह के बाद जागीरदार राजा राजेन्द्रप्रताप कलकत्ता गये। आवश्यक काम था। ज़मींदारों की तरफ़ से गुप्त बुलावा था। सभा थी।

मध्य कलकत्ता में एक आलीशान कोठी उन्होंने ख़रीदी थी। ऐशो-इशरत के साधन वहाँ सुलभ थे, राजा-रईस और साहब-सूबों से मिलने का भी सुभीता था, इसलिए साल में आठ महीने यहीं रहते थे। परिवार भी रहता था। राजकुमार इस समय वहीं पढ़ते थे। ये अपनी बहन से बड़े थे, पर अभी ब्याह न हुआ था। यह कोठी और सजी रहती थी।

बङ्गाल की इस समय की स्थिति उल्लेखनीय है। उन्नीसवीं सदी का परार्द्ध बङ्गाल और बङ्गालियों के उत्थान का स्वर्णयुग है। यह बीसवीं सदी का प्रारम्भ ही था। लार्ड कर्ज़न भारत के बड़े लाट थे।

कलकत्ता राजधानी थी। सारे भारत पर बङ्गालियों की अंगरेज़ी का प्रभाव था। संसार-प्रसिद्धि में भी बङ्गाली देश में आगे थे। राजा राम मोहनराय की प्रतिभा का प्रकाश भर चुका था। प्रिन्स द्वारकानाथ ठाकुर का ज़माना बीत चुका था। आचार्य केशवचन्द्र सेन विश्वविश्रुत होकर दिवङ्गत हो चुके थे। श्रीरामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द की अतिमानवीय शक्ति की धाक सारे संसार पर जम चुकी थी। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की बंगला, माइकेल मधुसूदनदत्त के पद्य, वङ्किमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास और गिरीशचन्द्र घोष के नाटक जागरण के लिए सूर्य की किरणों का काम कर रहे थे। घर-घर साहित्य राजनीति की चर्चा थी। बङ्गाली अपने को प्रबुद्ध समझने लगे थे। अपमान का जवाब भी देने लगे थे। अखबारों की बाढ़ आ गई थी। रवीन्द्रनाथ के साहित्य का प्रचण्ड सूर्य मध्य आकाश पर आ रहा था। डी० एल० राय की नाटकीय तेजस्विता फैल चली थी। सारे बङ्गाल पर गौरव छाया हुआ था। परवर्ती दोनों साहित्यिकों से लोगों के हृदयों में अपार आशाएँ बंध रही थीं। दोनों के पद्य कण्ठहार हो रहे थे। जातीय सभा कांग्रेस का भी समादर बढ़ गया था। उसमें जाति के यथार्थ प्रगति के भी सेवक आ गये थे।

इसी समय लार्ड कर्जन ने बङ्ग-भङ्ग किया। राजनीति के समर्थ आलोचकों ने निश्चय किया कि इसका परिणाम बङ्गाल के लिए अनर्थकर है। बङ्गाल के स्थायी बन्दोबस्त की जड़ मारने के लिए यह चाल चली गई है। यद्यपि लार्ड कर्ज़न का मूंछ मुड़ानेवाला फ़ैशन बङ्गाल में ज़ोरों से चल गया था—मिलनेवाले कर्मचारी और

ज़मीदार लाट साहब को खुश करने के लिए दाढ़ी-मूंछों से सफ़ाचट हो रहे थे, फिर भी बङ्गभङ्गवाला धक्का संभाला न संभला। वे समझे कि चालाक अंगरेज़ किसी रोज़ उन्हें उनके अधिकार से उखाड़कर दम लेंगे। चिरस्थायी स्वत्व के मालिक बड़े-बड़े ज़मींदार ही नहीं, मध्यावित्त साधारण जन भी थे। इसलिए यह विभाजन की आग छोटे-बड़े सभी के दिलों में एक साथ जल उठी। कवियों ने सहयोग-पूर्वक देश-प्रेम के गीत रचने शुरू किये। सम्वाद-पत्र प्रकाश्य और गुप्त रूप से उत्तेजना फैलाने लगे। जगह-जगह गुप्त बैठकें होने लगीं। कामयाबी के लिए विधेय-अविधेय तरीक़े अख्तियार किये जाने लगे। संघ-बद्ध होकर विद्यार्थी गीत गाते हुए लोगों को उत्साहित करने लगे। अंगरेज़ों के किये अपमान के जवाब में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की प्रतिज्ञाएँ हुई, लोगों ने ख़रीदना छोड़ा। साथ ही स्वदेशी के प्रचार के कार्य भी परिणत किये जाने लगे। गाँव-गाँव में इसके केन्द्र खोले गये। कार्यकर्ता उत्साह से नई काया में जान फूंकने लगे।

विज्ञान की उस समय भी हिन्दुस्तानियों के लिए काफ़ी तरक्क़ी हो चुकी थी, पर मोहरों की इतनी भरमार न थी। हवाई जहाज़ थे ही नहीं। तब कलकत्ते में बग्घियाँ चलती थीं। बाद को मोटरें हो जाने पर भी रईसों का विश्वास था, बग्घी रईसी के अधिक अनुकूल है, इससे आबरू रहती है। राजा साहब ने कई शानदार बग्घियाँ रक्खी थीं, क़ीमती घोड़ों से अस्तबल भरा था। शराब और वेश्या का ख़र्च उन दिनों चरम सीमा पर था। मांस, मछली, सबज़ी, और फलों के

गर्म और क्रीम और बर्फ़दार ठंडे इतने प्रकार के भोजन बनते थे कि खाने में अधिकांश का प्रदर्शन मात्र होता था; वे नौकरों के हिस्से में आकर भी बच जाते थे। फूल और सुगन्धियों का ख़र्च अब शतांश भी नहीं रहा। पुरस्कार इतने दिये जाते थे कि एक-एक जगह के दान से नर्तकियों और गवैयों का एक-एक साल का ख़र्च चल जाता था। आमन्त्रित सभी राजे-रईस व्यवहार में हजारों के वारे-न्यारे कर देते थे। अगर स्वार्थ को गहरा धक्का न लगा होता तो ये ज़मींदार स्वदेशी-आन्दोलन में कदापि शरीक न हुए होते। इन्होंने साथ भी पीठ बचाकर दिया था। सामने आग में झुक जाने के लिए युवक-समाज था। प्रेरणा देनेवाले थे राजनैतिक वकील और बेरिस्टर। आज की दृष्टि से वह भावुकता का ही उद्गार था। सन् सतावन के ग़दर से महात्मा गान्धी के आख़िरी राजनीतिक आन्दोलन तक, स्वत्व के स्वार्थ में, धार्मिक भावना ने ही जनता का रुख़ फेरा है। इसको आधुनिक आलोचक उत्कृष्ट राजनीतिक महत्व न देगा। स्वदेशी आन्दोलन स्थायी स्वत्व के आधार पर चला था। उससे बिना घरबार के, ज़मींदारों के आश्रय में रहनेवाले, दलित, अधिकांश किसानों को फ़ायदा न था। उनमें हिन्दू भी काफ़ी थे, पर मुसलमानों की संख्या बड़ी थी, जो मुसलमानों के शासनकाल में, देशों के सुधार के लोभ से या ज़मींदार हिन्दुओं से बदला चुकाने के अभिप्राय से मुसलमान हो गये थे। बङ्गाल के अब तक के निर्मित साहित्य में इनका कोई स्थान न था, उलटे मुसलमानी प्रभुत्व से बदला चुकाने की नीयत से लिखे गये बङ्किम के साहित्य में इनकी मुख़ालिफ़त ही हुई थी।

शूद्र कही जानेवाली अन्य दलित जातियों का आध्यात्मिक उन्नयन, वैष्णव-धर्म के द्वारा जैसा, श्रीरामकृष्ण और विवेकानन्द के द्वारा हुआ था, पर उनकी सामाजिक स्थिति में कोई प्रतिष्ठा न हुई थी, न साहित्य में वे मर्यादित हो सके थे। ब्राह्मण-समाज ने काफ़ी उदारता दिखाई थी, आर्य-समाज का भी थोड़ा-बहुत प्रचार हुआ था, पर इनसे व्यापक फलोदय न हो पाया था। ब्राह्म समाज क्रिश्चन होने वाले बङ्गालियों के भारतीय-धर्म-रक्षण का एक साधन, एक सुधार होकर रहा। इसमें सम्मिलित होनेवाले अधिकांश विलायत से लौटे उच्च-शिक्षित थे। मुख्य बात यह कि परिस्थितियों की अनुकूलता के बिना उचित राष्ट्रीय संगठन नहीं हो सकता, न हो सका। हिंसात्मक जो भावना स्वतन्त्रता की कुंजी के रूप से प्रचारित हुई, वह संगठनात्मक राष्ट्रीय महत्व कम रखती थी। गान्धी जी का असहयोग इसी की प्रतिक्रिया है, पर इसकी एकता की जड़ और गहरे पहुँची थी।

अस्तु, इस समय गुप्त सभाओं का जैसा क्रम चला वैसा और उतना सिराजउद्दौला के समय अँगरेज़ों की मदद के लिए भी नहीं चला। कुछ ही दिनों में राजों, रईसों और वकील-बैरिस्टरों से मिलने पर, राजा राजेन्द्रप्रताप की समझ में आ गया कि देश को साथ देना चाहिए। चिरस्थायी स्वत्व की रक्षा ही देश की रक्षा है, इस पर उन्हें ज़रा भी सन्देह नहीं रहा। बहुत जगह दावतें हुईं, बहुत बार प्रतिज्ञाएँ की गईं। वकील और बैरिस्टरों के समझाने से दूसरे-दूसरे जमींदारों की तरह राजा राजेन्द्रप्रताप भी समझे, उन्हें कोई ख़तरा नहीं। जिस

मदद के लिए वह बात दे चुके हैं, पुलिस को उसकी ख़बर नहीं हो सकती, पुलिस उन्हें पकड़ नहीं सकती।

दूसरों की तरह राजेन्द्रप्रताप ने भी दावत दी। कोठी सजी। कलकत्ता के और वहाँ आये हुए बङ्गाल के ज़मींदार आमन्त्रित हुए। निमन्त्रण-पत्र में लिखा गया, राजकुमारी के ब्याह की दावत है। अच्छे पाचक बुलाये गये। राजभोग पका। विलायत की क़ीमती शराबें आईं और कलकत्ता की सुप्रसिद्ध गायिका वेश्याएँ। विशाल अहाते में ज़मींदारों की बग्घियों का ताँता लग गया। प्रचण्ड रौशनी हुई। आलीशान बैठक में राजे और ज़मींदार गद्दियों पर तकियों के सहारे बैठे। शराब ढलने लगी। गायिकाओं के नृत्य और गीत होने लगे। कुछ ही समय में भोजन का बुलावा हुआ। राजसी ठाट के आसन लगे थे। सोने और चाँदी के बरतनों में भोजन लगाकर लाया गया। सब ने प्रशंसा करते हुए भोजन पाया। इशारे से बातचीत होती रही। सब-के-सब एकमत थे। भोजन के बाद थोड़ी देर तक गाना सुनकर, सभी श्रेणियों के लोगों को इनाम देकर ज़मींदार लोग अपनी-अपनी कोठियों को रवाने हुए। गायिकाएँ भी गईं। केवल एक आदमी बैठा रहा। वह कलकत्ते का एक प्रसिद्ध बैरिस्टर है। उस समय कमरे में कोई न था।

उसने राजेन्द्रप्रताप से कहा, "हमको जगह चाहिए। आप लोगों के पास जगह की कमी नहीं। वहाँ कार्यकर्ता छिपकर काम करेंगे। आप उनकी निगरानी रख सकते हैं।"

"हाँ।"

"जगह आप लोग देंगे, आदमी हम। आप में जो कलकत्ते के रहने वाले हैं, वे अपनी कोठियों में जगह नहीं दे सकते। उनसे हम रुपया लेंगे और किराये की कोठियों में काम करेंगे।"

"हाँ।" राजेन्द्रप्रताप को विश्वास था कि वे दो-चार को क्या, बीसियों आदमियों को छिपा दे सकते हैं। गढ़ के भीतर पुलिस के आने तक वे आदमी बाहर निकाल दिये जा सकते हैं, माल गहरे तालाब में फेंकवा दिया जा सकता है। पूर्वपुरुषों से ज़मींदारों की दुस्साहसिकता की जो बातें वह सुन चुके हैं और ख़ुद कर चुके हैं, उनके सामने ये नगण्य हैं।

"सारा देश साथ है।" बैरिस्टर ने कहा, "घबराइएगा नहीं। हमारे आदमी पकड़ जायंगे तो अपने पर ही कुल ज़िम्मेवारी लेंगे। आपको पकड़ायेंगे नहीं। कोठी में भी पकड़े जायँगे तो उनका यही कहना होगा कि वे एकान्त देखकर अपनी इच्छा से गये थे।"

राजा राजेन्द्रप्रताप को विश्वास का बल मिला। बैरिस्टर कहते गये, "किसी तरह की अनहोनी होती दिखे तो आप उन्हें जल्द सूचित कर दें।"

राजा साहब ने सम्मति दी। बैरिस्टर ने कहा, "जो आदमी वहाँ आपसे मिलेगा, वह आज से चौथे दिन तारकनाथ का आदमी कह-कर मिलेगा। उसका नाम प्रभाकर है। उसके साथ तीन आदमी और होंगे। सामान की व्यवस्था की हुई रहेगी; भीतर ले जाने, ले आने और भोजन-पान का इन्तज़ाम आप करा दीजिएगा, साथ इस

तरह कि भेद न खुले, बहुत विश्वासी आदमी काम में रहें जिनके जीवन की बागडोर आपके हाथ में हो। समझते हैं ?"

"हाँ, हमारा सम्बन्ध तो आपको मालूम है।" राजा साहब मुस्कराये। बैरिस्टर साहब ने कुछ देर तक ऐसी ही बातचीत की, फिर बिदा हुए।

[४]

राजा राजेन्द्रप्रताप के कोचमेन मुसलमान हैं। तीन बग्घियाँ और आठ घोड़े कलकत्ता में हैं, कुछ अधिक, राजधानी में। अली एक कोचमेन हैं। इनके पिता लखनऊ रहते थे, पूर्वज ईरान के रहने वाले; बाद को शाह वाजिदअली के न रहने पर, मटियाबुर्ज चले आये। शाही ख़ानदान के दरज़ी। कपड़े अच्छे सीते थे। अली आवारगी-पसन्द थे, सुई नहीं चला सके, घोड़े की लगाम थामी। हिन्दू भी आदमी हैं, यह धर्मानुसार समझ में नहीं आया। हिन्दू की आख्या ग़ुलाम से बढ़कर नहीं की ! अंगरेज़ों से लड़ाई में मुसलमान हारे, इसकी वजह हिन्दुओं की बेईमानी है, ऐसे विचार पाले रहे। फिर भी खामोशी से काम करते हुए गुज़र करते रहे यानी मालिकों से काम के अलावा दूसरी बात न की। किसी हिन्दू को कभी राज़ नहीं दिया, बल्कि लिया, और बड़ी सफ़ाई से, भलमन्साहत के बहाने।

बङ्गालियों की बढ़ती से अली इस नतीजे पर आये कि बिना अंगरेजी के चूल न बैठेगी। दूर तक पहुँच न थी, पुलिस के मुसलमान दारोग़ा को राज़ देने और उनके इशारे पर काम करने-कराने लगे। उन्हें एके की कुंजी मिली। जमींदारी हिन्दुओं की, कारोबार

हिन्दुओं का, बड़ी-बड़ी नौकरियों पर हिन्दू, वकील-बैरिस्टर-डाक्टर-प्रोफ़ेसर भी हिन्दू। यही हिन्दू अंगरेज़ों से मिले और मुसलमानों से दग़ा की। अली की आँख खुल गई। यह मिलने का नतीजा है कि चारों तरफ़ हिन्दू मडला रहे हैं। सरकार हरएक की है। भूखों मरने वाले भूखों न मरेंगे अगर सरकार को साथ दिया। सरकार ने बङ्गाल के दो हिस्से किये हैं, यह मुसलमानों के फ़ायदे के लिए। आये दिन ये ज़मीनें मुसलमानों की। ज़मींदारी का यह क़ानून न रहेगा। नवाबों से सारी मुसलमान रैय्यत को फ़ायदा नहीं पहुँचा। नक़्शा आँख के सामने आया। बादशाहत से वह दब गया था। कुछ यहाँ सुना, कुछ वहाँ; कुछ अपनी तरफ़ से सोचा। स्वदेशी का आन्दोलन चल चुका था। बातें मुसलमान और इतरवर्ग के नेता फैला रहे थे। अंगरेज़ी शासन के प्रारम्भ से ऐसी तोड़वाली बातों का महत्व है।

अली को कामयाबी हुई। लड़का पढ़ रहा था, एन्ट्रेन्स में २ साल की उम्र में फ़ेल हुआ, थानेदारी के लिए चुन लिया गया। उन्होंने देखा था, उनके राज़ से थानेदार इन्स्पेक्टर हो गये थे; वह अपने लड़के को राज़ देने लगे। पहले मालिक की गरदन नापी। सोचा, आसामी बड़ा है, तरक़्क़ी लम्बी होगी। आन्दोलन का हाल मालूम था। राजा साहब जहाँ-जहाँ गये थे, लड़के से कहा। कोठी में जिनकी-जिनकी बग्घी आई थी बतलाया। मुसलमान कोचमेनों के नाम लिखवाये, भीतरी सूरत से गवाही ले लेने के लिए। फिर कहा, राजा थियेटर-रोडवाली मशहूर तवायफ़ एजाज़ के घर जाता है, वह भी

कभी-कभी कोठी आती है, कभी अपने वहाँ, बिलासपुर, साथ ले जाता है, वहाँ महीनों ठहरती है।

पुत्र ने गम्भीर होकर कहा, सरकार से बग़ावत की तो मिट जायगा। ख़ैर राज़ भी खुल जायगा। आप आराम कीजिए।

अली के लड़के का नाम यूसुफ़ है। पर हैं बदशक्ल। अली भी शक्ल से ईरानी नहीं मालूम होते। मुसलमान तोड़े कसते हैं। अली हिन्दुस्तान पर बुख़ार उतारते हैं—ऐसा मुल्क है कि हुमा भी चुग़्द की शक्ल में बदल जाता है। फिर फ़ारिस के मशहूर लोगों को अपने ख़ानदान का क़रार देकर उनके रंग और रूप की तारीफ़ करते हैं।

युसुफ़ ने कसकर डायरी लिखी। फिर मामले में हाथ लगाने की देर तक सोचते रहे। उनके हल्के में न राजा गजेन्द्रप्रताप की कोठी आती थी, न एजाज़ की। वह थाने के बड़े थानेदार भी न थे। उनसे बड़े जो दो-तीन अफ़सर थे, कुल-के-कुल बङ्गाली। वह खिंचे। कमिश्नर से मिलने की सोची, पर हिम्मत न हुई। कोई राज़ सरकार के ख़िलाफ़ नहीं मालूम हुआ। अभी सुबूत भी नहीं। असामी बड़े-बड़े हैं। आप नौकर। धेले की बुलबुल हाथ न लगे और टका हुशकाई पड़ जाय, पुलिस की आँख में गिर जाना है।

उन्हें हिम्मत हुई। एजाज़ मुसलमान हैं। इससे काम निकल सकता है। फिर कच्चे पड़े। उसका राज़ किसी बड़े मुसलमान के यहाँ रहता होगा। सीधी बातचीत करेंगे तो पकड़ जायँगे। कुछ देर कश-मकश में रहे। फिर रहा नहीं गया। शिकार हाथ से निकल जायगा। किसी बड़े के कान में बात पड़ी तो अपना बस न रहेगा और नामवरी

भी शिकार में हांकेवालों की रहेगी। बड़ा नाज़ुक वक्त है, सरकार को सुबूत दिलाया जा सका तो रात भर में महल खड़ा हो जायगा।

यूसुफ़ पिता के कमरे में गये। अली की आँख न लगी थी। आवाज़ पर उठे। यूसुफ़ बैठे, कहा, "उस रंडी को एक दफ़ा हल्क़े में ले आना है; झाबरमल डागा या जौहरी को फाँसिये। उसका मुजरा करायें।"

अली की निगाह बदली। कहा, "अबे उल्लू के पट्ठे, वहीं ढेर हुआ जहाँ दुश्मन। ये बक्काल बात पर आयेंगे। ये बड़े आदमी हैं। इनका राज़ बड़ों में रहता है। यों पर बँध जाते हैं। भेद खुल जायगा। बात मान, मछुआ बाज़ार के गुन्डों से काम ले। शिकायत लिखवा, देख, कैसी बेपर की उड़ाते हैं। उसका भी कुछ राज़ लिया या ख़ातून समझ बैठा!" अली ने करवट बदली। यूसुफ़ चले आये।

[५]

दूसरे दिन कुछ गुन्डों की मदद ली। भले-आदमी बने-रहने वाले दो आदमी फँसे। उन्होंने रपोट लिखवाई। कुछ पढ़े-लिखे थे, पर बाँया अँगूठा घिसकर गये थे। अँगूठे का निशान लगाया। गुन्डों ने कहा, "हुज़ूर का काम हो गया, अब चड्डी गठ गई।" बाहर निकल कर कहा, "अब, बेटो, साल भर इनके सर चढ़े घूमो। फिर यही बँधे या तुम। तुम न बँधोगे। यह फँसेगा नया थानेदार। अब चलो, शराब पिला दो, और जल्द इस हल्क़े से कुछ कमा लो।" ग़नी ने रुस्तम से कहा, "दाम दे दे। उस्ताद ख़रीद लेंगे।" रुस्तम ने पाँच रुपये का नोट उस्ताद क़मर को दिया।

क़मर को मालूम था, एजाज़ शरीफ़ है, शहर में उसकी इज़्ज़त है, गाने में लासानी, उसके खाते में दर्ज है—पहला नाम, इनाम भी देती जाती है हर महीने बीस रुपये। सोचा, अच्छे-ख़ासे रईस की हैसियत उसकी, ४००) महीने का अँगरेज़ी-पढ़ा सिकत्तर रक्खे है, यह थानेदार चपेट में आयेगा। मामला जैसा भी हो, मालूम हो जायगा। सोचता, लापरवाही से साथियों के साथ बढ़ता हुआ, देशी शराब की दूकान की तरफ़ मुड़ा और भीतर घुसकर दो आदमियों से दो बोतलें ख़रीदीं, तब सस्ती थीं। वहाँ से बाज़ार की तरफ़ चला।

एजाज़, देखते-देखते मशहूर हो गई। वह एक बड़े तवायफ़ की बेटी है। शिक्षा क़ायदे से हुई है। उर्दू, बङ्गला और अँगरेज़ी अच्छी जानती है। गाने-बजाने की भी बड़े-बड़े उस्तादों से तालीम मिली है। नये-पुराने दोनों तरह के गाने जानती है। बेजोड़ सुन्दरी। गोराई काफ़ी निखरी हुई। उँगलियाँ, हाथ, पैर, गला, नाक, आँखें, भौंहें, सब लम्बी-लम्बी, जैसे चम्पे की कली। पहनावा भी वैसा ही लम्बा। प्रान्त-प्रान्त और देश-देश का पहनावा करने वाली। उम्र ३० साल की होगी। साल भर से राजा राजेन्द्रप्रताप की नौकर है। दो हज़ार महीना लेती है। साथ बाहर भी जाती है और राजधानी भी। राज धानी में उसके लिए अलग बँगला है। कुछ महीनों से राजा साहब ने दूसरी महफ़िल का गाना रोक दिया है। कलकत्ते में उसकी अपनी आलीशान कोठी है। चारों ओर लान, बग़ीचा। फ़ौवारे लगे हुए। गुलाब और ऋतु-पुष्पों के पेड़। पत्थर की परियों की नंगी मूर्तियाँ। गाड़ी-बरामदा। नीचे और ऊपर सजी हुई बैठकें। विभिन्न प्रकार के

साज। सुन्दर-सुन्दर तैल चित्र। फाटक पर सन्तरियों का पहरा। दास और दासियाँ।

गाड़ी-बरामदे की ऊपर वाली छत पर फूलों के टब रक्खे हुए हैं। मेज़ पर दस्तरख्वान बिछा हुआ है। गुलाब की सजी फूलदानी रक्खी हुई है। गिलास में रोज़ेड बर्फ़-मिला रक्खा है। अभी लाल फेन नहीं मिटा। सूरज डूब चुका है, फिर भी उजाला है। सड़क के आदमी देख पड़ते हैं। मन्द-मन्द दखिनाव चल रहा है। एक-एक झोंके से कविता आकर गले लगती है। एजाज़ बैठी हुई गिलास के फूटते हुए फेन के बुलबुले देख रही है। रसीली आँखों से, मालूम नहीं कौन-सा विचार लगा हुआ है। एक कनीज खड़ी हुई आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही है।

इसी समय यूसुफ़ फाटक पर देख पड़े। एजाज़ ने देखा, फिर आँखें फेर लीं। यूसुफ़ ने एजाज़ को नहीं देखा। सन्तरी के पास कुछ सिकन्ड के लिए खड़े हुए। मिलना चाहते हैं, कहा। सन्तरी ने सिर हिलाकर भीतर जाने का इशारा किया। यूसुफ़ निकल गये। पोर्टिको से बरामदे पर गये। कुर्सियां रक्खी थीं। एक बेयरा खड़ा था। आदर से बैठने के लिए कहा। यूसुफ़ बैठे। बेयरा ने कार्ड माँगा। कार्ड यूसुफ़ के पास नहीं था। उन्होंने कहा, सरकारी काम है।

रन्डी सरकारी काम में आ सकती है, कोई बड़ा काम होगा, जो मर्दों का किया हुआ नहीं पूरा हुआ, सोचता हुआ वह सिकत्तर के कमरे में गया। "खबर दी, एक साहब तशरीफ़ ले आये हैं", कार्ड माँगने पर कहा, "सरकारी काम है।"

सेक्रेटरी का ख़ास वक्त यही है, शाम के चार से रात के दस तक। इसी वक्त वह आफ़िस करते हैं। पत्रों के जवाब लिखते हैं, मिलनेवालों से बातचीत करते हैं। अपने कमरे से उठकर बाहर आये। यूसुफ़ साहब से हाथ मिलाया। पूछा, जनाब का नाम ?

"हाँ, एक है, मगर इस वक्त तो यही कि हम सरकारी।"

सेक्रेटरी कुछ सिकन्ड देखते रहे। पूछा, "क्या हुक्म है?"

"हम मालिका, मकान, से मिलना चाहते हैं।"

"उस वक्त दूसरा भी कोई होगा?"

"नहीं।"

"यह नहीं हो सकता। आपको अपना कुछ पता देना होगा अगर आप अपना नाम नहीं बतलाना चाहते। फिर किस सरकारी काम से यहाँ आने की ज़हमत गवारा की, फ़र्माना होगा और मुझसे। मैं उनसे अर्ज़ करूँगा फिर उनका जवाब आपको सुनाऊँगा।"

"यह ऐसा काम नहीं।"

"मान लीजिए, वह नौकर हैं, ख़ातून की हैसियत से रहने की क़ैद है।"

"आप पहले फ़र्मा चुके हैं, कोई दूसरे रहेंगे तो मैं उनसे बातचीत कर सकता हूँ। फिर कहा, मैं आपसे कुल बातें कह दूँ, आप जवाब ला देंगे अपना नाम या पता बताने के बाद। यह शायद किसी ख़ास दरजे की ख़ातून के बर्ताव में आता है?"

"गुस्ताख़ी मआफ़ फ़र्माएँ। रंडी का मकान समझकर कितने ही लुच्चे आते हैं। हमें पेशबन्दी रखनी पड़ती है। सरकारी काम की

पाबन्दी हमें कुबूल है, लेकिन वह कैसा सरकारी काम है, यह आप उन्हीं से कहेंगे, मैं उनका सेक्रेटरी हूँ, मुझ से नहीं; मेरे सामने भी आपको कहना मंज़ूर नहीं। ऐसी हालत में मैं आपको लुच्चा न समझकर सरकारी काम से आया हुआ अफ़सर समझूँ। मैंने कहा, वह नौकर हैं, ख़ातून की तरह रहती हैं। इस पर भी आपने एक तुर्रा कस दिया। एक भले आदमी की तरह इतना समझने की तकलीफ़ भी आपको गवारा नहीं हुई कि जिन्होंने मालिका, मकान को नौकर रक्खा है, उन्हें उनकी बेपर्दगी, पसन्द न होगी, दोनों में नौकरी की शर्तें होंगी।"

"मैं समझा। अफसर को गाली आपने दी। अफ़सर क्या है, यह आपको अच्छी तरह मालूम होगा। अफ़सर इस तरह नहीं आता, न यों जवाब देता है। वह अपनी जगह पर बुलाएगा और नौकरी की कुल शर्तों को तोड़कर ख़ातून साहबा को चलकर मिलना होगा। उस वक्त हम कुछ ऐसी तैयारी ला देंगे कि ख़ातून साहबा उम्र भर याद रक्खेंगी। हम कोई हैं और दर्ज़ होकर आये हैं। लौटकर कुछ लिखेंगे और भेजेंगे। आप सिकत्तर हैं, इसलिए मिल सकते हैं, और हम सरकारी काम से आये हैं, इसलिए नहीं मिल सकते। आप को ख़ौफ़ है, जैसे हम कोई चाक़ू लिये हुए हैं और उनकी नाक काट लेंगे।"

यूसुफ़ की दहाड़ से सेक्रेटरी दबे। कहा, "हमें जैसी हिदायत है, हमने आपसे अर्ज़ कर दी।"

फिर सँभलकर बोले, "अफ़सर जब बुलाएँगे, तब लिखकर बुला-

एँगे या अपने नाम से आदमी भेजकर। मेरी समझ में नहीं आता, अफ़सर का बुलावा ख़ुफिया तौर से कैसे होगा। फिर, जवाब मुख़्तार आम से भी दिया जा सकता है या इन्हीं को हाज़िरी बजानी पड़ेगी?"

"आप यह नहीं समझे कि सरकार मुख़्तार, आम, का पेश होना मंजूर कर भी सकती है और नहीं भी। आप जैसी बातें कर रहे हैं, इनसे उलझन बढ़ती है। नतीजा साफ़ है, आपके हक़ में कैसा होगा। तैयार रहिये।"

"हम इतना जानते हैं, कई हज़ार रुपये हम इन्कम-टेक्स देते हैं; सरकार की निगाह में इसकी इज़्ज़त है। फिर आपको कुल माजरा समझा दिया गया है। एक प्रोविन्शल मेरे साथ भी है। अच्छी बात, अब मैं आपसे समझूँगा। तैयार रहिये। आप अपना भेद नहीं बताना चाहते, मैं कहता हूँ, बग़ैर कुछ भेद दिये आप बचकर नहीं निकल सकते।"

थानेदार घबराये। फिर हिम्मत बाँधकर कहा, "हम जब यहाँ आये, समझिए, रत्ती-रत्ती हाल मालूम करके। हम अन्धे नहीं। सच, आपके मकान का ठाट आपकी हैसियत बयान कर रहा है। मगर हमारी बात मानिएगा तभी फ़ायदा उठाइयेगा, सरकार के यहाँ नेक-नामी लिखी जायगी।"

"जबतक हमें इसका गुमां भी न होगा कि आप कौन हैं, हम आपके साथ लगे-लगाये रहेंगे। उधर हमारे पैर तभी उठ सकते हैं जब हमें कुछ राज़ मिल जायगा।"

"इस तरह से मिलने एक ही महकमे के आदमी आते हैं। नाम

वह कभी नहीं बताएँगे, सिर्फ़ काम बतला जायेंगे। कर दिया तो नेक-नामी, न किया या धोखा दिया तो इसकी सज़ा है। समझिए—हम-पुली···।"

"आप जो काम बतला जायँगे, उसका हासिल मालूम करने के लिए आप ही आयेंगे या कोई दूसरे ?"

"हमीं आयेंगे; मुमकिन, और आदमी हमारे साथ हों। बाद को, गिरह पड़ गई तो बड़े साहब भी आ सकते हैं।"

सेक्रेट्री उठकर अपने कमरे में गया। दिन, तारीख़, मास, साल, समय और पुली के नाम से कही हुई उस आदमी की कुल बातें उसकी शक्ल के वर्णन के साथ लिख लीं। एक सिपाही को बुलाकर कहा, "तुम दो-तीन छिपे तौर से इस आदमी का हाल मालूम करो, पूरा पता ला सके तो इनाम मिलेगा। आदमी बरामदे में बैठा है। कोई छेड़ न करना।"

फिर बाई जी के पास ख़बर भेजी कि ज़रूरी काम से मिलना है। एजाज़ ने बुला भेजा। सिकत्तर साहब गये। उसने मेज़ की बग़ल वाली कुर्सी पर बैठाला। सिकत्तर बैठकर एक-एक करके कुल बातें संक्षेप में सुना गये।

एजाज़ कुछ देर तक सोचती रही। फिर पूरे इतमीनान से कहा, "सिकत्तर साहब, एक राज़ और लीजिए। कहिए, वह बातचीत करने के लिए तैयार हैं अगर उस बातचीत में राजा साहब का नाम नहीं आया। गुलाबबाड़ी में एक मेज़ और दो कुर्सियाँ डलवा दीजिए।"

नौकर से कहकर सिकत्तर यूसुफ़ के पास आये। कहा, "बाई जी

आपसे बातचीत करेंगी, शर्त एक रहेगी, आप राजा साहब के बारे में कोई बात न उठाएँगे।"

"हम किसी शर्त पर बातचीत न करेंगे," यूसुफ़ ने पुतलियाँ पलटकर कहा।

सिकन्तर फिर एजाज़ के पास गये। सुनकर एजाज़ ने कहा, "आप समझे?—उन्हींकी गरदन नापी जायगी। हमारा और इनका कहना लिख लीजिएगा। हम नीचे चलते हैं। लिखकर सभ्यता से उन्हें भेज दीजिए; गुलशन ले आयेगी। आदमियों से कह दीजिएगा, होशियारी रक्खें।"

एजाज़ गुलाबबाड़ी में आकर बैठी। सिकन्तर ने लिखकर यूसुफ़ से आकर कहा, "सरकार की फ़तह रही। गुलाबबाड़ी में हैं। तशरीफ़ ले चलिए।" गुलशन की तरफ़ हाथ उठाकर कहा, "यह ले जायगी।"

गुलशन युसुफ़ को ले चली। गुलाबबाड़ी में एजाज़ ने नसीम को क़ीमती साड़ी पहनाकर बैठाला था। बगीचे की शोभा देखते हुए यूसुफ़ चले। अँधेरा हो आया था। कुछ दूर एक गैस की बत्ती जल रही थी।

[६]

यूसुफ़ फ़तहयाब थे—उनकी शर्तें क़ुबूल कर ली गईं। ग़ुरूर से क़दम उठ रहे थे। गुलशन गुलाबबाड़ी में ले गई। नसीम की तरफ़ उंगली उठाकर कहा, "आप।"

नसीम उठकर खड़ी हो गई। बड़ी अदा से कहा, "आदाब अर्ज़।"

यूसुफ़ बहुत .खुश हुए। जवाब में हाथ उठाया, वह हाथ जैसे सरकार का हो।

नसीम ने पूछा, "हुज़ूर का मिज़ाज अच्छा?"

"ख़ैरियत है।" थानेदार साहब ने जवाब दिया।

कुर्सी की तरफ़ उंगली का हल्का इशारा करके नसीम ने कहा, "हुज़ूर की कुर्सी।"

थानेदार साहब संजीदगी से बैठे। नसीम भी बैठी। बैठते हुए कहा, "हम हुक्म की तामील करने वाले!"

थानेदार साहब बहुत .खुश हुए। सोचा, रंग चढ़ गया; बाज़ी हाथ है। इधर-उधर देखा। गुलशन हट गई थी।

"आप एजाज़ बाई हैं?" थानेदार साहब ने पूछा।

"हुक्म।"

"काफ़ी अरसा हुआ। दूसरा काम है। वक्त ज़्यादा नहीं।" नसीम ख़ामोश रही। थानेदार को सन्देह नहीं हुआ। वह सुन्दरी और ख़ानदानी दिख रही थी। बातचीत साफ़।

"आपकी शिकायत है।"

नसीम आँखें फाड़कर देखने लगी।

"दोस्त और दुश्मन सबके होते हैं। सरकार तहक़ीक़ात कर रही है। वक्त पर दूध और पानी अलग कर देगी।"

नसीम ने ललित स्वर से कहा, "क्या ही अच्छा हो कि इसके पूरे भेद से हम भी वाक़िफ़ हो जायँ।"

"यह हमारे हाथ की बात नहीं। ख़ुद हम इसके भेद से वाक़िफ़

नहीं। पर एक सूरत हम ऐसी बताएँगे कि शिकायत भी रफ़ा हो जायगी और सरकार के मददगार दोस्तों में नाम दर्ज हो जायगा।"

"मेहरबानी।" नसीम ने विजयी स्वर से कहा।

"मैं मुसलमान हूँ। दूसरी शिरकत मज़हबी है।"

नसीम गम्भीर हो गई। कुर्सी पर हाथ समेटकर बैठी।

"आजकल जमींदारों और कुछ हिन्दुओं ने सरकार के ख़िलाफ़ गुटबन्दी की है। जिस ज़मींदार से आपके तअल्लुक़ात हैं, उस पर सरकार को शुभा है। इसका भेद मालूम होना चाहिये। इससे सरकार की मदद भी होगी और क़ौम की ख़िदमत भी। सरकार की मदद इस तरह कि आपके ज़रिये दुश्मन का राज़ सरकार को मिलेगा और क़ौम की ख़िदमत इस तरह कि सुदेशी का बवेला जो हिन्दुओं ने मचा रक्खा है, यह जड़ से उखड़ जायगा। मुसलमान रैअय्यत को फ़ायदे के बदले नुक़सान है अगर हिन्दुओं को कामियाबी हुई। सरकार ने बङ्गाल के दो हिस्से इस उसूल से किये हैं कि मुसलमान रैअय्यत को तकलीफ़ है; मौरूसी बन्दोबस्त वाली ९९ हर सदी ज़मीनों पर हिन्दुओं का दख़्ल है; यह आगे चलकर न रहेगा। इससे मुसलमानों की रोटियों का सवाल हल होता है। आपके दोस्ताने के बर्ताव से दुश्मनों की की हुई शिकायत का असर जाता रहेगा, उल्टे फ़ायदा उठाइएगा।"

"आपकी सलाह नेक।" नसीम ने दोस्ती की आवाज़ में कहा।

"आदाब अर्ज़।" थानेदार साहब उठकर खड़े हो गये, "अब मैं चलता हूँ। सीन याद रखिएगा। जो शख़्स कहे, उसे अपना आदमी समझिएगा। उसे और कोई राज़ न दीजिए। सिर्फ़ कहिए,

'फंस गया' या 'नहीं फंसा।' पूरी बातें मैं ही मालूम करूँगा। मैं तीन और तीन कहूँगा। आप वाक़िफ़-हाल हैं। सहूलियत से काम लेना है। हमारे आप लोगों से गहरे तअल्लुक़ात रहते हैं।"

"पान-सिगरेट शौक़ फ़र्माते हैं?" थानेदार साहब चल पड़े थे, खड़े हो गये। नसीम ने सोने के पानदान से निकालकर पान दिये और डब्बे से सिगरेट। सामने दियासलाई जलाई। थानेदार साहब ने आँखें भरकर देखा। दियासलाई के गुल होते जैसे दिल में अँधेरा छा गया।

[७]

तीसरे दिन राजा साहब की चलने की तैयारी हुई। एजाज़ को भी चलना था। उससे बातचीत हो चुकी थी। उसने तैयारी कर ली। इस बार नसीम और सिकन्दर को यहां छोड़ा। नसीम की कुल बातें लिखवा दीं। एक नक़ल अपने पास रक्खी। थोड़ा-सा सामान और गुलशन को लेकर जेट्टी के लिए गाड़ी पर बैठी। राजा साहब के साथ कुल सहूलतें हैं। ख़ुशी-ख़ुशी चल दी। आदमियों से थानेदार साहब को भेद नहीं मालूम हो सका। फाटक के बाहर रास्ते पर भेस बदले हुए पुलिस के सिपाही थे, कुछ और आदमी। थानेदार निकल कर उल्टे रास्ते चले। काफ़ी दूर निकल गये। फिर एक-एक छटने लगे। थानेदार रेलवे-स्टेशन से डायमन्ड हारबर की तरफ़ रवाना हुए।

जेट्टी से राजा साहब का स्टीमर लगा हुआ था। आने-जाने के सुभीते के लिए उन्होंने ख़रीदा था। अच्छा-ख़ासा स्टीमर, दो मंजिला। नीचे सामान लग चुका था। सिपाही, ख़ानसामे, बाबू,

पाचक और ख़िदमदगार आ चुके थे। डेक की एक बग़ल लोहे के चूल्हों पर खाना पक रहा था। ज़ाफ़रान और गर्म मसाले की ख़ुशबू आ रही थी। ऊपर वाले डेक की सीढ़ी पर सशस्त्र पहरा लग चुका था। केबिन में और जहाज़ के सामने ऊपरवाले डेक पर ऊँचे गद्दे बिछ गये थे। अभी राजा साहब नहीं आये। एजाज़ की गाड़ी आई। गुलशन ने उतरकर गाड़ी का दरवाज़ा खोला और कब्ज़ा पकड़ा; सहारे के लिए बाँह की रेलिङ्ग बन गई। एजाज़ उतरी। लोगों की आँखें जम गईं। रूप से हृदय भर गया। आज का पहनावा मोरपंखी है। साड़ी का वही रंग, वही बूटे, फ़रमाइश से तैयार की हुई। ज़मीन सुनहरे तारों की। सर के कुछ बाल मोर की चोटी की तरह उठे हुए; हर डाँड़ी पर हीरे की कनियों के साथ नीलम बँधा हुआ। पैरों में कामदार मोती-जड़ी जूतियाँ। उतरकर एजाज़ मोर की ही चाल से चली। जेट्टी की एक बगल पुलिस का सिपाही खड़ा था। सलाम किया। जेट्टी और नीचेवाले डेक पर राजा के लोग खड़े थे। देखकर ख़ुश हुए, पर मुँह फेरकर दूसरे को सुनाकर गाली दी। एजाज़ दूर थी। चलती हुई पास आई। लोगों ने रास्ता निकाल दिया। डेक पर जाने को काठ की सीढ़ी लगा दी। उस डेक से दूसरे तले की सीढ़ी पर वह चढ़ने लगी। सिपाही ने रानी साहबा को सशस्त्र सलामी दी। हाथ उठाकर, एजाज़ ऊपर गई। गुलशन ने पूछा, "कहाँ रहिएगा ?"

"केबिन में, जबतक राजा साहब नहीं आते।"

"लोग अड़े हैं, कुछ उनका भी ख़याल...?" कहते हुए, गुलशन ने केबिन का दरवाज़ा खोला।

"अभी साड़ी और पहनावा देख रहे हैं," कहती हुई एजाज़ केबिन में चली गई, "जब आदमी को देखेंगे, तब तू ही ठहरेगी। इस पहनावे से तो नहीं चिमटते ?" एजाज़ ने गुलशन की साड़ी का छोर खींचा। गुलशन मुस्करा दी। "अच्छा चलो, केबिन के सामने वाली कुर्सी पर बैठो ज़रा देर।"

"मैं कहती हूँ, राजा साहब के आने पर डेक पर महफ़िल लगेगी।"

"तू राजा साहब बनजा, मैं शीशा और प्याली ले लूँ।"

गुलशन भग गई। दूसरी तरफ़ से बाहर निकली और कुर्सी पर बैठ गई।

कोच-बाक्स की बग़ल में बैठा सिपाही पेटियाँ उठवाकर एजाज़ के केबिन में लगवा दीं। चलते वक्त की सलामी दी। एजाज़ ने गुलशन से बीस रुपये ले लेने के लिए कहा। ५) ख़ुद ले, ५) कोचमेन और साईस को दे, ५) डेक के पहरेदार को, ५) पुलिस के सिपाही को।

सिपाही के चले जाने पर गुलशन को भेजकर राजा साहब के एक ख़िदमदगार से मालूम किया, राजा साहब और पुलिस के सिपाहियों को क्या इनाम मिला।

जेट्टी पर जहाज़ के ठहरने का तीन-मिनट समय रह गया, राजा साहब की गाड़ी आई। सिपाहियों और नौकरों पर अदबी सन्नाटा छा गया। रफ़्तार के बढ़ने पर भी शोरोग़ुल का नाम न रहा। शान के क़दम उठाते हुए जेट्टी से गुज़रकर राजा साहब ने डेक पर

चढ़ने वाला पीतल का चिकना डंडा पकड़ा। एक बग़ल, साथ आये हुए सशस्त्र अरदली और सीढ़ी के पहरेदार ने खड़े होकर बन्दूक की सलामी दी। राजा साहब सीढ़ी से चढ़े। ऊपर के डेक पर, जहाँ सीढ़ी ख़त्म होती है, एजाज़ खड़ी थी। उसके पीछे गुलशन। एजाज़ ने ललित सलाम किया। राजा साहब ने हथेली थाम ली। दोनों साथ-साथ सामने के बिस्तरे की ओर बढ़े। गद्दे पर पहले एजाज़ ने पैर रक्खा। दोनों तकिये लेकर बैठे। राजा साहब अतृप्त आँखों से एजाज़ का खुलता हुआ रूप और पहनावा देखते रहे। ज़रा देर के लिए सेक्रेटरी आये। राजा साहब ने पुलिस के लिए कहकर जहाज़ खोल देने की आज्ञा दी।

जेट्टी से बँधी हुई जहाज की मोटी रस्सियाँ और लोहे की साँकलें खोली गई। जहाज़ घूमा। फिर हुगली नदी से होकर दक्षिण की ओर चला। ऊपर के पीछे वाले हिस्से में सेक्रेटरी, कुछ कर्मचारी और ऊँचे पद वाले सिपाहियों के अफ़सर बैठे। एजाज़ हुगली में बँधे हुए अँगरेज़, फ्रेंच, जर्मन और अमेरिकन बड़े-बड़े जहाज़ देख रही थी और उनसे होने वाले विशाल व्यापार पर अन्दाज़ा लगा रही थी। मधुर दखिनाव के तेज़ झोंके लग रहे थे। दिल को कोई रह-रहकर गुदगुदा रहा था। जहाज़ फोर्ट विलियम क़िले के पास आया। किनारे लड़ाई के दो जहाज़ बँधे थे। इनकी बनावट दूसरी तरह की थी। रंग पानी से मिलता हुआ। एजाज़ ने चाव से इन जहाज़ों को देखा। एक नज़र हाईकोर्ट की विशाल इमारत पर डाली। एडेन गार्डेन की याद आई, यहाँ हवाख़ोरी के लिए वह बहुत आ चुकी है। यह एक

शिकारगाह भी है। शाम को शहर के रईस बड़ी संख्या में आते हैं, टहलते हैं और बेन्ड सुनते हैं। जहाज़ तेज़ी से बढ़ने लगा।

राजा साहब ने घन्टी बजाई। एक बेयरा आया।

"लाल पानी" राजा साहब ने बेयरा से कहा।

बेयरा शेम्पेन की बोतल, बर्फ़, छोटा टम्बलर और पेग ट्रे पर लाकर रख गया। गुलशन एजाज़ की बग़ल में बैठकर टम्बलर में बर्फ़ और शेम्पेन मिलाने लगी। पाचक ब्राह्मण कटलेट्, चाप और कबाब चाँदी की तश्तरियों पर रख गया। कहार ट्रे पर ढक्कनदार चाँदी के गिलासों में पानी ले आया। रखकर तवालिया लेकर खड़ा रहा। गुलशन ने दो पेग भरे। एक हाथ में रक्खा, एक बढ़ाकर एजाज़ को दिया। एजाज़ ने पेग चूमकर राजा साहब के हाथ में दिया, फिर अपना लिया। गुड्लक् हुआ। दोनों पीने लगे।

प्रायः एक डाज़न पेग थे। ये पिया पेग एक ही बैठक में नहीं इस्तेमाल करते। गुलशन तीसरा और चौथा पेग तैयार करने लगी। पेग ख़त्म करके राजा साहब ने हाथ बढ़ाया। बेयरा ने पकड़ लिया। एजाज़ ने भी बढ़ाया।

गुलशन ने तीसरा दौर तैयार करके, चाँदी की पेग रखने वाली रिकाब में लगाकर दोनों के बीच में रख दिया। दोनों, मौसम, गङ्गा, शिव-पुर के बगीचे, हवा आदि का ज़िक्र करते हुए, साथ-साथ नाश्ता करने लगे।

दूसरा दौर भी समाप्त हुआ; तीसरा भी हुआ। नशे का प्रभाव बढ़ने लगा। दोनों के हाथ धुला दिये गये। गिलोरी और सिगरेट की तश्तरियों को छोड़कर नौकर और कुल चीज़ें उठा ले गये। फिर केबिन

के पास के पर्दे, आड़ के लिए खोलकर, रेलिङ्ग के डंडों के साथ बांधने लगे। क़ीमती हारमोनियम लाकर रख दिया। गुलशन को छोड़कर और सब बाहर निकल गये।

"कुछ सुनने की तबियत हो रही है।" राजा साहब ने प्रेम से कहा।

एजाज़ ने गुलशन की तरफ़ देखा। गुलशन ने पीकदान बढ़ाया। पान थूककर एजाज़ ने कहा, "तेज़ हवा है। आवाज़ उड़ जायगी।" कहकर हारमोनियम खोला।

"तुम्हारा गाना है, हारमोनियम हो, पियानो या सितार-इसराज, छाकर रहेगा।" राजा साहब ने सहृदय स्वर से बढ़ावा दिया। एजाज़ हिली।

पर्दे पर उँगली रक्खी। कहा, "मयकशी के बाद आवाज़ पर क़ाबू नहीं रहता।" कहकर स्वर निकाला। राजा साहब तद्‌गतेन-मनसा ध्यानावस्थित हुए।

एजाज़ की मधुर आवाज़ निकली। जहाज़-भर के लोग, नीचे और ऊपर के, कान लगाये रहे। गाना शुरू हुआ—

"हर एक बात प' कहते हो तुम कि तू क्या है,
तुम्हीं कहो कि यह अन्दाज़ेगुफ़्तगू क्या है?
जला है जिस्म जहाँ, दिल भी जल गया होगा,
कुरेदते हो जो अब राख जुस्तजू क्या है?
रगों में दौड़ते-फिरने के हम नहीं क़ायल,
जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है!"

लोगों पर सच्चा जादू चला। सभीने दिल दे दिया, वही दिल जो हाथ से छुटकर मज़बूती से हाथ पकड़ता है। छोटे-बड़े सभी उसके भक्त हो गये। कोयला-झोंकनेवाले एक झुक्की झोंककर नीचे से डेक पर चढ़ आये। श्रम को हल्का कर लिया। सोचा, वह कौन सा स्वर है जो दिल पर अपनी पूरी-पूरी छाप लगा देता है? खड़े लोगों में क्षणभर के लिए विषमता नहीं आई; किसी बड़प्पन के कारण या पैसा होने की वजह गायिका का कण्ठ इतना मधुर है, यह वे नहीं सोच सके; विरोध का क्षण ही मिट गया। उन पङ्क्तियों के लेखक महाकवि ग़ालिब समय के सताये हुए और गानेवाली एजाज़ समय की संस्तुत, फिर भी दोनों में साम्य! यह किसी अधिकार की बात न होगी। अधिकार से वस्तु, विषय या बात इतनी सुन्दर नहीं बनती, ऐसी पूरी नहीं उतरती। यह वह अधिकार है जहाँ अधिकार ढीला है।

विलासी राजा एकटक उस सच्चे रूप और स्वर को देखते-समझते रहे। कुछ देर एजाज़ ने दम लिया। निगाह उठाई। भरा पेग उठाकर राजा साहब को दिया। ख़ुद एक लौंग दबाई। दो कश खींचकर पीकदान में डाल दी और हारमोनियम संभाला।

एक ठुमरी गाई :—

> "जाने दे मोको सुनो सजनवा,
> काहे करत तुम नित नित मोसन रार,
> नहीं, नहीं मानूंगी तिहार।
> छेड़ करत, नहीं मानत देखो री सखि,
> मेरी सुनै ना,

ब्रिन्दा कहत अब नित नित मोसन रार,
नही, नहीं मानूंगी तिहार ।"

अभी दुपहर नहीं हुई । भैरवी का वक्त पार नहीं हुआ । श्रीर राजा साहब को गम्भीर, और चलते हुए जहाज़ के सिवा कोई आवाज़ न आती हुई देखकर एजाज़ समझ गई—लोग कान लगाये हुए हैं । वह ख़ुशी से भर गई ।

एजाज़ ने छेड़ा :—

"यामिनी ना येते जागाले ना केन
बेला होल मरि लाजे ।
शरमे जड़ित चरणे केमने
चलिब पथेरि माझे ।
आलोक-परशे मरमे मरिया
हेर लो शेफालि पड़िछे झरिया,
कोनो मते आछे पराण धरिया
कामिनी शिथिल साजे ।
निबिया बाचिल निशार प्रदीप
ऊषार बातास लागि,
नयनेर शशी गगनेर कोने
लुकाय शरण मागि,
पाखी डाकि बले गेल विभावरी,
वधू चले जले लइया गागरी,

आमिओ आकुल कवरी आवरि
केमने याइब काये।"

रवीन्द्रनाथ का गीत; कलकत्ता का आधुनिक फैशन एजाज़ ने सच्चा अदा किया—वही उच्चारण, वही अँगरेजियत। राजा साहब पर और आधुनिक शिक्षित बङ्गालियों पर इसी स्कूल का सबसे अधिक प्रभाव है, रवीन्द्रनाथ के गानों में स्वर का सब से अधिक मार्जन मिलता है। राजा साहब की आँखों के सामने गङ्गा के शुभ्र फेन की तरह गीत का अस्तित्व तैरने लगा।

एजाज़ ने हारमोनियम हटा दिया। एक पेग और उठाकर राजा साहब को दिया, एक खुद लिया।

शराब, बात-चीत और गाने के बीच एजाज़ देखती जाती है, मटियाबुर्ज पार हुआ—शाह वाजिद अली का कारागार, तेल का केन्द्र बजबज पार हुआ, उलूबेड़िया पार हुई, कितनी ही मिलें निकल गईं, जिनका अधिकांश मुनाफ़ा विदेशियों के हाथ जाता है। एजाज़ अंगरेज़ी जानती है, सम्वाद-पत्र पढ़ती है, दूर निष्कर्ष तक आसानी से पहुँच जाती है, सम्पादक की टिप्पणी पर टिप्पणी लगा सकती है।

गुलशन राजा साहब को सिगरेट और पान देती जाती है। गाना बन्द करके एजाज़ ने सिगरेट के लिए उँगली बढ़ाई। गुलशन ने हीरे की पाइप में सिगरेट लगा दिया। एजाज़ पीने लगी।

"तुम्हारे नहाने, भोजन और आराम करने का वक्त हुआ।" राजा साहब ने कहा।

"पूजा करने की बात छोड़ दी!" एजाज़ ने बड़ी-बड़ी आँखें मिलाईं।

"वह दिल में होती रह गई।"

"उसने मिला भी दिया।"

राजा खामोश हो गये। एजाज़ ने कहा, "तुम उठो। नहाना मत। तवालिया गर्म पानी से निचोड़वाकर बदन पोंछवा डालो, धोती बदल दो। शराब पर नहाना!"

राजा साहब उठ गये। एजाज़ बैठी हुई, नदी की शुभ्र शोभा, श्याम तटभूमि देखती रही।

(८)

पुरानी कोठी के सिपाहियों के अफसर जमादार जटाशङ्कर सिंहद्वार पर रहते हैं। पलटन में हवलदार थे। ब्रह्मा की लड़ाई के समय नाम कटा लिया। जवान अच्छे तगड़े। नौकरी ढूंढ़ते ढूंढ़ते यहाँ आये। निशाना अच्छा लगाते हैं। राजा ने रख लिया। खुशामद करने में कमाल हासिल, तरक्क़ी कर गये।

कोठी के सामने पुराना फ़व्वारा है। अब नहीं चलता। चारों तरफ़ से पक्का औज। दीवार पर बैठे थे। मुन्ना गुज़री।

दोनों ने एक दूसरे को देखा। मुन्ना ने छींटा जमाया—"एक घोड़ा फेर रही हूँ।"

"वाह रे मेरे सवार! कौन घोड़ा?"

"एक हिन्दुस्तानी घोड़ा है।"

जमादार जटाशङ्कर झेंपे। गुस्सा आया। पर सँभलकर कहा, "और घोड़ी बङ्गाली है?"

मुन्ना को भी बुरा लगा। बदलकर कहा, "जब हमसे बातचीत करो, रानी समझकर करो।"

जटाशङ्कर सकपका गये। क्रोध में आकर कहा, "क्या कहा ?"

"कह रही हूँ, तुम्हारी नौकरी नहीं रहेगी। पहले रानी जी की सलामी दो," तिनककर मुन्ना ने कहा।

जटाशङ्कर ने रानी जी की सलामी दी। फिर ताव में आये। कहा, "मैं राजा हूँ, राजा की सलामी दे।"

"तुम गवाँर हो," मुन्ना ने कहा, "मैं रानी हूँ, रानी; रानी राजा को सलामी देती हैं ? जवाब में चूमती हैं। तुम मुझको चूमो।"

जटाशङ्कर ने सोचा, "रानी और राजा का खेल कर रही है।" प्रेम बढ़ गया। चूमने के लिए मुंह बढ़ाया कि गाल पर मुन्ना का चाँटा पड़ा। जटाशङ्कर चौंककर हाथ भर उछल गये। साथ ही मुन्ना ने कहा, "रानी का तुम्हारे लिए यही जवाब होगा। रही बात राजा को सलामी देने की; तुम्हें मालूम होना चाहिए कि हम सिपाही नहीं; हम प्रणाम करते हैं।" मुन्ना ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, कहा, "इस तरह; अब तुमसे फिर कहती हूँ, मेरे साथ रानी जी का मान है, उन्होंने दिया है, इसको अँगरेज़ी में आनर कहते हैं; राजा ने तुमको मान नहीं दिया, तुम अपनी तरफ़ से राजा का मान लेते हो। रानी का मान पहले तुमसे लिया जायगा। हम जब आयेंगे, तुम उठकर खड़े हो जाओगे और हाथ जोड़कर रानी जी की जय कहोगे। तभी हम रानी जी का आनर वहाँ चढ़ा सकेंगे।"

"कहाँ ?"

"वही जहाँ हम काम करते हैं?"

"हम रानी जी से पूछ लें।"

"और किस रानी जी से तुम पूछोगे? रानी जी का मान है यहाँ, तुमको यह बतलाया जा चुका है, वहाँ तुम जाओगे, दासी से कहोगे, ख़बर भेजोगे, तुमको जवाब नहीं मिलेगा, बिना-मान की रानी जवाब क्या देंगी? तुम इतना नहीं समझते, रानी जी का मान दूसरी के साथ तभी बाँधा जाता है जब कोई उनका पानी उतारता है। जहाँ हम काम करते हैं, वहाँ की उस औरत ने रानी जी का मान घटाया है, उसका मान घटाया जायगा। तुमसे यह भेद बतला दिया गया। अब बताओ, तुम साथ दोगे, या नहीं।"

"रानी जी के मान बढ़ाने में क्यों साथ नहीं देंगे?"

"अच्छा, अब रानी जी का मान हम रानी जी को दे देते हैं। अब हम हम हैं। अब हमको तुम चाहो तो चूम लो।"

जटाशङ्कर फिर चूमने के लिए लपके। पकड़कर चूमने लगे, तो मुन्ना ने उनके होठों के भीतर जीभ चला दी और कहा, "तुमने हमारा थूक चाटा। हमारी जात कहार की है। हम गढ़ भर में कहेंगे। तुम कौन बाँभन हो?"

जटाशङ्कर सूख गये। सोचा, "यह कुल चकमा उनकी जाति मारने के लिए था। कल से कोई पानी नहीं पियेगा।" बहुत डरे। देवता की याद आई कि उन्होंने न बचाया। सोचा, ब्रह्मा की लड़ाई में काम आ गये होते तो अच्छा होता।

मुन्ना टकटकी बाँधे हुए पं० जटाशङ्कर मिश्र के बदलते हुए मनो-

भाव देखती रही। पंडित जी ब्रह्मा की लड़ाई में नहीं मरे, इसलिए डरे। कहा, "तू मुझे अपना ग़ुलाम समझ, जो कहेगी, करूँगा; थूक चाटने को कहे तो चाटूंगा, मगर किसी से कह मत।"

मुन्ना की रग-रग में घृणा भर गई। समझ गई, "यह आदमी प्रणयी नहीं हो सकता। यह धोखा देगा। इसको उतारकर रखना चाहिये।" खुलकर कहा, "तुम जबतक हमारी बात मानोगे, हम किसीसे नहीं कहेंगे।"

हाथ जोड़कर जटाशङ्कर ने कहा, "मंज़ूर।"

"हमारे यहाँ" मुन्ना ने कहा, "घोड़ा-घोड़ी दोनों को घोड़ा कहते हैं। उसीको हम फेर रहे हैं, यही कहा था। कारण भी समझा दिया।"

प्रसन्न होकर जटाशङ्कर ने कहा, "हाँ, अब समझ में आ गया।"

"तो उस घोड़ी का अपमान करने के लिए एक घोड़ा चाहिए।"

"हाँ।"

"वह घोड़ा तुम बनोगे या मैं?"

जटाशङ्कर फिर जगे। आँखें लाल हुईं देखकर मुन्ना ने कहा, "गाल पर पड़े तमाचेवाली बात कहूँ या होठों के अन्दर गई जीभ वाली?"

जटाशङ्कर फिर ठंढे हो गये।

मुन्ना ने कहा—"हम इसी तरह घोड़ा फेरते हैं, उसको भी फेरते हैं, तुमको भी। बोलो, घोड़ा बनोगे?"

"बनना ही पड़ेगा।"

"तो तीन रोज़ लगातार उसी तरह हाथ जोड़कर रानी जी की

जय कहोगे। तीसरे दिन अन्दर के बग़ीचे वाले तालाब में दिन के दस बजे जब वह नहाने जायँगी, तब······समझे ?"

"अन्दर के बग़ीचे में मर्द के जाने की मुमानियत है।"

"तो, उसको तुम्हारे पास भेज दें ?"

जमादार जटाशङ्कर बहुत हैरान हुए। कहा, "अच्छा, जायँगे।"

मुन्ना ने कहा—"जमादार, तभी तुमको मालूम होगा। हम तुमको नमस्कार करते हैं, तुम्हारी सेवा करते हैं, पर तुमको खुश नहीं कर पाते, हमारे छूने से तुम्हारी जाति मारी जाती है। तुम हमें चूमोगे, इससे कुछ नहीं होगा, पर हम तुम्हें चूमेंगे, इससे तुम्हारा धर्म जाता रहेगा। कोई चूमना ऐसा भी है जिसमें दोनों के होंठ न मिलें ? अच्छा, तुम भी ब्राह्मण हो, यह भी ब्राह्मण है; तुम इसके पास जाओगे तो तुमको मालूम होगा कि तुमसे यह और कितनी बड़ी ब्राह्मण है। उस दिन रानी जी के सामने इसका तेज देखकर दासियाँ हैरान हो गईं।"

जटाशङ्कर ने कहा—"अच्छा मुन्ना, मेरी स्त्री गुजर गई है। तू मेरी स्त्री, और यही मैं तुझे समझूँगा। जा, तू गढ़ भर में कह दे कि मेरा-तेरा थूक एक हो गया।"

मुन्ना खिल गई। "यह मर्द है, जमादार, तुम मेरे मर्द। मैं कुछ समझकर तुम्हारे पास आई थी। औरत का प्यार जल्द समझ में नहीं आता। मैं भी बेवा हूँ, बेवा ही यहाँ दासी बनकर आ पाती हैं। मैं तुम्हारी दासी, तुम्हें मैं अपना ही रक्खूँगी। जैसा कहा है, वैसा करो; तालाब में जाओ; मैं दूसरा पेच लड़ाऊँगी। तुम्हारा एक

अपमान होगा; मह जाओ। इस औरत के लिए भगवान् हैं। यह नेक है।

[६]

राजा राजेन्द्रप्रताप राजधानी में एजाज़ के साथ रह रहे हैं। उसी रोज़ आ गये।

गढ़ के बाहर एक बड़े तालाब के बीच में टापू की तरह सुन्दर बंगला है। चारों तरफ़ से लोहे की मोटी-मोटी छड़ें गाड़कर पुल की तरह सुन्दर रेलिङ्गदार रास्ते बनाये गये हैं। तालाब के किनारे-किनारे चारों रास्तों के प्रवेश पर ड्योढ़ियाँ बनी हुई हैं, वहाँ पहरे लगते हैं। बाहर, दूर तक सुन्दर राहें, दूब जमाई हुई, तरह-तरह के सीजनल और .खुशबूदार फूल, क्यारियाँ, कुंज, बगीचे, चमन। कटीले तारों से अहाता घिरा हुआ; तारों पर बेल चढ़ाई हुई। हवा भी सदा-बहार, हर झोंके से सुगन्ध आती हुई। तालाब का जल स्वच्छ, स्फटिक के चूर्ण की तरह। बंगले का फ़र्श संगमारवर का, डबल दरवाज़े—एक काठ का, एक शीशेदार, रेशमी परदे लगे हुए। बैठक के फ़र्श पर बहुमूल्य कारपेट बिछा हुआ। कीमती बाजे, पियनो, हारमोनियम, फ्लूट, क्लेरिअनेट, वायलिन्, सितार, सुरबहार, मृदङ्ग, तबले, जोड़ी आदि यथास्थान रक्खे हुए। बेशक़ीमत कौच, सोफ़े, चीनी फूलदानी में सज्जित फूलों की मेज़ों के किनारे, एक-एक बग़ल लगे हुए। बीच में गद्दी बिछी हुई, गाव लगे हुए। रात में बत्तियों का तेज प्रकाश। चाँद और तारों के साथ प्रकाश का बिम्ब पानी में चमकता, चकाचौंध लगाता हुआ।

चारों तरफ़ से विशाल बरामदा, हर तरफ़ की राह से एक ही प्रकार का। हर बरामदे के भीतर बैठक एक ही प्रकार की, सजावट भिन्न भिन्न। दो एजाज़ के अधिकार में हैं, दो राजा साहब के। और भी कमरे हैं। एजाज़ की बैठकें रोज़ नये परदों से सजाई जाती हैं; सूती, रेशमी, मखमली झालदार; हरे, नीले, ज़र्द, बसन्ती, बैगनी, लाल, गुलाबी, हल्के और गहरे रंग के; कभी सफेद। कौच और सोफ़ों पर भी वैसा ही गिलाफ बदलता हुआ। फूलदानियों में उसी रंग के फूलों की अधिकता? एजाज़ के बदन पर उसी रंग के पत्थरों के ज़ेवर। उसी रंग की साड़ी, सलवार-कुर्ता या पाजामा-दुपट्टा।

राजा साहब अपनी बैठक में बैठे हुए हैं। दिलावर सिंह पहले से तैनात किया हुआ था, आया। कहा, प्रभाकर आ गये।

जागीरदार साहब ने कहा—"ये सब तुम्हारे तरफ़दार हैं। इनसे भी काम लिया गया है। पुलिस के जिन लोगों ने तुम लोगों को गिरफ़्तार करना चाहा था, बाद को शिनाख़्त न हो पाने की वजह—(तुमने दाढ़ी मुड़वा दी थी और रामफल का मुसलमानी नाम रख लिया गया था—रूप भी कैसा बनाया गया।)—थाने से उनका तबादला हो गया था, इन्होंने उन्हें खोजकर निकला और पूरी ख़बर ली। अब इन्हें छिपा रखना है। दीवार को भी पता न चले। पुलिस पकड़ना चाहती है। ये पकड़ गये तो बच न पाओगे।"

दिलावर ने नम्रता से कहा, "हुज़ूर का जैसा हुक्म, किया जायगा।"

"पुराने गढ़ के पीछे ठहराओ। ख़ुद दो-मंज़िले पर रहो। रसद ले जाया करो, इन्हें पकाया-खिलाया करो; रामफल को साथ रखना।

दूसरा काम तुम लोगों से न लिया जायगा। चोर दरवाज़े की ताली ले जाओ। वे जब बाहर निकलना चाहें, उसीसे निकाल दिया करो, रात के १२ से चार के अन्दर। जब कहें तब खोलकर भीतर ले आने को पहले से तैयार रहा करो, एक सेकन्ड की देर न हो। उनका काम न देखना, हम खुद देख लेंगे। खाना अच्छा पकाया करना, मछली-मांस भी। हमारी रसोई में दो-तीन भाजियाँ पकती हुई देख लो।"

"जो हुक्म, हुज़ूर।"

"ऐसा करो, अगर ये भी तुमको फँसाना चाहें तो न फँसा पायें। अब तो तुम्हारी दाढ़ी बढ़ गई है। रामफल की मूछें भी बढ़ गई होंगी। यहाँ से चलकर बदल जाओ। रामफल का मियाँ वाला रूप तुम बनालो और तुम्हारा ठाकुर वाला वह। नाम भी बदल लो। उसको अपने नाम से पुकारना और उसीको ले जाने के लिए भेजना। हम कभी-कभी तुम लोगों से मिला करेंगे।"

"जो हुक्म।" दिलावर ने प्रणाम किया। राजा साहब की ओर मुँह किये हुए पिछले-क़दम हटा। तालाब के पच्छिम वाले रास्ते से बाहर निकलकर गढ़ की तरफ़ चला, दूसरी ड्योढ़ी से घुसकर रामफल से मिलने के लिए। प्रभाकर के साथी बाज़ार में हैं। वह ड्योढ़ी के आगन्तुक-आगार में बैठा है। कभी निकलकर पान खाने के लिए बाहर चला जाता है। पैनी नज़र से इधर-उधर देख लेता है।

राज्य की क्रिया का ढङ्ग सब स्थानों में एकसा है। सब जगह

एक ही प्रकार के नारकीय नाटक, षड्यंत्र, अत्याचार किये जाते हैं। सब जगह रेअय्यत की नाक में दम रहता है। चारे का प्रबन्ध ही सत्यानास का कारण बनता है। अत्याचार से बचने की पुकार ही अत्याचार को न्योता भेजती है। जमींदार हो, तअल्लुकेदार; राजा हो या महाराज; कृपा कभी अकारण नहीं करता। जिस कारण से करता है, वह इसकी जड़ मज़बूत करने के लिए, मुनाफ़े की निगाह से, दूने से बढ़ी हुई होनी चाहिए। उसका कोप भी साधारण उत्पात या प्रतिकार के जवाब में असाधारण परिणाम तक पहुँचता है। सारे राज्य में उसके ख़ास आदमियों का जाल फैला रहता है। वह और उसके कर्मचारी प्रायः दुश्चरित्र होते हैं, लोभी, निकम्मे, दग़ाबाज़। फैले हुए आदमी प्रजाजनों की सुन्दरी बहू-बेटियों, विरोधी कार-रवाइयों, संघटनों और पुलिस की मदद से जमींदार के आदमियों पर किये गये अत्याचारों की ख़बर देने वाले होते हैं। निर्दोष युव-तियों की इज़्ज़त जाती है, रिश्वत में रुपये लिये जाते हैं, काम में आराम चलता है, बचन देकर रेअय्यत से पीठ फेर ली जाती है, बहाना बना लिया जाता है। पुलिस भी साथ ली जाती है। कभी चढ़ा-ऊपरी की प्रगति में दोनों अपने-अपने हथियारों के प्रयोग करते रहते हैं।

किसी गाँव में मुसलमानों की संख्या है। त्योहार है। गोकुशी वर्जित है; पर बकरा मँहगा पड़ा, गोकुशी की ताल हुई। आदमी से ख़बर मिली। एक रोज़ पहले, रात को पचास आदमी भेज दिये गये। कुछ मुखियों को उन्होंने मार गिराया।

कोई बड़ा मालगुज़ार है। किसी कारण पटरी न बैठी, लड़ गया। ताका जाने लगा। शाम को उसकी लड़की तालाब के लिए निकली। अँधेरे में पकड़कर खेत में ले जाई गई या दूसरे मददगार के ख़ाली कमरे में क़ैद कर रक्खी गई। दूसरे-दूसरे आदमी दाढ़ी लगाकर या मूछें मुड़वाकर चढ़ा दिये गये—ज़्यादातर मुसलमानी चेहरे से। उन्होंने कुकर्म किया। उसके फ़ोटो लिये गये। तीन-चार रोज़ बाद लड़की घर के पास छोड़ दी गई। एक फ़ोटो आदमी के गाँव में, दूसरी थाने में डाक से भेजवा दी गई। नाम अंटशंट लिख दिये गये—चढ़ने वालों के; लड़की के बाप का सही नाम। गाँव और पुलिस की निगाह में दोनों गिर गये। गाँव का भी आदमी पुलिस का, उसके पास दूसरी तस्वीर, पुलिस के पास दूसरी। बाप से पूछा जाने लगा। उस पर घड़ों पानी पड़ा। गाँव वालों ने खानपान छोड़ दिया।

किसी प्रजा ने ख़िलाफ़ गवाही दी। उसका घर सीर के नक्शे में आ जाता है। कभी उसके ख़ानदान वाले पास की ज़मीन बटाई में लिए हुए थे। गुमाश्ते को कुछ रुपये देकर एक हिस्सा दबाकर घर बना लिया था। इस फ़ेल का उलटा नतीजा हुआ। रात-ही-रात सैकड़ों आदमी लगा दिये गये। घर ढहा दिया। लकड़ी बाँस, पैरा उठा ले गये। गोड़कर घर की जगह गड्ढा बना दिया। नक्शे में वह जगह सीर में है।

किसी ने लगान नहीं दिया। वह ग़रीब है। विश्वास दिलाकर बुलाया गया कि सरकार से अपना दुख रोये। आने पर अंधेरी कोठरी में ले जाया गया। वहाँ ऐसी मार पड़ी कि उसका दम निकल

गया। लाश उठाकर पुराने तालाब के दलदल में गाड़ दी गई। गाँव के गुमाश्ते ने क़बूल ही न किया कि वह गढ में ले जाया गया था। कुछ लोग ऐसे भी निकले जो पिटते समय उसको बाज़ार में उलटे कई कोस के फ़ासले पर देखा था।

बच-बचकर पुलिस से भी भपाटे चलते हैं। थानेदार ने इन्सपेक्टर और डी० एस० पी० आदि की मदद से प्रजा-जनों को किसी मामले में ख़िलाफ़ खड़ा किया, खूब दाव-पेच लड़े, राजा का पाया कमज़ोर पड़ा, समझौते की बातचीत हुई, रिश्वत की लम्बी रक़म मांगी गई, एक उचित ठहराव हुआ। कांटा निकाल फेका गया। पर दिल की लगी खटकती रही। दूसरा मामला गठा। थानेदार फांस दिये गये। बलात्कार साबित हुआ। एस० पी० और डी० एस० पी० की सिफ़ा-रिश बदनामी के डर से न पहुँच सकी। तहक़ीक़ात का अच्छा नतीजा न निकला। थानेदार को सज़ा हो गई। नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

गरमी निकालने के लिए डी० एस० पी० या एस० पी० ने बुलाया। राजा ने मुख्तारआम या मैनेजर को भेज दिया। कमज़ोरी से कभी बात न दबी, डी० एस० पी० ने पूछा—"राजा नहीं आये।" मुख्तारआम ने कहा, "इजलास में तो मैं ही हुजूर के सामने हाज़िर होता हूँ," या मैनेजर ने कहा, "आप की सेवा के लिए हम लोग तो हैं ही।" उस दफ़े ख़ामोशी रही। दोबारा बदला चुकाया गया। पहले कुछ प्रजाओं की दस्तख़तशुदह शिकायतें की गईं। ऊँचे कर्मचारियों को दिखाया गया। कहा गया कि राजा पर सरकार का शासन नहीं, थाने

में थोड़े लोग रहते हैं, राजा के लोग उनको डरवाये रहते हैं" राजा बदचलन है, रैअयत की इज़्ज़त बिगड़ता है, पुलिस की सच्ची तहक़ीक़ात नहीं होने देता, पुलिस को अधिकार के साथ काम करने दिया जाय तो रास्ते पर आ जाय। हुक्म लेकर दरबार का चकमा दिया गया। राजा गये। पर दरबार से शिकायत करनेवाले लोगों की ही शिरकत रही। राजा को कुर्सी भी न दी गई। लाट साहब से शिरकत करने-वाले डी० एस० पी० भी खड़े रहे। लिखी शिकायतों के आधार पर कुछ भला-बुरा कहा, कुछ नसीहत दी। प्रजाजन उठा के लगाते डी० एस० पी० साहब की तारीफ़ करते रहे। जिन शिकायतों का आधार लिया गया था, उनमें राजा का हाथ न था, फलतः चेहरे पर सियाही न फिरी, कलेजा न धड़का।

दरबार समाप्त हो जाने पर उन्होंने लाट साहब को लिखा कि दरबार के नाम पर उनके साथ डी० एस० पी० ने ऐसा-ऐसा बर्ताव किया, वहाँ कुछ प्रजाजन थे, वे उन्हें पहचानते नहीं,—किनके थे, कौन थे। उनके आदमी घुसने नहीं दिये गये। जो बातें डी० एस० पी० ने कहीं, उनका तात्पर्य वह नहीं समझे। वे ऐसी-ऐसी बातें थीं। पुलिस में नौकर होनेवाले ये साधारण लोग रिश्वत लेकर देश को उजाड़े दे रहे हैं। इसका व्यक्तिगत सम्बन्ध ही है। पुलिस के दाँत यहाँ तक डूबे हुए हैं कि नियत आमदनी वाली प्रजा झूठे मामले में रिश्वत देकर राजस्व नहीं दे पाती। यह एक-दो की संख्या में नहीं, सैकड़ों की संख्या में, ज़मींदारी के २५ थानों में प्रतिमास होता है। नतीजा यह हुआ है कि जाल में फँसाई गई प्रजा

रिश्वत से पैर छुड़ाकर फिर राजस्व नहीं दे पाती। यह प्रक्रिया उत्तरोत्तर बढ़ रही है। ज़मींदार को राजस्व न मिलने पर वह क़र्ज़ लेकर सरकार को देगा या न दे पायेगा। इस परिणाम से भी उन्हें गुज़रना पड़ा है। सरकार से इसका प्रतिकार होना चाहिए।

जब इस मामले को लेकर राजा राजेन्द्रप्रताप कलकत्ता थे, डी० एस० पी० की बुरी हालत कर दी गई। वह हिन्दू थे। हिन्दू-मुस्लिम-समस्या से दिलचस्पी रखते थे। इसी समय एक आदमी गया। मुसलमानों के गाँव, शमशेरपुर, में रहा। बातचीत की। मुसलमानों को उनका स्वार्थ समझाया। कहा, वह उनका अपना आदमी है। उन्हें गोकुशी नहीं करने दी जाती, यह उन पर ज़्यादती की जाती है। ज़िले के वकील नूर महम्मद साहब का नाम लेकर कहा, काम पड़ने पर वह बग़ैर मिहनताना लिये हुए लड़ेंगे। फिर कलकत्ते के इमाम साहब का नाम लिया, कहा कि उनका हुक्म है, मुसलमान अपने हक़ से बाज़ न आयें। एटर्नी अब्दुल हक़ का नाम लेकर कहा, वह हाईकोर्ट में मुफ़्त लड़ेंगे और हिन्दोस्तान भर में यह आग लगेगी। वे सिर्फ़ एक दरख़्वास्त दे दें कि बकरीद को वे गोकुशी करेंगे, उन्हें इज़ाज़त मिले। सरकार को इज़ाज़त देनी पड़ेगी। अगर हिन्दू होने की वजह डी० एस० पी० मदद न करें तो उसको इसका मज़ा चखा दो। थोड़ी-सी मदद हम भी दूसरे मौज़ों के भाइयों को भेजकर करेंगे। रात के वक़्त बदला चुकाना। पीछे क़दम न पड़े।

फिर वह सज्जन कस्बे में आये। वहाँ दाढ़ी-मूँछें मुड़ाईं। फिर डी० एस० पी० साहब से मिले। कहा, अधिकारियों के कर्मचारी हैं।

पास के अधिकारी अच्छे ज़मींदार हैं। ख़ास बात के बहाने एकान्त निकालकर कहा, "अधिकारी हुज़ूर की सेवा करते आ रहे हैं। अबके शमशेरपुर में बड़ा जोश है। बकरीद को गोकुशी होनेवाली है। मुसलमान चिल्ला-चिल्लाकर कहते हैं, गोकुशी करेंगे और हुज़ूर के सामने करेंगे। हिन्दुओं के धार्मिक प्राणों को दुःख होता है। माँ, मझले बाबू की बहू, उन्हीं के पास नक़द ज़्यादा है, बहुत दुखी हैं। जबसे सुना है, पानी एक घूंट नहीं पिया।" कहकर आँखों में आँसू लाने लगी। मुझे घर बुलाकर कहा, "रामचरण, तुम हुज़ूर के कच-हरी में जाओ; हमलोगों का कौन-सा अपराध है कि ऐसा होने वाला है? ऐसा तो कभी नहीं हुआ। हुज़ूर हिन्दू हैं। हुज़ूर के रहते···।"

"सुनो, तुम्हारा क्या नाम है?" साहब दुचित्ते थे, सजग होकर पूछा।

"रामचरण, हुज़ूर"

"रामचरण कौन?"

"रामचरण अधिकारी, हुज़ूर। हमसब एक ही हैं।"

"तुम हमारे आदमी हो?"

"हुज़ूर, मैं हुज़ूर के ग़ुलाम का ग़ुलाम।"

"तुम्हारी मालिका को बहुत डर है?"

"हुज़ूर, अन्न-पानी छोड़ रक्खा है।"

"तो अबके शमशेरपुर के मुसलमान गोकुशी नहीं कर पायेंगे। पर ..."

डी० एस० पी० ग़रीब घर के हैं। पढ़ने में प्रतिभाशाली थे।

आर्थिक छुटपन से लड़ रहे हैं। कान के पास मुँह ले जाकर कहा, "हम देखेंगे, तुम्हारी मालकिन कितना ख़र्च कर सकती हैं।"

"हुज़ूर, बहुत।"

डी० एस० पी० ने सोचा, साँप भी मर जायगा, लाठी भी न टूटेगी। अभी उनको गोकुशी की कोई सूचना न मिली थी। कहा, "अच्छा, परसों मिलना।"

रामचरण ने कहा, "हुज़ूर, उसी गाँव में मिलूँगा। देखें मुसल-मान, हिन्दुओं में दम है या नहीं। है! मालकिन का अन्न-जल छूटा हुआ है। पहले हुज़ूर के इक़बाल से खिलाऊँ-पिलाऊँ।"

"तो कितना?"

"हुज़ूर कुछ अन्दाज़ा?"

"पाँच—"

रामचरण ने झुककर सलाम किया। "वहीं कैम्प में हुज़ूर के सामने—" कहकर चला।

"पाँच ह—समझे?"

"हुज़ूर, खिलाना-पिलाना है पक्का रहा।" कहकर रामचरण सलाम करके भगा।

दो-तीन दिन में डी० एस० पी० समझे, रामचरण की बात सही थी। बकरीद के दिन गये। गोकुशी रोकी। जोश बढ़ा। रामचरण से मिलने की आशा से थानेदार और सिपाहियों को घटनास्थल पर बढ़ा दिया। इधर दुर्घटना हो गई। उनकी एक ज्ञानेन्द्रिय विकृत कर दी गई।

यहसब राजा के कर्मचारी और सिपाहियों का काम था, पर कुछ पता न चला। पुलिस बहुत लज्जित हुई। बात ज़िले भर में फैली। डी० एस० पी० की नौकरी गई।

[१०]

पहले दिन। मुन्ना ने सिपाही की आँख बचाकर जमादार को आने की सूचना दी और आड़ में जहाँ बातचीत की थी, रास्ता छोड़कर उसी तरफ़ चली। जमादार ड्योढ़ी में कुर्सी पर बैठे थे। सिपाही ख़ज़ाने के पास पहरे पर खड़ा था। सुबह का वक्त। सूरज की मीठी किरनें शबनम के फ़र्श पर जोत का समन्दर लहरा रही थीं। नीचे से पत्तियों की हरियाली अपना रंग उभारती हुई। रंगीन फूल झूमते हुए, मुन्ना सूरज की तरफ़ रुख़ किए हुए खड़ी रही। जमादार गये, हाथ जोड़कर कहा, रानी जी जय हो।

मुस्कराती हुई मुन्ना चल दी। पहले पहरेदार को पार किया, दूसरे को किया, तीसरे को देखकर रुकी। दूसरी मंज़िल पर, वहाँ एकान्त था। पहरेदार भी ख़ासा पट्ठा, पठान। नाम भी रुस्तम। यह पहरा बुआ के वास के पास लगता था। कुछ आगे पिछवाड़े वाला ज़ीना हमेशा थोड़ा प्रकाश। अन्दर महल की कितनी ही दलानें, दूसरे-दूसरे महलों से, उस ज़ीने की तरफ़ गई थीं। मुन्ना रुस्तम के सामने खड़ी हो गई। रुस्तम कुछ देर तक खड़ा हुआ देखता रहा। फिर पूछा, "क्या है?"

"तुम्हारा नाम क्या है?" मुन्ना ने पूछा।

"रुस्तम।"

"मैं रानी जी के पास से आती हूँ, तुम्हें मालूम है?"

"हाँ।"

"तुम तरक्क़ी चाहते हो?"

"इसीके लिए नौकरी करता हूँ।"

"मेरी बात मानो, रानी जी का काम करो। कौनसी तरक्क़ी चाहते हो?"

"जमादारी।"

"बाद को मालूम होगा। यह बात किसीसे कहना मत। कहो, नहीं कहूँगा।"

"नहीं कहूँगा।"

"यह जमादार कैसा आदमी है?"

"अच्छा।"

"अच्छा आदमी है, तो क्या जमादारी करोगे? कहो, बुरा है।"

"हमारा अफ़सर।"

"तुमको जगह अफ़सर की कहाँ से मिलेगी? इसी आदमी की जगह तुमको दी जायगी। समझकर कहो, चाहिए या नहीं?"

"चाहिए।" आवाज़ गिर गई।

मुन्ना एक क़दम बढ़ी। कहा, "कहो, रानी जी से कुल बातें कही जायं।"

ख़ुश होकर रुस्तम ने कहा—"रानी जी से कुल बातें कही जायं।"

"अच्छा, तलवार निकालकर क़सम खाओ, कहो, हम रानी जी का साथ देंगे।

रुस्तम तन गया। तलवार निकालकर क़सम खाई।

मुन्ना ने कहा—"तलवार हमें दे दो।"

इधर-उधर देखकर रुस्तम ने तलवार दे दी।

मुन्ना ने तलवार लेकर सलामी दी। कहा, "यह जमादार के साथ रानी और राजा की सलामी है। अब तुम जमादार से छुट गये। कहो, हाँ।"

"हाँ।"

"यह लो अपनी तलवार।" रुस्तम को तलवार दे दी। कहा, "जैसी जमादार को सलामी मैंने दी वैसी मुझे रानी कहकर तुम दो।"

रुस्तम ने वैसा ही किया। मुन्ना ने कहा, "तुम पास हो गये। याद रहे अब कल काम की बात बतलाऊँगी और परसों काला चोर पकड़ाऊँगी। मुझे रानी समझना। जब जिसको रानी समझने के लिए कहूँ, समझोगे। बाद को देखोगे, तुम्हारी मुराद पूरी हो गई। मतलब गठ गया।"

रुस्तम ख़ुश हो गया। मुन्ना बुआ के कमरे गई।

बुआ बैठी थीं, मुन्ना सामने खड़ी हुई। कहा, "खड़ी हो जाओ।" बुआ बैठी रहीं।

मुन्ना ने कहा—"खड़ी हो जा।"

बुआ के आँसू आ गये, खड़ी हो गईं। मुन्ना ने कहा, "इधर आओ।"

बुआ चलीं, मुन्ना बरामदे की तरफ़ बढ़ी। पहुँचकर कहा, "मैं

जो पहले थी, अब वह नहीं। अब तुम्हारे लिए पहले मैं रानी हूँ। फिर तुम्हारा काम करने वाली। पर काम में मैं दरअस्ल रानी जी का करती हूँ। बात तुम्हारी समझ में आई ?"

बुआ सहमीं। आँखें फाड़कर मुन्ना को देखने लगीं।

मुन्ना ने कहा—"हाथ जोड़कर हमको नमस्कार करो।"

बुआ की त्योरियाँ चढ़ीं। मुन्ना ने कहा, "नमस्कार करो, नहीं तो सिपाही बुलाऊँगी।"

बुआ ने कहा—"हमारे भतीजे को बुला दो। हम घर चले जायँगे।"

मुन्ना ने मुस्कराकर कहा—"तुम्हारा भतीजा राजा का दामाद है, अपनी स्त्री से सुन चुका है। समझ गया है, राजा का क्या सम्मान है। गांठ बांधो, वह तुमसे नहीं मिल सकता। जाना चाहती हो तो तभी जा पाओगी जब रानी को सम्मान मिल जायगा। तुमने सिखाने पर भी बात नहीं मानी। दासी का तुमने अपमान कराया, तुमको नहीं मालूम। हाथ जोड़ो, हम रानी हैं।"

बुआ फिर भी ख़ामोश रहीं। मुन्ना ने कहा, "यह काम हम तुमसे ले लेंगे। हाथ जोड़ो, नहीं तो सिपाही बुलाएँगे। वह ज़बरदस्ती जोड़ाएगा।"

बुआ ने हथेलियाँ जोड़ीं।

मुन्ना ने कहा—"सिर से लगाओ।"

बुआ ने सिर से लगाईं।

मुन्ना ने कहा—"दो दफ़े और।"

बुआ ने दो दफ़े और प्रणाम किया और वहीं गिर गईं।

मुन्ना दासी का काम करने लगी। पानी ले आई, मुँह में छींटे लगाये, फिर पंखा झलती रही। एक अरसे बाद बुआ होश में आईं। लाज और नफ़रत से आँखें न मिला सकीं। मुन्ना ने कहा, "तुम्हारी मौसी को समझाया जा चुका है, वे बैठी हैं। तुम इतना समझो कि तुम्हारी निगाह में हम जितने छोटे हैं, रानी की निगाह में तुम और छोटी हो। जबतक तुम राह पर नहीं आतीं रानी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी। कहो, रानी जैसा-जैसा कहेंगी, करना मंज़ूर ?"

बेदम होकर बुआ ने कहा—"मंज़ूर है।"

"तुमको तीन रोज़तक इसी तरह प्रणाम करना होगा। अगर इन्कार किया तो सख़्ती होगी।"

लाचार होकर बुआ ने स्वीकार किया।

मुन्ना ने कहा—"दूसरे दिन तुमको सखी की तरह बाग़ीचा दिखाने ले जायँगे। तुमने देखा है, पर तुमको बाग़ीचे के पेड़ों के नाम नहीं मालूम। बाद को एक साथ नहाएँगे। तीसरे दिन क्या होगा, यह तुमसे बाग़ीचे में कहेंगे। जब हमारी-तुम्हारी पटरी बैठ जायगी, तभी तुम्हें मालूम होगा, असलीयत क्या है। तुम्हारी दासी अब चुन्नी है। वह आती होगी।

[११]

दिलावर रामफल के पास गया। अपने जीवन से उसको बड़ी ग्लानि हुई। बचाव नहीं। नसों से जैसे देह, वह दुनिया के जाल से बंधा हुआ है और सिर्फ़ दस रुपये महीने के लिए। जान की बाज़ी

लगाये फिर रहा है। कहीं से छुटकारा नहीं। जहाँ तक निगाह जाती है, यही जाल बिछा हुआ है। लुभाने वाली जितनी चीज़ें हैं, सभी ख़ून से रंगी हुई।

जितने सिपाही हैं, सब के जोड़े मिलाए हुए। बाहर वाले नहीं पहचान सकते। एक तरह के तीन-चार भी। उन्हीं की तरह यह इमारत, ज़मींदारी, हीरे-मोती, जवाहरात, चमक-दमक, रूप-रंग—कुल बनावटी। इनकी असली सूरत कुछ और है। यह स्वर्ग दिखता हुआ दृश्य नरक है। ये राजे-महाराजे राक्षस। ये देवी-देवता पत्थर के, काठ के, मिट्टी के।"

रामफल बैठा हुआ था। दिलावर ने कहा, "चलो बदलो।"

"कैसे? क्या बात है?" जितना ही विश्वास करके रामफल ने देखा, उतनी ही अविश्वास वाली ज़हरीली ज्योति आँखों से निकली।

"अब तुम हम, हम तुम। हमारी जैसी दाढ़ी रक्खो। चलो, एक देवता आये हैं, कोई साधु हैं, ले आना है; दामाद की तरह रखना है। ख़ास राजा की बात है, दीवार भी न सुने। वह भी उस काल-कोठरी में कभी-कभी दर्शन देंगे। जल्द चलो।"

"क्या बात है?"

"चल जल्द। बात तो दुनिया भर की जानता है।"

राफमल उठा। दोनों राजा की ओर से रक्खे गये सिपाहियों के नाई की ओर चले।

नाई फ़ुरसत से था। कहा, "पालागो, रामफल महाराज, राम-राम दिलावर साहब।"

रामफल ने आशिर्वाद दिया। दिलावर ने राम-राम की।

रामफल ने कहा, "दाढ़ी बहुत बढ़ गई है, खुजला रही है, इसके बराबर कर दो, मूछें भी। किनारे छाँट दो।"

"वाह, महाराज," नाई ने कहा, "हम समझे, आप शौक़ बुझाते हुए पितरों को भूल गये! लेकिन परमात्मा की कृपा है। बैठ जाइये। धन्य हूँ मैं।"

रामफल बैठे। नाई ने दिलावर की जैसी दाढ़ी-मूछें बना दीं। फिर दिलावर से पूछा, "आपका, साहब, कौनसा फ़ैसन होगा? आजकल तो कर्ज़न फ़ैशन की चाल है।"

"वह, काम पूरा होने पर, सराध में जैसे। इसने काम अधूरा छोड़ रक्खा है। इसकी जैसी थी, वैसी ही बना दो। अभी दाढ़ी के बाल कुछ छोटे हैं, ख़ैर नोकदार बना दो। नाक के नीचे वाले बाल सफ़ाचट कर दो।"

नाई गम्भीर हो गया। दिलावर बैठे। रामफल तल्लीन होकर शीशा देखते रहे।

बाल बन जाने पर दोनों तालाब में स्नान करने गये। दिलावर ने लुंगी पहनी। दोनों चले। बाहर के फाटक पर प्रभाकर बैठा हुआ ऊब रहा था। दिलावर ने रामफल को दिखाया, कहा, आप हैं। रास्ते में उसने अच्छी तरह समझा दिया था।

उसकी बात प्रभाकर ने नहीं सुनी। दिलावर के रूप में रामफल को देखकर उसको धुकचा लगा। पर उसको अपने काम से काम था। दिलावर ने कह दिया था कि उसीका नाम बतलायेगा।

रामफल ने प्रभाकर को बाहर बुलाया। कहा, "चलिए, आप लोगों को दूकान में अच्छी तरह भोजन करा दें। रात को ले चलेंगे। अभी रास्ता साफ़ नहीं है। वहाँ आप लोगों की जगह दुरुस्त की जायगी। बैठने-लेटने के पलंग-बिस्तर-मशहरी मेज़-कुर्सी आदि लाने-लगाने पड़ेंगे। तबतक चलिए, बाज़ार की सैर कीजिए।"

"तुम्हारा नाम क्या है?" "हमारा नाम है दिलावर।"

बाज़ार में राजा की ही व्यवस्था थी। सामान वहीं रक्खा था। आदमी इधर-उधर टहलते थे। प्रभाकर को देखकर सब इकट्ठे हो गये।

एक दर्ज़ी ने पूछा, "सिपाही जी, आप कौन हैं?"

दिलावर ने कहा, "उस्ताद हैं, जैसे आप ख़लीफ़ा।"

"गवैये हैं?" एक दूसरे ने पूछा।

"हाँ, नचनिये भी हैं, आजकल तो तबले का बोलबाला है। वह आ गई है न? बिरादरों की आमदरफ़्त हो चली है। रात को ठनकेगा।"

ख़लीफ़ा झेंपे। पर बड़ों का प्रभाव रखते थे, ख़ामोशी से रख लिया।

दिलावर प्रभाकर और उसके साथियों को लेकर एक दूकान में गया। इच्छानुसार भोजन कराया। जिस घर में सामान था; वहाँ विश्राम के लिये ले जाकर पूछा, "बाबू, आपका कौन-कौनसा सामान है, हमें दिखा दीजिये। हम वक़्त पर उठवा ले जाएंगे।"

दूसरे कमरे में सामान बन्द था। ताली जिसके पास थी, वह आदमी बाहर था। प्रभाकर जानता था। कहा, "सामान की कोई चिन्ता नहीं जब चलेंगे, सामान भी लिवाते चलेंगे।

दिलावर-नामधारी को टोह न मिली कि कैसा आदमी है, कैसा सामान है।

[१२]

दूसरे दिन। जमादार जटाशङ्कर कुर्सी पर बैठे तम्बाकू मल रहे थे। रुस्तम पहरा बदलने के लिए आया। जमादार को उसने देखा, पर मुँह फेरकर चल दिया, सलामी नहीं दी।

जमादार ने पुकारा, "रुस्तम।"

रुस्तम का कलेजा धड़का। पर हिम्मत बांधी और खड़ा हो गया।

"रुस्तम क्या ग़लती की ?" जमादार ने गम्भीर होकर पूछा।

रुस्तम का पारा चढ़ गया। ग़ुस्से से कहा, "हम इसका जवाब देंगे इसी कुर्सी पर बैठकर।" यह कहकर रुस्तम चला।

जमादार ने ख़ज़ाने के सिपाही से कहा, "इसको पकड़ लो।

तलवार निकालकर ख़ज़ाने का सिपाही बढ़ा। रुस्तम को जैसे किसी ने बांध लिया।

जमादार ने "कहा, तुम कितना बड़ा क़सूर कर रहे हो, तुम्हारी समझ में आ रहा है ? अभी मआफ़ी है। फिर उधर नहीं, इधर से निकल जाना होगा और हमेशा के लिए।"

रुस्तम के जी में आ रहा था, भगकर मालख़ाने के पहरे पर चला जाय और दो रोज़ किसी तरह गुज़ार दे, लेकिन पैर नहीं उठ रहे थे।

जमादार ने कहा, "इधर आओ।"

रुस्तम ने देखा, क़दम जमादार की ही तरफ़ उठ रहा है, दूसरी तरफ़ नहीं। वह चला।

जमादार अपनी कोठरी में गये। रुस्तम भी पीछे पीछे।

"जमादार, मुसलमान हूँ, लेकिन पैर पकड़ता हूँ। मैं ऐसा आदमी नहीं था। मुझसे छल किया गया।"

"किसने किया ?"

रुस्तम की ज़बान बन्द हो गई। होठों पर उँगली रखकर इशारे से समझाया कि बोल नहीं फूट रहा।

जमादार ने कहा, "अच्छा, लो राजा को और बोलो।"

रुस्तम पर जैसे कोड़ा पड़ा। एक चीख़ निकली।

जमादार ने कहा, "अच्छा, तुम ख़ज़ाने के पहरे में रहो, ख़ज़ाने का पहरा हम मालख़ाने भेज देंगे।"

"जमादार ख़ाना-ख़राब न करो। हमारी तरक्क़ी होने वाली है।"

"कैसी ?"

"हमको जमादारी मिलेगी।"

"अरे बेवक़ूफ़, तेरी नौकरी जायगी।"

रुस्तम घबराया! जमादार ने कहा, "जब तुम्हारी तरक्क़ी होगी, सिफ़ारिश हम करेंगे, तरक्क़ी राजा देंगे।"

"रानीजी देने वाली हैं, उनका एक काम करना है।"

"रानी जी किसी राज-काज में दस्तन्दाज़ी कर सकती हैं ! राज्य की मुहर पर उनका नाम भी है ?"

रुस्तम को मालूम हुआ, वह नौकरी भी गई। कहा, "जमादार, ग़रीब आदमी हूँ, पेट से न मारिएगा।"

"कुल बातें बता दो। किसने तुमसे कहा ?"

मुन्ना के स्मरणमात्र से रुस्तम के सर पर माया जाल छा गया। फिर न बोल सका, जैसे उसकी सत्ता ही गायब हो गई।

जमादार ने पूछा—"कुछ इशारा ?"

"व······रोज······।"

"अच्छा, तुम अपने पहरे पर जाओ, तुमको कुछ नहीं होगा अगर तुम सिपाही रहोगे।"

थोड़ी देर बाद मुन्ना आई। जटाशङ्कर का जी मरोड़ खाकर रह गया। मुन्ना को उसी किनारे देखकर उठे, गये और हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

"जमादार, कभी मत भूलिए कि मुन्ना छिनी है, यहाँ रानी हैं। बातें जाती हैं। हम भी भला-बुरा करते-कराते हैं। राजा रहेंगे तो रानी भी रहेंगी, नहीं तो रंडी रहेगी। जो रानी का सम्मान रंडी को दिलाता है, वह राजा नहीं, भँडुवा है। तुम्हारी श्री रानी में हैं, रंडी में नहीं। वहाँ जाओगे, तो रंडी को राज़ दोगे। राजा अब राजा नहीं। क्योंकि उसकी रानी कहाँ है ?"

जमादार को अक्षर-अक्षर सत्य जान पड़ा। पर घबराये कि राजा की तौहीन हुई। सोचा, रुस्तम इससे कह आया। कहा, "क्या वह चला गया ?"

"वह कौन ?" मुन्ना ने डाँटकर पूछा।

जमादार सहम गये। उस पर उनका सम्मान न चढ़ा। मुन्ना समझ गई कि उसका आनर पकड़ा गया। चलने को हुई कि तो मालूम हुआ, जमादार से जुड़ गई है। कहा, "राजा से पूछ सकते

हो कि रंडी को रानी का सम्मान क्यों दिया जाता है ? हम कह चुके कि रानी का मान छिना है। वह मान रानी का आदमी छीनेगा तभी रानी रानी है। फिर दूसरा सँवारेगा। जब ऐसा होगा, रानी के तरफ़दार रानी को मान देते फिरेंगे। अब वह रानी का आदमी है, इसलिए राजा का भी है। तुम्हारा सम्मान रानी के आदमी ने नहीं किया, मैंने किया। तुम कल वचन दे चुके थे, आज पाल न सके। हमने कह दिया था, थोड़ा-सा अपमान सह जाओ; पर तुम नहीं मान सके। तुम मर्द नहीं, इतर हो। तुमने हमारा आदमी बिगाड़ दिया। हम तुमसे पूछते हैं, रानी का अपमान तुम करोगे ? तुमने देखा है रानी को ? बोलो, नहीं तो ठोंकती हूँ अभी लौट कर। तुमसे कहा कि तुम दर्ज हो गये। रानी की डायरी में तुम लिख गये कि रानी का अपमान किया। आज तुम राजा से कहोगे तो क्या होगा ? हम कल लिखा चुके।"

जमादार का थूक सूख गया। कहा, "हमसे ख़ता हुई।"

"यह बताओ, इस रंडी को देखा है या नहीं ?"

"देखा है।"

"सलामी दी ?"

"हाँ, दी।"

"वह किसकी सलामी है ?"

"रानी जी की।"

"वह रानी है ?"

"नहीं।"

"तुम इस राजा के बच्चे से पूछ सकते हो कि रानी की सलामी इसको क्यों दी जाती है ?"

जमादार चुप रहे।

"यही तलवार राजा को मारने के काम में खोल सकते हो ?"

"नहीं।"

"लेकिन कोई अगर उस पर चढ़ जाय और राजा कहे—?"

"रानी पर ?"

"जिसके पास हम रहते हैं, यहाँ नहीं, वहाँ।"

जमादार का सर झुक गया।

"इसीको मान कहते हैं। यह मान मर्द ने छीन लिया है। यह सिपाही जो मान देता है, वही मान उस सिपाही को दो और अपनी ड्योढ़ी पर; नहीं तो समझ जाओ कुल बातों के साथ पहले ही पेश किए जाओगे।"

जमादार का सर न उठा। मुन्ना ने फिर कहा, "बोलो, क्या मंज़ूर है ?"

"ड्योढ़ी पर एक दूसरा सिपाही भी रहता है, वह देखेगा।"

"हर सिपाही से तुम्हारी तौहीन कराई जायगी, जूते लगाये जायँगे और निकालकर बाहर कर दिये जाओगे।"

जमादार के आँसू आ गये। कहा, "मंज़ूर है।"

मुन्ना चली, पीछे-पीछे जमादार। समझ गये कि खिड़की के रास्ते निकलकर रुस्तम इससे कह आया। भेद खुल जाने पर क्या

होगा सोचकर घबराए। चारा न था। चारों तरफ़ से घेरे हुए थे। ड्योढ़ी पर मुन्ना खड़ी हो गई। कहा, खड़े रहो।

सिपाही अपने जमादार की बेइज़्ज़ती देखकर हुक्म पाने के लिए देखता रह गया। मुन्ना ने सिपाही से पूछा, "यह कौन है?"

सिपाही जैसे बीच से टूट गया। तलवार की मूठ के लिये हाथ बढ़ाया, पर हाथ बँध गया।

मुन्ना ने फिर डाँटकर पूछा, "यह कौन है?"

सिपाही ने कहना चाहा, "जमादार", पर जीभ ऐंठ गई। मुन्ना ने कहा, "रानी जी की सलामी दाग़ो।"

जमादार ने हाथ का इशारा किया। सिपाही ने तलवार निकाल-कर रानी जी की सलामी दी। सिपाही को मालूम हुआ, एक नया जोश उसमें भर गया।

मुन्ना ने कहा, "यह बदमाश है। इसने रानी जी की तौहीन की।"

सिपाही क्रोध से जमादार को देखने लगा।

मुन्ना ने कहा, "सिपाही कुछ मत बोलो. रानी जी सब साफ़ करना भी जानती हैं। अभी देखो और समझो।"

मुन्ना मालखाने में कप्तान के पास गई। कहा, "तुम्हारी तौहीन हुई इसलिए आज ही तुम जमादार बनाये जाओगे। अपनी वर्दी उतारो।" सिपाही ने उतार दी। मुन्ना ने वर्दी पहनी। कहा, "चलो।" सिपाही डरा। पर हिम्मत बाँधकर चला। दोनों नीचे ख़ज़ाने के पहरे पर आये। मुन्ना को देखकर सिपाही और जमादार दोनों घबराये जैसे राज्य उलट गया हो। मुन्ना ने तलवार की सलामी ली. कहा,

"यह रानी जी की सलामी," फिर जमादार की सलामी दी, कहा, "यह जमादार की सलामी।"

फिर ख़ज़ाने के सिपाही से कहा, "अब इसको देखो।" रुस्तम की तरफ़ उँगली उठाई। रुस्तम काला पड़ गया था, झुका हुआ टूटा जा रहा था जैसे कोई बोझ संभाला न संभलता हो।

मुन्ना ने कहा, "यही पाप है रानी जी पर चढ़ाया हुआ। इसी को मारना है।"

फिर कहा। "सिपाही अब यह है, वर्दी यहीं मिलेगी।"

रुस्तम पूरी शक्ति से लिपटकर खड़ा हो गया।

ख़ज़ाने के सिपाही से मुन्ना ने कहा, "जबतक यह पाप नहीं भाग जाता, यह बात किसी से न कहना। कहने पर अच्छा न होगा।"

रुस्तम को तलवार देकर मुन्ना ने कहा, "यह शक्ति लो और पहरे पर चलो, हम आते हैं। अभी रानी जी का काम बाक़ी है। रानी जी की निगाह में अब तुम्हीं जमादार हो।"

रुस्तम ने तलवार ले ली और चला गया। मुन्ना ने जमादार को देखकर कहा, "सिपाही, इधर आओ।"

जमादार ने कहा, "हद हो गई।" ख़ज़ाने के सिपाही की त्योरियाँ चढ़ीं। पर कुछ कहते न बना। मुन्ना ने कहा, "यह सिपाही ही था। इसकी भी तौहीन हुई। तुम भी कुछ कर चुके होगे। रानी जी का कुछ नहीं, क्यों ?"

"इधर आओ" कहकर मुन्ना आगे बढ़ी। जमादार पीछे पीछे चले। दूसरी मंज़िल के सदरवाले ज़ीने के पास मुन्ना ने जमादार से

कहा, "घन्टे भर बाद बगीचे में आओ। छिपे रहना। वह औरत इस मुसलमान के बच्चे से फँसी है। देख लो। साथ गवाह भी लेते आना इसी सिपाही को। ख़ज़ाने का सदर फाटक बन्द कर देना, यहाँ कौन है? लेकिन कुछ कहना मत। तुम नहाने वाली सीढ़ी की दीवार की बग़ल में छिपे रहना और अपने आदमी को उसी तरफ़ के आम के पेड़ पर चढ़ा देना। तुम पहले आना। उस आदमी को आधे घन्टे बाद उतरने को कहना।

मालख़ाने में आकर रुस्तम से कहा, "यहाँ तो कोई आया-जाता नहीं। यह जमादार इस औरत से फँसा है। यह नहाने जायगी। नहाते वक्त मुझे भेज देगी। तभी दोनों अपना काम करेंगे। मैं तुझे भेजूँगी। लेकिन गवाह ले जाना तम्बू वाले पहरेदार को। खिड़की के पास उसको छिपा देना। वह कुछ कहे नहीं। फ़ैसला रानी जी करेंगी। वह गवाही देगा। जमादार लौटेगा तो वह देखेगा ही। खिड़की से आवाज़ दे देना, देख लिया।

"बिना देखे?"

"अरे गधा बाद को तो देखेगा। निकलेगा कहाँ से? और राह नहीं। तम्बू वाले को समझा देना।"

[१३]

मुन्ना ने आधे घन्टे तक विश्राम किया। फिर प्रणाम लेकर बुआ को पीछे लगाकर बाग़ीचे चली। बुआ का दो ही रोज़ की कवायत में इतना बुरा हाल हुआ कि सर पर जैसे मनों का बोझ लद गया हो; जैसे गन्दे पनाले से नहलाई गई हों। रिश्ते का गौरव कहाँ शायद

हो गया। मौसी का पहले ही अपमान हो चुका था, आज्ञा मिल चुकी थी कि ज़बान खोलने पर मठा डालकर सर घुटाकर गधे पर चढ़ाकर निकाल दी जायगी और साथ-साथ जीवन-चरित जनता को सुनाया जाता रहेगा; वह कैसी थीं; यह मालूम हो चुका है। अगर ख़ामोश रहीं तो समझ में आ जायगा कि अपमान उनका नहीं, उनके दुश्मन का हुआ है।

बुआ मुन्ना के साथ कोठी से उतरकर बाग़ीचे गईं। धूप प्रखर हो गई है, फिर भी सुहानी है। तरह-तरह की चिड़ियाँ चहक रही हैं। रंगबिरंगी सुरीली आवाज़ वाली; भँवरे, सुए; रुकमिनें, बुलबुल, पीली गलारें, कोयलें, पपीहे, कौए। स्वच्छ जल वाले विशाल सरोवर पर राजहंस तैरते हुए। कहीं-कहीं बगले ताक लगाये बैठे हुए। गिलहरियाँ टहनी से टहनी पर उछलती हुईं। धीमी-धीमी हवा चल रही है जैसे साक्षात् कविता बह रही हो। सरोवर पर हल्की-हल्की लहरियाँ उठती हुईं उस किनारे से इस किनारे आ रही हैं।

चारों ओर विशाल उद्यान १३-१४ हाथ की ऊँची चारदीवार से घिरा हुआ। सरोवर और चारदीवार के किनारे नारियल के पेड़। बीच में, अलग-अलग, निम्बू, नारंगी, सन्तरे, सुपारी, अनानास लीची, आम, जासुन, गुलाब जासुन, कटहल, बड़हर, बादाम, हड़ बहेड़े, आँवले, अनार, शरीफ़े, शहतूत, फ़ालसे, अमरूद आदि फलों के पेड़ एक-एक घेरे में लगे हुए। कितने फूले हुए, कितने पकते हुए, कितनों में बौर, कितने ख़ाली। एक तरफ़ फूलों का बाग़ीचा उजड़ा हुआ क्योंकि अब रनवास यहां नहीं। कहीं जङ्गली पेड़ों के झाड़।

बीच-बीच बेला, जुही, गुलाब, गन्धराज, नेवाड़ी, चमेली, कुन्द आदि उगे हुये जीने का व्यर्थ प्रयत्न करते हुए आज भी फूलों के अर्घ्य दे रहे हैं। पक्की सुथरी राहों पर वर्षा की काई जमी हुई है। कटीले झाड़ उग रहे हैं। एक तरफ़ चारदीवार में दरवाज़ा है। इस तरफ़ से भी ताला लगा है, उस तरफ़ से भी। इस तरफ़ की ताली जमादार के पास है, उस तरफ़ की माली के पास।

जिस तरफ़ जमादार को छिपने के लिये कहा था, उस तरफ़ मुन्ना नहीं गई। कहा, "आज चलो, इधर का बग़ीचा देख लो। एक रोज़ में पूरा देखा न देख जायगा।"

हवा के मन्द-मन्द झोंके लग रहे हैं। दुःख के बाद सुख का अनुभव हुआ। मुन्ना ने पूछा, "कैसी हवा है?"

"बहुत अच्छी।"

दिल इसी तरह खुला रक्खा करो। कोई दिलदार मिल जाय इस वक्त तो?"

"धत्, ऐसा नहीं कहा जाता?"

"अच्छा, सखी, हम से ग़लती हुई। पर हमारा-तुम्हारा तो हँसी मज़ाक़ का ही रिश्ता है?"

"हाँ, है।"

बुआ की आवाज़ क्षीण होकर निकली।

"अगर हमारा अपमान हो तो क्या वह तुम्हारा भी है?"

बुआ भीतर से जल गई। उस जलन को दबाकर कहा, "हाँ।" है।"

"हमारा इतना अपमान होता है कि हम किसी को सर पर नहीं रख सकते। बाद को सखी बनाकर, हँसाकर रिझाकर समझा देते हैं कि हम सखी हैं और ऐसी।"

"हमारे भाग," बुआ ने नम्रता से कहा।

"देखो, यह नारियल का पेड़ है। सरोवर के चारों ओर पहले इसीकी क़तार है। फिर उस किनारे से है। दोनों क़तारों में नारियल की बीसियों क़िस्में हैं। कच्चे नारियल को डाब कहते हैं। इसका पानी तुमने पिया है।"

"हमारे यहाँ यह पेड़ नहीं होता।"

मुन्ना आगे बढ़ी। कहा, "यह देखो, ये अनानास के झाड़ हैं।"

"अनानास क्या है?"

"यह लीची है।"

"हाँ, हमारे यहाँ आती है।"

मुन्ना जल्दी कर रही थी। कहा, "यह शरीफ़ा है।"

"यह भी हमारे यहाँ नहीं होता"

"ये सुपारी के पेड़ हैं। वह देखो, सुपारी फली है।"

बुआ ख़ुश हो गईं। मुन्ना बढ़ती गई।

"यह बादाम का पेड़ है।"

"वही जो ठंढाई में पड़ता है?"

मुन्ना ठंढाई नहीं जानती थी। बढ़ती गई। कहा, "यह गुलाब-जामुन है।"

"कौन? जो बाज़ार में बिकता है?"

"तो क्या आसमान पर बिकता है ?"

"वह तो मिठाई है।"

सुन्ना रुकी। गुलाब-जामुन कोई मिठाई है, यह उसको नहीं मालूम था। गुस्से में आकर कहा, "हम जैसा-जैसा सिखाते हैं, वैसा सीखो। सही है कि गुलाब-जामुन कोई मिठाई हो, पर यह फल है। कुल पेड़ तुम्हें दिखाएँगे, नाम बताएँगे, याद करके सीख लो। तुम्हें जो मिठाइयाँ जल-पान के लिये दी जाती हैं, उनमें कभी गुलाब-जामुन आई ?"

"हाँ, रोज़ आती है।"

"तुम्हें कुल क़िस्मों के नाम मालूम हैं ?"

"नहीं।"

"गुलाब-जामुन कौन सी है ?"

"काली-काली।"

"उसको यहाँ पान्तोआ कहते हैं।"

"वह हमारे वहाँ की—ऐसी नहीं।"

"यहाँ छेने की मिठाई बनती है। तुम्हारे उधर मैं जा चुकी हूँ। वहाँ कि मिठाई इन लोगों को कम पसन्द है। यहाँ घर का दूध, घर का छाना है, और होशियार हलवाई नौकर है, यहीं बनाता है, यहीं का घी। तुम कभी त्योरी न चढ़ाया करो। यह इतना बड़ा बाग़ीचा है। इसमें सैकड़ों क़िस्मों के फल हैं। तुम्हें आम, जामुन, अमरूद, जैसे थोड़े ही फलों की पहचान है। यह रानी जी की सास और पहले की रानियों का बाग़ीचा है। इनका बाग़ीचा और बड़ा है, पेड़ जैसे हीरे और नीलम-जड़े पत्थरों पर खड़े हों, उनके थालों की नई कारीगरी है।

फलों की भी सैकड़ों क़िस्में हैं। तुम जहाँ गई थीं, वह रानी जी का शयनागार नहीं। वहां बेशक़ीमत हज़ारों जिन्सें हैं। तुम्हें दस साल में भी कुल नाम न याद होंगे। जो बड़ी अनुचरी हैं, वह जानती हैं। १५ साल से कम की नौकरी वाली दासी का यह पद नहीं होता। वह जमादार की तरह दासियों से काम लेती हैं। तुम्हें नहीं मालूम कि बड़प्पन यहाँ नामों की जानकारी से है। रानी जी हज़ारों चीज़ों के नाम जानती हैं। कभी इनके मुँह न लगना। अब नहा लो। धोती घाट से सौ गज़ के फ़ासले पर उतारकर डाल दो और आधे घन्टे तक नहाओ। फिर निकलकर बिना किसी की परवा किये ऊपर चली आओ। तुम्हें तुम्हारा प्यारा मिलेगा। तुम्हें इसकी ख़्वाहिश है। शरमाओ नहीं। डटी खड़ी रहना। साड़ी बिना लिये चली आना। हमें दूसरा काम है। ख़बरदार हुक्म की तामील सीखो। बाद को समझ में आएगा कि रानी जी कितनी अपनी हैं। उनका भी हाल मालूम होगा। सर चढ़ाचढ़ी तब न होगी जब दोनों एक। उधर जाओ।"

मुन्ना बिजली की तरह मालख़ाने में गई और रुस्तम से कहा। रुस्तम तम्बू के पहरेवाले के साथ तैयार हो गया। और ज़ीने से जल्द-जल्द उतरकर अपनी जगह पर, खिड़की के दरवाज़े पर गया। उसका साथी एक अँधेरी कोठरी में छिप रहा। रुस्तम अवसर ताक रहा था। ख़ज़ाने का सिपाही राजाराम आम के पेड़ पर घने पत्तों वाली डाल के बीच बैठा देख रहा था।

रुस्तम के जाने के साथ मौसी को बुआ के शयनागार में भेजकर और जबतक बुआ न आएँ वहीं रहने के लिए कहकर मुन्ना ख़ज़ाने

की तरफ़ बढ़ी। पैर की चाप सँभालकर दौड़ी। ज़ीने से उतरकर देखा, फाटक बन्द है। कमर से एक ताली निकाली, जिसे संदूक की ताली बताया गया था उसको देखा। गुच्छे की तालियों से उसका बाहरवाला ताला खोला, फिर अपनी ताली से भीतरवाला। खोलकर देखा, नोटों के बन्डल थे। कुल के कुल बाहर निकालकर डाल लिये। नोट नम्बरी भी थे और दस-पांच रुपये वाले भी। जल्द-जल्द संदूक बन्द कर दिया। तालियों का गुच्छा खूँटी से लटका दिया और अपनी ताली कमर की मुर्री में लपेट ली। नोटों के बन्डल ज़ीने के तले वाली अँधेरी कोठरी में डाल दिये। भगी हुई ऊपर गई। बुआ के बरामदे से देखा, वह नहाकर निकल रही थीं। जैसा कहा था, वैसी ही थीं।

रुस्तम तके हुए था। इसी समय निकलकर कुछ क़दम बढ़ा और चिल्लाकर कहा, "चोर पकड़ लिया।"

बुआ की लाज दूर हो गई। वह तनकर खड़ी हो गईं।

रुस्तम आवाज़ लगाकर भगा हुआ कोठरी में घुस गया। मुन्ना दूसरी मंज़िल की खिड़की के पास खड़ी होकर चली आने के लिए हथेली का इशारा करने लगी। बुआ चलीं।

राजाराम पेड़ से देख रहा था। मुलुककर जमादार ने भी देखा था। बुआ के जाने के कुछ अरसे के बाद जमादार और राजाराम चले। इनसे पहले मुन्ना ने नीचे उतरकर रुस्तम को आवाज़ लगाई, अगर वहाँ हो। उसके आने पर कहा, ख़ज़ाने में चलकर बैठो और जमादार के आने पर कहो,—"हमारी जमादारी का हुक्म है, तुम बदमाश हो। हमारी जगह पर जाओ।"

[१४]

जमादार जटाशङ्कर और राजाराम जब ख़ज़ाने को लौट रहे थे, तब आँगन से देखा कि फाटक खुला हुआ है और कुर्सी पर रुस्तम बैठा हुआ है। जमादार को बुरा लगा। राजाराम की भी भवें चढ़ गईं। रुस्तम जानकारी की निगाह से देखता हुआ मुस्कराता रहा; जमादार पास आये तो डाँटकर कहा, "तुम बदमाश हो, रानी जी ने तुम्हें बरख़ास्त किया है। अब हम जमादार हैं। हमको उसी तरह सलाम करोगे और हमारे पहरे पर रहोगे। इसी वक्त चले जाओ, आँख से ओझल हो जाओ।" रुस्तम कुर्सी पर बैठा हुआ आराम से टाँगें हिलाने लगा। मुसलमान की पूरी शान में आकर कहा "अब तुमको मालूम होगा कि सिपाही पर क्या आफ़त गुज़रती है जब वह अफ़सर और जमादार को सलाम करता है।"

जमादार के मुँह में जैसे ताला पड़ गया। वह हक्के-बक्के हो गये।

"उल्टा चोर कोतवाल को डाटे।" राजाराम ने डपटकर कहा। "उठ, नहीं तो ठोंकता हूँ अभी।"

"तू, नीम-बदमाश है, इसका साथी है, वहाँ तू क्यों गया?"

"तुझको पकड़ने। मैं गवाह हूँ।"

"तू गवाह है, बदमाश, नंगी नहा रही थी, तब तू देख रहा था या नहीं? और बहुत कुछ किया है, तुम दोनों ने।"

"हमको सब मालूम है।" नेपथ्य से मुन्ना ने कहा।

"तो फिर अब तुम्हीं फ़ैसला कर दो।" जमादार ने काँपते हुए कहा। मुन्ना चुप हो गई! रुस्तम ने कुर्सी नहीं छोड़ी।

"बदमाश कहीं का। फ़ैसला कर दो!"

राजाराम कुर्सी के पास आ गया। "उठता है या नहीं?"

तुराब तम्बू का पहरेदार था। दोमंज़िले की खिड़की से नीचे को देखते हुए कहा, "ख़बरदार, राजाराम, मैं भी गवाह हूँ। तुम दोनों बदमाश हो। जमादार रुस्तम पकड़ने वाले हैं। मैं उनके साथ था।"

"तुम यहाँ से क्यों गये?" राजाराम ने पूछा।

"तुम यहाँ से क्यों गये?" तुराब ने डाँटा।

"हम बदमाश पकड़ने गये।"

"बदमाश पकड़ने नहीं गये, बदमाशी करने गये। उस बगीचे के अन्दर मर्द के जाने का हुक्म नहीं, यह सब को मालूम है। तुम गये। जमादार रुस्तम भीतर नहीं गये।"

इसी समय मुन्ना आ गई। कहा, "रानी जी का फ़ैसला सब को मंज़ूर होगा।"

सब ने समस्वर से कहा, "हाँ, होगा।"

मुन्ना ने कहा, "राजाराम आपस में लड़ो नहीं, अपना काम करो।" फिर जमादार से कहा, "जटाशङ्कर, इधर आओ।"

जटाशङ्कर को उसी जगह ले गई जहाँ पहली बातचीत हुई थी। रुस्तम मुस्कराता हुआ बैठा रहा। तुराब ने कहा, "भाई, आपकी किस्मत खुल गई। हमारा ही पहला सलाम है।" रुस्तम ने टाँगें हिलाते हुए कहा, "हमको याद रहेगा।" राजाराम ने जमादार को डिसमिस हुआ जानकर पहरे की वर्दी पहनते और तलवार बाँधते हुए कहा, "लेकिन जमादार का कोई क़सूर नहीं।"

"जमादार तो हम हैं" रुस्तम ने स्वर चढ़ाकर कहा, "हमारा कौन सा क़सूर है ?"

अड़गड़े में पहुँचकर मुन्ना ने पूछा, "जटाशङ्कर, क्या तुम अब भी हमको चाहते हो ?"

जटाशङ्कर राँड़ की तरह रोने लगे।

"एक बात" मुन्ना ने कहा, "तुम मुझे चाहते हो या जमादारी ?"

"अरी, बड़ी बेइज़्ज़ती हुई; हमारी जमादारी रहने दे।"

"अब तुम समझे, हम समझ जाते हैं, कौन कैसा है। तुम हमारी तरह उतर नहीं सकते, यह तुम्हारा ख़याल था; मगर तुम इतना उतर जाओगे कि यहाँ जमना दुश्वार होगा। जब किसी को पकड़ो तब उसीको पकड़े रहो, यह क़ायदा है। तुम समझे थे, मैं तुम्हारी रखेली की तरह रहूँगी; अपनी स्त्री बनाकर तुम मुझको ख़ुश किये रहोगे। मैं जैसी औरत हूँ, मैं तुम्हें रखवाले की ही तरह रख सकती हूँ; मगर राजा ही बनाये रहती। यह न समझना कि मैं ग़रीब हूँ। मैंने कहा, मैं रानी हूँ। तुम्हारा यह ख़याल कि एक औरत को रखेली बनाकर रहने वाला वैसा ही ब्राह्मण है जैसे तुम, बिलकुल ग़लत है। हमारे दिल में ब्राह्मण का सम्मान है, पर चैतन्यदेव जैसे ब्राह्मण का, जो बाद को वैष्णव हो गये, और सब को अपनी तरह का आदर दिया। मैं वैष्णव हूँ। तुम पर मुझे प्यार नहीं होता, दया आती है। तुम इतने बड़े मूर्ख हो कि अपनी तरफ़ से कुछ समझ नहीं सकते। ख़ज़ाने का जो जमादार होगा, कुछ दिनों में उसकी जान की आफ़त आयेगी।"

जमादार काँपे। आँखों से तरह-तरह की शङ्काएँ भय, उद्वेग, पाप, अत्याचार, क्षुद्रता, हृदयहीनता आदि निकल पड़ी। राज़ लेने के लिए मित्र बनने की कोशिश करते हुए कहा, "क्यों?"

"तुम हमारे आदमी हो?"

जमादार की जान चोटी पर आ गई। कहा—"अब जो कुछ भी हो, हम हुज़ूर के आदमी हैं।"

"अब तुम समझे। अच्छा बताओ, अगर ख़ज़ाने का रुपया चुरा गया हो?"

जटाशङ्कर को जान पड़ा, वज्र टूटा; धड़ाम से गिर पड़े। "अब सही-सही मरा।—मुझको भगा दो। दया करो, दया करो, देवी, कहीं का नहीं रहा।"

"यही रुपया तुमको देना चाहती हूँ, लेकिन तुमको हमारी जाति और हमारी दासता लेना पड़ेगा।"

"हमको रुपया नहीं चाहिए।" तनकर जटाशङ्कर ने कहा।

"यही तुम्हारा बड़प्पन है। हम इसीको प्यार करते हैं। मेरे प्यारे, मुझे चूम लो।" मुन्ना ने जीभ लपलपाई।

जटाशङ्कर को जान पड़ा, काल है। ख़ज़ाने की चोरी की बात सोचते हुए तनकर सिपाहियाने स्वर में कहा—"ग़लत बात है; ख़ज़ाने की चोरी नहीं हो सकती।"

"क्यों?"

"अब तू हो गया," कहकर फिर उन्होंने एक कड़ी निगाह गाड़ी।

"यह जो जमादार बना है, इसीने चुरवाया है, यह रानी का प्यारा है।"

"झूठ बात, हम रपोट करेंगे।"

"क्यों रपोट करोगे?"

"यही, तू जो कुछ कहती है।"

"तुमको और तुम्हारे पहरेदार को ये दूसरे पहरेदार पकड़े हुए हैं कि तुमलोग बदमाश हो। मैं इनकी गवाही गुज़ार दूँगी। तुम ठोंके जाओगे, नौकरी से भी हाथ धोओगे।"

"हम कहेंगे, ख़ज़ाना चुराने का इसने जाल किया है। हमसे पहले ऐसा-ऐसा कह चुकी है।"

"ख़ज़ाना चुरा गया है, तुम्हें इसका क्या पता? अगर न चुरा गया हो—?"

जमादार ने करुण दृष्टि से देखा। मुन्ना ने कहा—"अच्छा, पाँच-दो लाख दे दिये जायँ तो तुम क्या करो?"

"हम ख़ज़ाने में रखा देंगे।"

"कैसे?"

जमादार फिर हक्के-बक्के हुए।

मुन्ना ने कहा—"जमादारी चाहते हो तो चलो, बैठो, लेकिन याद रखना, जिस दिन ख़ज़ानची आयेगा, उस दिन तुम्हारा कोई कर्म बाक़ी नहीं रहेगा। बात मानोगे तो बचे-बचाए चले जाओगे। चोरी और ख़ज़ाने का भेद तबतक नहीं खुल सकता जबतक रानी का माल वापस नहीं आ जाता।"

"रुस्तम की वर्दी पहनकर रुस्तम की जगह पहरा दो और रुस्तम को जमादार मानो।" कहकर मुन्ना नये गढ़ की तरफ़ चली।

जमादार जटाशङ्कर ख़ज़ाने आये। वहाँ से मालख़ाने गये। रुस्तम की वर्दी पहनी। बाक़ी रहा थोड़ा समय पहरा देने लगे।

पहरा बदला। दूसरे सिपाही आये। बात फैली कि रुस्तम जमादार हो गया। रानी जी ने बनाया है। जमादार और राजाराम बदमाशी में पकड़े गये हैं।

जटाशङ्कर मुँह दिखाने लायक़ न रह गये। कुल सिपाही बराबरी का दावा करने लगे और उन्हीं के दिल से क़सूरवार क़रार देने लगे।

राजाराम भी मुरझाया था। फ़ुर्सत के वक़्त एकान्त में जमादार से बातचीत करता हुआ राज लेने लगा—"जमादार, बड़ा अपमान हुआ। अब तुम सिपाही हो, रुस्तम जमादार। हुक़्म राजा का नहीं। माजरा समझ में नहीं आता।"

जमादार ने पूछा—"तुमको क्या जान पड़ता है?"

"या तो तुम फँसे थे, इस औरत ने झूँठमूँठ हमको भी फँसाया या बुआ की तौहीन की गई और करने वाला मुसलमान, इसमें राजा की राय हरगिज़ नहीं मालूम देती। बुआ राजा की मान्य की मान्य हैं।"

"इसके बाद इस मुसलमान का हाल क्या होता है, देखना। राजा एक मुसलमान तवायफ़ लिये ही पड़े रहते हैं। इनके यहाँ बस इतना ही सम्बन्ध है। रानी का हाथ है, ऐसा हमारा विचार है। यह भी सम्भव है कि ख़ज़ाने की चोरी रानी ने कराई हो। बोलो मत,

इसमें बड़ा भारी भेद है। किसी को मालूम नहीं हो सका। रुस्तम का आगे चलकर बुरा हाल होगा। तुमको हम दूसरी जगह बदलने की कोशिश करेंगे।"

बात आग की तरह फैली।

[१५]

"बाप से यूसुफ़ को एजाज़ का राज़ मिल चुका था। जब एजाज़ कलकत्ता रहती थी, खोदाबख्श खज़ानची तनख्वाह के रुपये लेकर कलकत्ते-वाली कोठी में ठहरता था और वहीं से तनख्वाह चुकाकर रसीद लेता था; एजाज़ को डाकख़ाने के ज़रिये रुपये नहीं भेजे जाते थे; अली को यह खबर थी। उन्होंने लड़के को भेद बतलाया था।

इधर, राजा का रानी के पास आना-जाना घटा कि दासियों, दूतियों और तरफ़दारों से पता लगवाना शुरू हुआ। खोदाबख्श इस पते पर आ गये। ऐसे कई और। रानी के तरफ़दारों की चालें मामूली खज़ानची खोदाबख्श, लालच और रानी के प्रेम में न काट सके; जाल में कुञ्जी डाल दी। प्रेम की कहानी बहुत-कुछ पहली जैसी, इसलिए घटना और दुर्घटना का बयान रोक लिया गया।

इसी समय उनके भाग्य के आकाश पर दूसरा तारा चमका। एजाज़ के मकान से चलकर यूसुफ़ राजधानी आये और बाज़ार में ठहरे। भेस बदले हुए थे। प्रभाकर को देखकर चौंके; दूकान में एक जाकट सिला रहे थे। शाम के बाद से प्रभाकर का पता न चला।

मैनेजर ने बुलाया है, एक अजनबी आदमी से कहलाकर राह

पर मिले और मैनेजर ने भेजा है कहकर भाव ताड़ने लगे। खज़ानची की कुञ्जी हाथ से छुट चुकी थी, कलेजा धड़का। डरकर सँभले।

"हम आपका भला कर सकते हैं" यूसुफ़ ने कहा।

खोदाबख्श रानी की मैत्री की ताक़त से आगन्तुक को देखते रहे।

"आपका राज़ बिगड़ा है, मान जाइए", यूसुफ़ ने कहा।

खोदाबख्श का दिल बैठ गया। मैनेजर उससे बड़ा है; कुछ गड़बड़ मालूम हुई हो, सोचकर दहले। उठा कि कह दें, पर सँभाल लिया।

यूसुफ़ ने कहा—"आपको अब मैनेजर के पास न जाना होगा, हमीं उनकी मारफ़त आपसे मिलने आये हैं। उनसे हमारा हाल मालूम करने की हिमाकत न कीजिएगा। हम सरकारी। आप हमसे फ़ायदा उठा सकते हैं? फिर हम भी मुसलमान हैं।"

खज़ानची को बहुत खुशी न हुई, क्योंकि एक फ़ायदा अभी पूरा-पूरा नहीं उठा पाये थे। फिर भी, यह सोचकर कि आगे क्या आने-वाला है और खुदग़र्ज़ अपनी ओर से फ़ायदे में ला रहा है, बात सुन लेनी चाहिए।

यूसुफ़ जानते थे, कहकर भी राज़ निकाला जाता है; अगले सवाल से काम हासिल होगा। कहा, "हमें आपसे राज़ मिलता रहना चाहिए। हम आपकी निजी उलझनों की मदद करेंगे।"

खुदाबख्श को जी मिला। पूछा, "जनाब का निजी और भी कुछ अगर मालूम किया जा सके?"

"बाद को, जब गठ जाय। आप समझें, हम कोई।"

"माजरा क्या है?"

"वह यह कि एजाज़ से सरकार की तरफ़ की सिखाई औरत भेजकर यह मालूम करना है कि क्या हालात है; बस। अपनी तरफ़ से आप भी पता लगायें कि सरकार के खिलाफ़ क्या काररवाई है। मुसलमान और नीची-क़ौम-वाले हिन्दू मिट्टी में मिल जायँगे। आप याद रखिए। पहिले किसी नीची-कौम-वाले को फँसाइये।"

खज़ानची को जँच गई। फड़ककर कहा, "कुछ पता भी आपका...."

"अभी नहीं। अस्सलाम वालेकुम्। ख़याल में रक्खें।"

"वालेकुम्।"

प्रभाकर बैठा था। यूसुफ़ ने अतिथि-भवन की बैठक में झाँका। कहा, "आपसे मिलने के लिए मैनेजर साहब खड़े हैं।"

प्रभाकर चौंका। देखकर चुपचाप बैठा रहा। कुछ देर ठहरकर यूसुफ़ भीतर चलकर कुर्सी पर बैठे, कहा,—"मैं उनका नौकर नहीं। खड़े हैं, कहा, कह दिया, अब आप समझें।"

प्रभाकर ने रीढ़ सीधी की और बैठा हुआ टुकुर-टुकुर देखता रहा।

दिलावर बाहर पहरेदार के पास बैठा था। यूसुफ़ को घुसते हुए देखा कि गारद से एक आदमी बुला लाया और लगा दिया। यूसुफ़ की निगाह चूक गई।

"जनाब का दौलतखाना?" यूसुफ़ ने पूछा।

"जनाब का शुभ नाम?" प्रभाकर ने पूछा।

"नाचीज़ हुज़ूर की खिदमत में" यूसुफ़ ने जवाब दिया।

"रहमदिली?" प्रभाकर ने, मुस्कराकर कहा।

"रहमदिली—अलअमाँ।" यूसुफ़ ने दोहराकर दोस्ती जताई।

प्रभाकर दबा। उभरकर पूछा, "किस अन्दाज़ से हैं?"

"सिर्फ़ दोस्ती।"

प्रभाकर ने हाथ बढ़ाया।

"यों नहीं।" यूसुफ़ ने बड़प्पन रक्खा।—"आप कैसे तशरीफ़ ले आये।"

"यह तो आपको मालूम हो चुका है।"

"कहाँ?"

"यह भी मालूम होगा।"

"कुछ भी नहीं बदला हुआ नज़र आया?"

"आपका मतलब?"

"मैने कहा, कुछ आपसे हल हो।"

"आप तो जवाब नही देते।"

प्रभाकर चुप हो गया।

"आप बड़े सयाने। पर खुलकर रहेगा।"

प्रभाकर को ताव आया, पर सँभाल लिया।

इसी समय दिलावर घुसा। यूसुफ़ के पीछे आदमी लगा रहा।

"चलिए।" दिलावर ने प्रभाकर से कहा।

प्रभाकर चले।

दिलावर ने यूसुफ़ से पूछा, "जनाब का कहाँ से आना हुआ?"

"मैनेजर साहब के कहने से।" यूसुफ़ साथ-साथ चले।

दिलावर कुछ न बोला। प्रभाकर और दिलावर मुड़कर एजाज़ वाले महल की तरफ़ चले, यूसुफ़ दूसरी तरफ़ से अपने डेरे की ओर।

यहाँ आना है, यह पहले से जानते थे। दिल में कोई धड़कन न थी।

पीछे-लगा आदमी आँख बचाकर चला। यूसुफ़ ताड़ न पाये, दिल में खटक न थी। आदमी ने यूसुफ़ की कोठरी का पता लगा लिया।

[१६]

कमरे में सनलाइट जल रही थी। राजा साहब अपनी बैठक में थे। मसनद लगी हुई। गाव-तकिये पड़े हुए। एक तकिये का सहारा लिये हुए प्रतीक्षा कर रहे थे कि बेयरा सिपाही से खबर लेकर गया। कहा, प्रभाकर बाबू आये हुए हैं। राजा साहब ने आदरपूर्वक ले आने के लिए कहा। दिलावर बाहर रास्ते के पहरे पर रह गया, प्रभाकर उसी पुलनुमा राह से सरोवर की कोठी को चले। कोठी में पहुँच कर राजा साहब का कमरा, अन्दर जाने के लिए, बेयरा ने प्रभाकर को दिखा दिया। प्रभाकर गये। राजा ने उठकर स्वागत किया और नवयुवक को पास बैठा लिया। स्नेह से कहा, "हम आपसे उम्र में···"

प्रभाकर सर झुकाये रहे।

"बड़ी ज़िम्मेवरी है।" राजा साहब ने स्वागत कहा।

प्रभाकर स्थिर भाव से बैठे रहे।

"आपका प्रबन्ध हो गया है। आप वहाँ चलकर रह सकते हैं।"

प्रभाकर को साहस से प्रसन्नता हुई।

"आप तो हमारे गवैये के रूप से हैं।"

"गा लेता हूँ," प्रभाकर ने सीधे स्वर से कहा।

"कुछ पान ?"

"जी नहीं।"

"भोजन तो कीजिएगा ?"

"जी हाँ।"

"मांस-मछली ?"

"हाँ।"

"आप कुछ सुनिए और कुछ सुनाइए।"

राजा साहब ने एजाज़ के आने के लिए खबर भेजी, साज़िन्दे भी बुला लाने को कहा। फिर प्रभाकर से ग़प लड़ाने लगे।

समय पर साज़िन्दे आ गये। एजाज़ भी तैयार हो गई। साज़ बाहर से मिलाकर लाये गये। प्रभाकर देखते रहे।

प्रभाकर को राजा साहब नाप न सके, कितना गहरा है।

एजाज़ तैयार होकर आई। राजा साहब को सलाम किया और बग़ल में एक तकिया लेकर बैठ गई। प्रभाकर को देखा, फिर देखा, फिर चुपचाप राजा साहब से पूछा, "आपकी तारीफ़ ?"

उसी फिसफिसाहट से राजा साहब ने जवाब दिया, "आपके खान-दान के। गवैये हैं। देखा जाय, कैसे हैं।"

"तगड़े जान पड़ते हैं।"

"शिक्षित हैं।"

"यहाँ कैसे ?" एजाज़ को शक हुआ।

"गायेंगे, रहेंगे। जब चाहेंगे, चले जायेंगे।"

एजाज़ को राजा साहब की बात का विश्वास न हुआ, उनके

स्वर में ऐसा ही, कटता हुआ आदमी मिला। खामोश हो गईं। एक दफ़े कमर सीधी की, फिर एकटक देखती हुई बैठी रही।

प्रभाकर ने मुद्रा को और अच्छी तरह देखा, दिल में गाँठ ली।

साज़िन्दे नौकर, रह-रहकर एक नज़र राजा साहब को देख लेते थे।

राजा साहब की कठिन अवस्था हुई। न एजाज़ को गाने के लिए कह सकते थे,—अविश्वास की ऐसी प्रतिक्रिया हुई, न प्रभाकर को, प्रभाकर का गुरुत्व ऐसा ग़ालिब था।

उन्होंने नौकर रखने के भाव को काफ़ी मुलायम करके एजाज़ को देखा। एजाज़ ने अनुभव किया कि वह दब गई। बड़ा बुरा लगा। अपने से घृणा हुई। पर दबाकर, सैकड़ों पेंच कसने और सुलझाने वाली मुसकान से प्रभाकर को देखकर कहा, "जनाब ही क्यों न श्रीगणेश करें?"

प्रभाकर समझा। नम्रता से स्वीकार कर लिया। पूछा, "क्या गाऊँ?"

"जो जी में आये, कोई ऊँचे-अङ्ग-वाली।"

तानपूरा स्वर भरने लगा। एजाज़ के गले से मिलाया हुआ।

राजा साहब ने कहा, "आपके स्वर में नहीं मिला। दिक्क़त हो तो अभी ठहर जाइये।"

एजाज़ कुछ और दबीं। प्रभाकर ने कहा, "चल जायगा। घटा लूँगा।"

"अच्छा, मैं ही बिसमिल्लाह करती हूँ।" एजाज़ मसनद के बीच में आ गईं। दिल को चोट लग चुकी। पूरा-पूरा व्यवसाय-वाला रुख

लेकर बैठी। साज़िन्दे खुश होकर अनुपम रूप देखने लगे। प्रभाकर ने भी देखा, जैसे पत्थर को देख रहा हो। एजाज़ की हार्दिक सहानुभूति उस क्षण कलाकार प्रभाकर के लिए हुई। भरकर, राजा साहब से बदली हुई, एजाज़ ने अलाप ली।

प्रभाकर मुग्ध हो गया। चुपचाप बैठा खयाल सुनता रहा। तानों की तरहें दिल में समा गईं। साज़िन्दे काम करते हुए प्रभाकर को देख लेते थे। राजा साहब निर्भीक क़द्रदाँ की तरह बैठे रहे।

खयाल गाकर एजाज़ हट गई। इसका मतलब था, अब नहीं गायेगी। राजा साहब समझकर खामोश रहे। साजिन्दे उसको कुछ कह नहीं सकते थे। प्रभाकर आगन्तुक।

एजाज पहले की तरह राजा साहब की बग़ल में नहीं बैठी। गाने के लिए प्रभाकर का जी उठ नहीं रहा था। फिर भी रस्म पूरी करनी थी। शिक्षित घराने का शिक्षित युवक सुकण्ठ और सङ्गीतज्ञ था। दर्रा छोड़कर उसने धमार गाया। काफ़ी जमी। राजा साहब उछल पड़े।

एजाज़ समझ गई, यह पेशेदार गवैया नहीं। इसका राज़ लेना चाहिए, दिल में बाँधा। डटी बैठी रही। कलकत्ते-वाली, सरकार के आदमी से हुई, बातचीत याद आई। धीरज हुआ। पर राजा की तरफ़ से सदा के लिए पेट में पानी पड़ गया।

राजा साहब ने देखा, प्रभाकर की तारीफ़ से एजाज़ का दिल छोटा नहीं पड़ा। वह और बढ़कर बोले, "अभी आप थके-माँदे आये हैं।"

"अच्छा, कहाँ से ?" एजाज़ ने पूछा।

"क्यों, साहब ?" राजा साहब ने प्रभाकर को देखा।

"वर्धमान से" प्रभाकर ने कहा।

"जनाब का नाम ?" एजाज़ ने पूछा।

"प्रभाकर।"

"उस्ताद हैं ?"

प्रभाकर ने साधारण नमस्कार किया।

"अरे भाई, बोस साहब बैरिस्टर हैं, उनके भाई हैं। आये हैं।

एजाज़ और दूर तक गाँठ गई।—"कुछ रोज़ रहेंगे, यानी बहुत कुछ सुनने को मिलेगा। राजा साहब का दरबार है।" खिलखिला-कर हँसी।

आज के बर्ताव से एजाज को इच्छा हुई, दूसरे दिन कलकत्ता रवाना हो जाय और नौकरी छोड़ दे, मगर बड़ा रहस्यमय रूप सामने देखा, जिसको खानदानी पढ़ी-लिखी वेश्या छोड़कर न भगेगी; आखिरी दम तक सुलझाएगी।

[१७]

राजा साहब ने देखा कि एजाज़ का मिजाज़ उखड़ा-उखड़ा है, उन्होंने साज़िन्दों को रुख़सत कर दिया। प्रभाकर को भोजन कराना था, इसलिए बैठाले रहे। काट कुछ गहरा चल गया था; यानी एजाज को राजा साहब चाहते थे, पर दिल देकर नहीं; अगर दिल देकर भी कहें तो भेद बतलाते हुए नहीं। सिर्फ़ कला-प्रेम था या

रूप और स्वर का प्रेम जो रुपये से मिलता है। यही हाल एजाज़ का। उसके पास धन था, रूप और स्वर भी, पर तारीफ़ न थी, यह दूसरों से मिलती थी, और उन्हीं लोगों से जो रूप, स्वर और यौवन खरीद सकते हैं। षोड़शी होकर जिस समूह में वह चक्कर काटती थी, वह कैसा था, आज प्रभाकर को देखकर उसकी समझ में आया। वह बड़प्पन कितना बड़ा छुटपन है, राजा साहब के बर्ताव से परिचित हुआ। प्रभाकर को न देखने पर वह समझ न पाती कि आदमी की असलियत क्या है। आजतक जैसे उस छुटपन वाले बड़प्पन से उसका छुटकारा न था। आज के परिवर्तन के साथ प्रभाकर का प्रकाश उसके दिल में घर करता गया। खेल और मज़ाक़ दिल नहीं। किसीको बनाना और किसीको बिगाड़ना दिलगीरी नहीं। सौदा है। जो कुछ भी अबतक उसने किया वह एक बचत थी। असलियत क्या थी, कहाँ थी, वह नहीं समझ पाई। आज भी नहीं समझी। सिर्फ़ उसे दिल नहीं माना। टूटी जा रही थी। असलियत असलियत से मिल गई। प्रभाकर की जैसी शालीनता उसने किसी में नहीं देखी। जो बातचीत सुन चुकी है, उससे अगर इस आदमी का तअल्लुक़ है तो ग़ज़ब का है यह आदमी।—"स्वदेशी!"

एजाज़ रहस्य मालूम करने के लिए उतावली हो गई। प्रभाकर ने जो गाना गाया, उसमें प्रदर्शन न था, किसीकी परवा नहीं, फिर भी किसीसे नफ़रत नहीं। यह अच्छा गाना जानता है, पर अच्छों का प्रभाव नहीं रखता। गाने के सम्बन्ध में चढ़ी रहकर भी एजाज़ चढ़ी न रह सकी। राजा साहब से जो दुराव हुआ था, वह उनके प्रभाकर के लिए

हुए प्रेम के कारण था। अब वह एक हार बनकर रह गया। उसको खुशी हुई।—"एक कुंजी उसके पास भी है।"

अपमान को भूलकर उसने राजा साहब से कहा, बड़ा रूखा-रूखा लग रहा है—"मत्रकशी ?"

"क्या बुरा ?"

राजा साहब जो बाज़ी लगा चुके थे, वह प्रभाकर को बाहर का आदमी नहीं समझ सकती थी।

एजाज़ का इशारा मिलते ही गुलशन शीशा और पैमाना ले आई। उसी तरह ढालकर एजाज़ को दिया। एजाज़ ने राजा साहब को। प्रभाकर के लिए लेमनेड आया। एक प्याला पिलाकर दूसरा भरा, तीसरा भरा। राजा साहब खाली करते गये। एजाज़ भी साथ देती गई। पूरा नशा आ गया। भोजन की थाली आने लगी। तीनों भोजन करने लगे।

"प्रभाकर बाबू से दो गहरे तअल्लुक़ात हैं।"

"हाँ।" राजा साहब ने कहा।

"हमारे कौन-कौन से फ़ायदे आपसे हैं, हमें मालूम हो तो हम भी साथ हो जायँ। बात हम तीनों की है। हमारी मदद काम कर सकती है।"

"इसमें क्या शक़।"

प्रभाकर ने मधुर स्वर से पूछा, "आपके ज़मींदारी है ?"

राजा साहब को प्रश्न बहुत अच्छा लगा। वह स्वयं इतना साधारण प्रश्न नहीं कर सकते थे।

एजाज़ को जवाब देते हुए झेंप हुई। कहा, "अब हमें आप लोगों के सवाल का जवाब देना पड़ता है। पहले हमीं जवाब लेते थे। आते-जाते हमीं पहले बोलते थे। हिन्दू जवाब देते थे।"

"इसी डर से हमने हुज़ूर से बातचीत नहीं की कि हुज़ूर खुद पूछें।" राजा साहब ने चुटकी लेते हुए कहा।

"ऐसी बात का हमें कोई खयाल न था!"

"कुछ तो होगा ही।" राजा साहब डटे रहे।

"वह बहुत अनुकूल नहीं।"

"हमारे ?"

"हाँ।"

"आपके ?"

"राज़ देते रहें तो सरकारी तौर से हो सकती है।"

"राज़ तो आपने हमें दे दिया।"

एजाज़ प्रभाकर को देखती रही। प्रभाकर ने कहा, "अब हमारा फ़र्ज़ है, हम आपकी सेवा करें। अभी इतना ही कि हम स्वदेशी।"

"इस राज़ से हमारी सरकार के यहाँ क़द्र बढ़ सकती है।"

राजा साहब की आँखें झप गईं।—"इससे दिल का हाल नहीं कहा।"

एजाज़ प्रभाकर से सुनने के लिए बैठी रही। प्रभाकर ने कहा, "मैं स्वदेशी का सक्रिय हूँ। सूत, चरखा, करघा, कपड़े तथा ग्रामीण वस्तुओं के प्रचलन का बीड़ा उठाया है। काम करता हूँ। राजा साहब की सहानुभूति है।"

"ज़मींदार छोटे-मोटे हम भी हैं। आपसे हमारा स्वार्थ है, हम समझते हैं। हमारे यहाँ एक डाट लगा दी गई है। हमसे आपका उपकार हो सकता है। कुछ राज़ हमें काम करने के लिए दीजिएगा।"

राजा साहब बहुत खुश हुए। कहा, "हमारा एक ही रास्ता है।"

"हम बातें आपसे नहीं कर सकते, आशा है। आपने जो कुछ कहा है, उसका कुछ प्रमाण भी हमें चाहिए। यहाँ हम कपड़े के केन्द्र मज़बूत करेंगे। व्यवसाव बढ़ायेंगे। आपको अर्थ और अनर्थ के सम्बन्ध में काफ़ी जानकारी है।"

"उस तरफ़ से तो कुछ मिलेगा नहीं।" एजाज़ ने कहा।

"इस तरफ़ का भी कुछ न जाना चाहिए। इतना खयाल रखिए, उनके आने के दिन की बातचीत मिल जानी चाहिए।"

"मिलेगी। ज़मींदार तो हम भी हैं, इतना काफ़ी है। कोई दूसरी मदद?"

"क्या पार्टी को दस्तखत करके नाम दे सकती हैं?"

"यह सोचूँगी, शायद नहीं। पहले की बात होती तो हिम्मत बाँधकर देखती।"

"पुलिस या खुफ़िया का राज़ यहाँ का है या कलकत्ता का?"

"कलकत्ता का"

"एक आदमी यहाँ आया है, आपको बता रहा हूँ।" प्रभाकर ने यूसुफ़ के चेहरे का वर्णन किया।

"ऐसा ही आदमी वह भी था। पहले ही पहल आया था।" एजाज़ ने कहा।

"आप को यह आदमी कहाँ मिला ?"

"गेस्ट-हौस में।"

"किसी दूसरे ने भी देखा ?"

"हाँ, उसने देखा जो हमारे साथ है।"

एजाज़ बड़ी बड़ी आँखें निकालीं।

राजा साहब ने खिदमतगार को भेजा। कुछ ही अरसे में दिलावर आया। भीतर बुलाकर राजा साहब ने पूछा, "आपके पीछे किसी को देखा ?"

"राज़ मिल गया है। बाज़ार में ठहरा है। बाहर का आदमी है।"

"जहाँ-जहाँ जाय, आदमी लगा रक्खो, देखे रहे, मालूम कर ले, असली कौन है।"

"जो हुक्म।" कहकर दिलावर बैठक छोड़कर चला।

"हमारे लिए अच्छा होगा, अगर आप कलकत्ता चली जायँ, आप इस तरह हमारी ज्यादा मदद कर सकती हैं। यह आदमी आपके कारण आया है। क्या राजा साहब यह बतलाएँगे कि हमारा राज़ किसी को उनसे नहीं मिला।"

"नहीं, नहीं मिला। इनसे हम कहते, लेकिन दूसरे की बात है, इसलिए नहीं कहा।"

"हमें इसका दुःख नहीं।" एजाज़ दृढ़ हुई।

"हमारी क़िस्तम।" प्रभाकर ने कहा, "यह आदमी आपके लिए (एजाज़ की ओर उँगली उठाकर) आया है। यहाँ इसका कोई

आदमी होगा। मुझसे मैनेजर का नाम लिया, मगर मैनेजर से इसकी जान-पहचान भी न होगी।"

राजा साहब सीधे होकर बैठे। प्रभाकर कहता गया, "जिस तरह भी हो, आप-लोगों में किसीसे कोई आदमी मिलेगा। अब होशियारी से चलना है।"

राजा साहब चौंके।

"इसलिए कुछ रोज़ जाने की बात न करें। लेकिन जाना बहुत ज़रूरी है। नसीम यहाँ नहीं। इस मामले की वही मुखिया है।"

'यानी ?" प्रभाकर ने पूछा।

'अभी हमारी चढ्ढी नहीं गठी। यह राज़ बाद को। आपका अस्ली नाम प्रभाकर है ?"

"मैं प्रभाकर हूँ। और मैं कुछ नहीं जानता।"

"आप, कलकत्ते में मुझसे मिलेंगे।"

"प्रभाकर ही आपसे मिलेगा।"

राजा साहब, को ताल कटती हुई-सी जान पड़ी। हृदय में कोई रो उठा, मगर बैठे रहे।

प्रभाकर ने बिदा माँगी। देर हो गई थी। उसके साथी अभी छूटे हुए थे। रहने के लिए उन्होंने सम्भवतः दूसरा कमरा दूसरे मकान में लिया हो। एक तरह से पकड़ा जाना ही समझना चाहिए। प्रभाकर सोचकर बहुत घबराया।

राजा साहब ने पालकी मँगा दी। प्रभाकर बैठे। राजा साहब ने अतिथि-भवन में रखने की आज्ञा दी। दूसरे दिन सबेरे जगह पर भेजने

के लिए कहा। दिलावर ने सुन लिया। प्रभाकर ने कहा, "मैं पता लेकर ही जाऊँगा। ये मेरी पूरी मदद करें। ऐसी आज्ञा दे दीजिए।"

राजा साहब ने दिलावर को बुलाकर हुक्म दे दिया।

एजाज़ के मन से संसार का प्रकट सत्य दूर हो गया। कल्पना-दर्श में रहने की आकांक्षा हुई। प्रभाकर का ऐसा व्यक्तित्व लगा जैसा कभी न देखा हो। इसके साथ ज़िन्दगी का खेल है, ख़िलाफ़ मौत का सामाँ।

[१८]

रुस्तम बहुत खुश थे कि रानी साहबा ने उन्हें जमादारी दी। जटाशङ्कर जान बचाने के लिए रुस्तम की जगह पहरा दे रहे थे। राजाराम रहस्य का भेद न पाकर खामोश हो गया। दूसरे पहरेदारों ने सुना और रुस्तम के तरफ़दार हो गये। जटाशङ्कर यह उड़ाये हुए थे कि वे शौक़िया सिपाही का काम नहीं कर रहे। जल्द रुस्तम पर आफ़त आती है और ऐसी कि सँभाली न सँभलेगी। तीनों पहरों के सिपाही जो मौक़े पर नहीं थे, तरह-तरह की दीवार उठाते और ढहाते रहे।

सुबह का वक्त्। रुस्तम कुर्सी पर बैठे थे। मुन्ना आई। राजाराम के सामने कहा, "रानी जी की सलामी दो।"

रुस्तम झेंपा। बोला, "रानी जी यहाँ कहाँ हैं?"

राजाराम तनकर देखने लगा। तम्बू के उसी सिपाही को पुकारकर कहा, "देख लो, जमादार का हाल।"

मालखाने से जमादार जटाशङ्कर भी तद्गतेन मनसा देखने लगे।

मुन्ना ने कहा, "सलामी नहीं देते तो जमादारी से बरख़ास्त किये जाओगे।"

रुस्तम घबराया। उठकर झेंपकर सलामी दी। देखकर मुन्ना ने कहा, "एक दिन में तुम्हारी चर्बी बढ़ गई। जमादारी के लिए तुमने कहा था, जमादारी तुमको दी गई। लेकिन तनख़्वाह तुम्हारी वही रहेगी।"

राजाराम और तम्बू-वाला सिपाही हँसा। तम्बू-वाले ने कहा, "जमादार साहब ने इतनी मिहनत से चोर पकड़ा, जमादारी मिली, लेकिन अब तो कुछ और ही बात जान पड़ती है।"

मुन्ना ने कहा, "रानी जी की इच्छा। जमादार जटाशङ्कर को उन्होंने सिपाही बना दिया, लेकिन तनख़्वाह वही रक्खी। आज हुक्म हुआ है, जमादार को २०) का इनाम मिले, क्योंकि काम बहुत अच्छा किया।"

राजाराम ने अपनी तरफ़ से समझा और खुश होकर दोमंज़िले के मालख़ाने-वाले पहरेदार जमादार जटाशङ्कर को, जो आँगन की ओर खड़े थे, आवाज़ लगाकर कहा, "जमादार, कैसा सच्चा फ़ैसला आया है!" तम्बू-वाला, रुस्तम का तरफ़दार, कुछ न समझा। आवाज़ बैठाकर कहा, "बड़े आदमी का फ़ैसला बड़े आदमी जानें।"

"अगर सही मानी में तरक्क़ी चाहते हो तो चलो उठकर," मुन्ना ने कहा। रुस्तम उठकर चला। ज़ीने पर मुन्ना ने कहा, "अगर ख़ज़ाने में उसी वक्त चोरी हो गई हो तो छाँट दिये जाओगे या बचोगे?"

रुस्तम उछलकर सहम गया—"ऍं !"

"रानी के हथकंडे हैं, कुछ समझता भी है ? जैसा-जैसा कहा जाय, कर।" कहकर मुन्ना ने पाँच रुपये का एक नोट निकालकर दिया। शरमाकर रुस्तम ने ले लिया, कहा, "बस ?"

मुन्ना ने कहा, "काम तुम्हारा चार आने का भी नहीं। जब काम पसन्द आयेगा, तब। यह तुम्बा-फेरी किस लिए हो रही है, यह न तुम जानते हो, न हम। यह सिर्फ़ रानी जी को मालूम है। चलो. अभी तुमसे बहुत काम है। अपनी वर्दी पहनो, अब तुम फिर सिपाही के सिपाही।"

जमादार जटाशङ्कर ने वर्दी उतार दी। रुस्तम ने खीस निपोड़कर पहनते हुए कहा, "जमादार, जो कुछ भी आपने किया, आप समझें; जमादारी में आपसे हमने सलामी ली, इसका ख़याल न करें, मुआफ़ कर दें।"

जमादार ख़ुश हो गये। कहा, "यह राजा-रानी का खेल है। कभी घोड़े पर चढ़ना पड़ता है, कभी गधे पर।"

मुन्ना ने कहा, "चलो।" कुछ आगे बढ़कर तीस रुपये दिये। कहा, "दस राजाराम को दो और बीस तुम लो। रानी जी ने इनाम दिया है।"

रुपये लेकर जटाशङ्कर ने कहा, "लेकिन वहाँ ताला टूट गया होगा, तो क्या होगा ?"

"देखो, जमादार, तुम्हारे पास बचत है, तुम्हारे पास एक ही कुंजी रहती है। दूसरी कुंजी कहाँ से आई, ख़ज़ानची से पूछोगे तो नौकरी

जायगी। ख़ज़ानची भी क्या जाने? वह ख़ज़ाने का ताला तोड़वायेगा? जिनका रुपया है, वे ऐसे निकालें या वैसे; किसीका क्या?"

"यह भी ठीक है।"

"चुपचाप बैठे रहो। अब चढ़ाई होगी।"

"चढ़ाई क्या?"

"रानी जी की विजय।"

"उनकी तो विजय ही है।"

[१९]

मुन्ना ख़ज़ानची ख़ोदाबख़्श के यहाँ गई। दूसरी औरत से ख़ज़ानची का तअल्लुक़ कराकर, दूसरे मर्द से रिश्वत दिलाकर, 'एक औरत से उसका तअल्लुक़ हो गया है' उसकी बीबी से कहकर, लड़ाकर, बिगड़ाकर, राजा साहब के नक़ली दस्तख़त से इम्प्रेस्ट से रुपया निकलवाकर, गवाह तैयार करके मुन्ना ने ख़ज़ानची को कहीं का न रक्खा था। उसको पुरस्कार भी मिलता था। इन कामों में रानी साहबा का हाथ था। धीरे-धीरे रानी का प्रेम घनीभूत किया गया। दो-एक बार रात को कोठी में बुलाकर खिलाया-पिलाया गया। ख़ज़ानची की कल्पना दूर तक चढ़ गई। रानी का चरित्र जैसा था, उससे उन्हें जल्द सफल होकर राज्य करने में अविश्वास न रहा।

कुंजी देते हुए मुन्ना ने कहा, "रानी साहबा ने कहा है, अब तुम यहाँतक आ गये।" कहकर उसने अपनी छाती पर हाथ रक्खा।

ख़ोदाबख़्श ख़ुश होकर बोले, "मेहरबानी।"

मुन्ना ने कहा, "आप आज ही जाइए और हिसाब लगाकर मुझे

बताइएगा, मैं राह पर पीपल के नीचे मिलूँगी, कितना रुपया निकाला गया। आपको तो मालूम है, काम दूसरे से कराया जाता है, हिसाब दूसरे से लिया जाता है। जिसने रुपया निकाला वह खा नहीं गया, मालूम हो जायगा। फिर उसी तरह बिल बनाकर ज़रूरी लिखकर सही करा लीजिए। रानी साहबा वह बिल देखकर वापस कर देंगी। अकौन्टन्ट के पास बाद को भेज दीजिए। काम हो जाने पर इनाम मिलेगा।"

कहकर मुन्ना लौटी। ख़ज़ानची देखते रहे। सोचते रहे। उनसे नोटों-वाले सन्दूक़ की कुंजी ली गई थी। अन्दाज़न दो लाख रुपया था। सोचकर काँपे। दो लाख रुपये का जाल। इम्प्रेस्ट से हज़ार-पाँच सौ रुपये निकाल लेना बड़ी बात नहीं। अकौन्टन्ट को शक़ नहीं होता। दो-दो लाख का बिल! इतना रुपया तो मालगुज़ारी के वक्त ही जाता है।

मुन्ना ने रुपये-वाला यह जाल अपनी तरफ़ से किया था। रानी साहबा को इसकी ख़बर न थी। बुआ को झुकाने के लिए उन्होंने आज्ञा दी थी कि किसी सिपाही या जमादार से फँसा दी जायँ, कुंजी उनके हाथ में रहे; लेकिन मुन्ना ने लम्बा हाथ मारा।

ख़ज़ानची ग्यारह बजे के क़रीब ख़ज़ाने आये। जटाशङ्कर बैठे थे। ख़ज़ाने में उस समय राजाराम का पहरा बदल चुका था। रामरतन था। उसने बहुत तरह की बातें सुनी थीं। पर वह आदी था। खड़ा रहा। ख़ज़ानची ने वही सन्दूक़ खोला। सन्दूक़ में एक भी नोट न था। सन्दूक़ का बीजक निकालकर देखा दो लाख तेरह हज़ार के नोट थे।

जटाशङ्कर तके हुए थे। रामरतन पहरे पर टहल रहा था। क्या हो रहा है, क्या नहीं, इसकी उसको ख़बर न थी। ख़ज़ानची ने चुपचाप बीजक निकालकर जेब में किया और सन्दूक़ में ताली लगाई, फिर बाहर-वाला ताला लगाया। जटाशङ्कर फाटक की आड़ से साधारण भाव से देख रहे थे। सिपाही चौंका, पर सँभलकर टहलने लगा।

ख़ज़ानची ताला लगाकर चले। पीछे-पीछे जटाशङ्कर हो लिये। ख़ज़ानची घबराये हुए थे। जटाशङ्कर के लिए इतना काफ़ी था। अभी तक कोई पकड़ उन्हें न मिली थी। ख़ज़ाने से कुछ दूर निकल जाने पर ख़ज़ानची ने उन्हें देखा, घबराहट को दबाकर पूछा, "क्यों जमादार, क्या बात है?"

जटाशङ्कर ने जवाब नहीं दिया। ख़ज़ानची की जेब पकड़ ली। "हाथ-पैर हिलाये कि उठाकर दे मारा और हड्डी-हड्डी अलग कर दी।" गरजकर कहा।

"यहाँ तुम्हारा क्या है?"

"यहाँ हमारी रोटियाँ हैं और आपकी भी।"

"हम पर हाथ उठाने का नतीजा मालूम होगा?"

"बहुत अच्छी तरह।"

"ज़बान हिलाई तो···"

"चुप रहिए।"

"हम वही जिन्होंने रानों के नीचे रक्खा और सदियों। यहाँ कुछ ऐसा ही।"

जटाशङ्कर फ़ौजी आदमी थे। धोखे पर धोखा खा चुके थे। ताव

आ गया। चाहा कि उठाकर पटक दें। लेकिन सँभल गये। कहा, "ख़ज़ानची साहब, हमको यही हुक्म है। आप तो अब वही हैं। सलाम।"

ख़ज़ानची ने कहा, "रा···"

"हुज़ूर, निकालने वाले तो हमी हैं। यह फ़र्द हमको दे दीजिए।"

"उन्हीं का हुक्म ?"

"हुज़ूर। लेकिन उससे न कहिएगा, और आगेवाली काररवाई पहले हमसे। यहाँ भी तो एक कुंजी रहती है ?"

"हाँ, हाँ, ठीक है। यह लो।" ख़ज़ानची ने बीजक दे दिया। देना नहीं चाहते थे, हाथ काँपा। पर काँटा ऐसा ही था। सोचा, "रुपये इसीने निकाले हैं। दो आदमियों के सामने कहला लेना है।"

जटाशङ्कर ने बीजक लेकर कहा, "इसकी बात उससे मत कहिएगा। नहीं तो हम पकड़ जायँगे। उससे यह मालूम कीजिए कि कहाँ रक्खा है ? आपसे कहे देते हैं कि निकालकर हमने दिये।"

"तो वे पहुँच गये।"

"कितने लिखे हैं ? बताइए, नहीं तो हमें पकड़वाना पड़ेगा।"

"दो लाख तेरह हज़ार। जमादार, बहुत नाज़ुक मामला है। भेद न खुले। तुम्हें भी मिलेगा।"

"आगेवाली लीपापोती भी हमें मालूम होनी चाहिए। रुपया रक्खा कहाँ है, पूछ लीजिएगा, नहीं तो हम पुछवाएँगे। कल हुज़ूर इसी वक्त ख़ज़ाने में तशरीफ़ ले आने की मिहरबानी करें, नहीं तो रा—के पास मामला दायर होगा। खूब ख़याल रहे (बीजक दिखाकर)

इसका हाल किसीसे कहिएगा तो बचिएगा नहीं । हमीं आपतक इसका भेद है ।"

"यह तै रहा । लेकिन तुम भी इसका ज़िक्र न करना ।"

"हुज़ूर का मामला, ज़िक्र किससे किया जायगा ?"

जमादार राजा को सम्बोधन कर रहे थे, ख़ोदाबख़्श अपने को समझते थे । सलाम करके जमादार वापस आये, ख़ज़ानची आगे बढ़े । पीपल के चबूतरे पर मुन्ना बैठी हुई थी । देखकर मुसकराती हुई सामने आई । "कितना है ?" होंठ रंगकर पूछा ।

"पाँच लाख ।" ख़ज़ानची ने छूटते ही कहा ।

मुन्ना ने अङ्क को मन में दोहराये ।

"तो जल्द बिल तैयार हो जाना चाहिए । राजा साहब के दस्तख़त बनाकर अकौन्टन्ट के पास पहुँचा दिया जाना चाहिए ।

ख़ज़ानची मन में कुढ़ा । सोचा, इस बेवकूफ़ को कौन समझाये, दो-दो ढाई-ढाई लाख रुपये, ज़्यादा रुपये होने पर छिपा रखने के सिवा, सीधे रास्ते से हज़म नहीं किये जा सकते । वे राजा की निगाह पर आएँगे । बिल जाली बना लिया जा सकता है, पर ख़र्च का मेमो राजा की नज़र से गुज़रेगा । इम्प्रेस्ट का रुपया एक साथ मेमो बनकर निकलता है घर के ख़र्च के लिए । उससे हज़ार-पाँच सौ साल-छः महीने में निकाल लिया जा सकता है । उसके बिल सही होकर अकौन्टन्ट के पास भेजे जाते हैं तो कैश-लेजर कर लिया जाता है, उसका अलग से मेमो में उल्लेख नहीं आता ।

खुलकर ख़ज़ानची ने कहा, "अच्छी बात है" फिर पूछा, "रुपये रानी साहबा के पास पहुँच गये ?"

"उसी वक्त" स्वर को मुलायम करके मुन्ना ने कहा, "नहीं तो रक्खे कहाँ जायेंगे ?"

"बिल बनाकर अकौन्टन्ट के पास भेजने के लिए क्या रानी साहबा ने हुक्म दिया है ?"

"हमसे सवाल करने के क्या मानी ? हम जैसा सुनते हैं, वैसा कहते हैं।"

"अच्छा तो उसी तरह बिल भेज देंगे।" ख़ज़ानची को अँधेरा दिखा। वह रास्ता काटकर चले।

मुन्ना को जान पड़ा, कुछ बिगड़ गया। कुछ अप्रतिभ हुई। मगर फिर चेतन होकर कहा, "आप इतना नहीं समझते जब लोहे के सन्दूक से नोट ग़ायब हो सकते हैं, तब बाक़ी काररवाई भी हो सकती है।"

"कैसे ?"

"जैसे आपसे कुंजी ली गई।"

"वैसे ही मेमो पर राजा के दस्तख़त करा लिए जायँगे और पाँच लाख रुपये के एक ख़र्च पर ?"

"जहाँ पाँच लाख की चोरी होती है, वहाँ एक लाख की कम-से-कम रिश्वत होगी, और इस रक़म से काम न हो, ऐसा काम अभी संसार में नहीं रचा गया।"

"यह तो हम समझे, लेकिन मेमो पर राजा के दस्तख़त कैसे होंगे ?"

"मेमो क्या है ?"

"जिस पर बिल के रुपये लिखे जाते हैं।"

"राजा की सही हो जाने पर ये रुपये दर्ज कर दिये जायँगे।"

"ख़ज़ानची .ख़ुश हो गये। कहा, हाँ, ऐसा हो सकता है। लेकिन वहाँ भी लगाव होगा।"

"राज्य रानी का भी है, लगाव सबसे है, जो उनका काम करेंगे, उनपर वे मिहरबान रहेंगी।"

"अच्छी बात है; अब कुल काररवाई कर ली जायगी, लेकिन अकौन्टन्ट समझ जायँगे।"

"कौन समझेगा, कौन नहीं, इसकी चिन्ता व्यर्थ है।"

"यह भी ठीक। हमें क्या मालूम, कौन-कौन नेक नज़र पर हैं।"

मुन्ना ख़ज़ानची की नुकीली दाढ़ी देखती रही। ख़ज़ानची ने ख़ुश होकर रास्ता पकड़ा।

[२०]

यूसुफ़ के पीछे तीन आदमी लगाये गये। होटल में यूसुफ़ ने कलकत्ते के एक मित्र का पता लिखाया था। रात को प्रभाकर अपने मित्रों की तलाश में बाज़ार गये। पालकी के अन्दर बैठे रहे। पालकी के दरवाज़े बन्द। दिलावर ने साथियों के साथ यूसुफ़ का पता ला दिया। बाज़ार के लोगों पर राजा के लोगों का प्रभाव था। जिस कमरे में सामान था, उसमें प्रभाकर के साथी नहीं मिले। प्रभाकर लौटे। अतिथिशाला के कमरे में आकर पूछा, "बाज़ार में रहने के कितने होटल हैं ?"

दिलावर ने कहा, "सिर्फ़ तीन।"

"और कोई रहने की जगह है?"

"और रंडियों के मकान हैं।"

निश्चय करके प्रभाकर ने पूछा, "क्या नाम इस आदमी ने लिखाया है?"

"शेख़ नज़ीर"

कलकत्ते का पता दिलावर ने लिख लिया था। प्रभाकर ने कहा, "सावधानी से इस आदमी का पीछा किया जाना ज़रूरी है। वहाँ तीन आदमी जायँ। एक पहले ही उस पते पर पहुँचे। साथ वकील और पुलिस का अच्छा आदमी, कम-से-कम इन्स्पेक्टर होना चाहिए। हम चिट्ठी देंगे, वकील आदमी ले लेगा। इस पते का आदमी अगर यह नहीं, तो वह मिलेगा। इसके पहुँचने के पहले वहाँ पहुँचना चाहिए। यह भी बाद को वहाँ जायगा, और यह कहेगा कि वह स्वीकार कर ले कि वह यहाँ आया। तुम समझे?"

"हाँ, लेकिन यह अगर कहकर आया होगा तो सब-का-सब गुड़-गोबर हो जायगा। बड़ा नीचा देखना होगा। वह इसीका नाम बतलाएगा, या नहीं मिलेगा। यह सरकारी आदमी है, वह भी होगा। इस तरह न बनेगा। अभी आप कच्चे हैं, बाबू। हम होटल वाले से कह आये हैं, कल वह इनसे इनके एक रिश्तेदार का नाम पूछेगा, अपने मन से पूछेगा, जैसे साले का नाम या मामू का या मौसी का। इन्हें जवाब देना होगा, अगर जवाब न दिया तो कहा जायगा कि ये राजा के सिपुर्द किए जायँगे। ये ग़लत नाम बतलाएँगे। इस तरह

यहीं गवाही पक्की हो जायगी। फिर कलकत्ते का हाल हम मालूम कर लेंगे। राजा भी सरकार के हैं। अगर इन्होंने बात न मानी तो इनसे इतने सवाल किये जायँगे कि होश फ़ाख्ता हो जायँगे।"

दिलावर की बातों से प्रभाकर को ख़ुशी हुई। सर झुका लिया। कहा, "आप लोगों से बहुत सीखना बाक़ी है।" मन में कहा, "काम उस तरह भी पक्का था, झूठ से कहाँ बचाव है?"

"बाबू, आपकी शराफ़त के हम क़ायल हो गये। आप हमें अपने आदमी मालूम होते हैं। हमीं आपके साथ रहेंगे। छोटी-सी तनख्वाह में ऐसी गिरह लगानी पड़ती है, नहीं तो लोग बिना शहद लगाये राजा को चाट जायँ। अब आप आराम कीजिए।"

प्रभाकर लेटे। रात का तीसरा पहर बीत रहा था।

सबेरे होटल-वाले ने यूसुफ़ से एक रिश्तेदार का नाम पूछा। यूसुफ़ चौकन्ने हुए। मगर मामला तूल पकड़ जायगा सोचकर अपने रिश्तेदार का नाम बतलाया। होटल-वाले ने यूसुफ़ के दस्तख़त कराये। यूसुफ़ ने बिगाड़कर दस्तख़त कर दिये। फिर कलकत्ते-वाले जहाज़ के लिए रवाना हुए। ख़बर लेकर उनके पीछे तीन आदमी लगे। बहुत से यात्री थे। उन्हें मालूम नहीं हो सका, कौन उनकी गरदन नाप रहा है।

कलकत्ते में उतरने के साथ उन्होंने अपने नाम के साथ जो पता लिखा था, उस पर पहुँचने के लिए एक आदमी तीर की तरह छुटा। पहले दरजे की बग्घी किराये की और जल्द चलने के लिए कहा। उसके दो साथी, रास्ते पर यूसुफ़ को तीसरे दरजे की टूटी बग्घी ठहराते

हुए देख कर, पूछताछ करने लगे, "कहाँ जाना है—जनाब कहाँ से तशरीफ़ ले आये ?" मतलब जवाब लेना नहीं, रोके रहना था। यूसुफ़ सस्ते भाव चढ़ना चाहते थे, जल्दबाज़ी नहीं की। एक बग्घी-वाले से तै न हुआ, दूसरे के पास चले।

आगन्तुकों ने स्थान का नाम न सुना था। ज़रा देर करके आये थे। वे दूसरे के पास गये, साथ-साथ यह भी गये।

यूसुफ़ ने कहा; "तालतला ?"

"हाँ, बाबू।" बग्घीवाले ने जवाब दिया।

"क्या लोगे ?"

"डेढ़ रुपया।"

"वह क्या है थोड़ी दूर पर। डेढ़ रुपया बहुत है। ठीक-ठीक बतलाओ।

"अरे साहब, हम भी साथ हो जायँगे क्या बुरा है ? तै कर लीजिए। आप बड़े आदमी हैं। पीछे बैठिए। हम आगे, पिछौंड़े रहेंगे। आधा आप दीजिए, आधा हम।"

बात यूसुफ़ को जँच गई। पूछा, "आप-लोग भी वहीं चलेंगे ?"

"जी हाँ," एक ने कहा, "कुछ दूर और चलना है। पैदल चले जायँगे।"

"कहाँ से आ रहे हैं ?"

"उलूबड़िया से।"

एक साथी मुसलमान था। युसुफ़ मान गये। गाड़ी तै की। सवा

रुपये की ठहरी। तीनों बैठे। मुसलमान दोस्त असल में हिन्दू था, फ्रेंचकट दाढ़ी रखाये हुए। चुपचाप बैठे रहे। गाड़ी चलती गई।

पहले के गये हुए आदमी ने राज़ ले लिया। यूसुफ़ उससे कहकर नहीं गये। बतलाने जा रहे थे। राज़ लेकर और यह कहकर, "आप फँसाए गये हैं अपने किसी दोस्त से, उन्होंने अपने नाम की जगह आपका नाम लिखाया है और किसी मामले में फँस गये हैं; अगर आप हमारे पूछने का राज़ उन्हें न दीजिएगा, वे कहाँ गये थे, क्यों गये थे, किससे-किससे मिले थे, आगे का क्या इरादा है, उनसे दोस्त की हैसियत से मालूम करके हमें बतला दीजिएगा, तो बच जाइएगा, कुछ फ़ायदा भी होगा, वे कोई हों, एक आदमी हैं, अपने को पहले बचाएँगे, सरकारी आदमी ख़ास तौर से आपको फँसा देंगे और ख़ुद पर मारकर अलग हो जायँगे। याद रखिएगा। हम आपसे फिर मिलेंगे।" यह कहकर वह आदमी अलग हो गया। दूर चलकर खड़ा हुआ। बातचीत हो चुकी थी कि यह आदमी अगर उधर जायगा तो पीछा करने वाले, साथी दो घन्टे के अन्दर उस जगह पहुँच जायँगे। यह साथी दो घण्टे तक प्रतीक्षा करेगा। यह पढ़ा-लिखा मुसलमान था।

यूसुफ़ तालतल्ले पहुँचे। गाड़ी रोकी। दोनों साथी आधा दाम देकर उतर पड़े और सलाम-वालेकुम करके चल दिये। तीसरा साथी प्रतीक्षा कर रहा था। तपाक से मिला। पूछा, "वह कहाँ है ?"

"साथ आया है।" एक ने कहा।

"राज़ मिल गया।"

"फँस जायगा ?"

"अब इसको कौन छोड़ता है ?"

"यहाँ जड़ जमानी पड़ेगी ?" एक ने पूछा।

"मानी बात है।" उस मुसलमान साथी ने कहा।

"गुंजाइश है ?"

"बहुत।" पहले-वाले ने कहा।

"तुम्हारी क़िस्मत खुल गई।"

"मुमकिन, गहरी रक़म हाथ आये।"

[२१]

"भाई नज़ीर" यूसुफ़ ने पुकारा।

नज़ीर बैठे थे। अभी ही फ़ुर्सत मिली थी। सोच रहे थे। कहने वाले आदमी की बात पक्की मालूम हो रही थी। घबराये भी थे। ग़रीब थे। यूसुफ़ की दोस्ती से फ़ायदा न हुआ था। कटने की ठान ली। आवाज़ पहचानकर उठे। दिल से नफ़रत थी, मगर मुस्कराहट से होंठ रंग लिये। थानेदार की निगाह से निगाह भी नीची रक्खी।

"अस्सलामवालेकुम्।"

"वालेकुम् अस्सलाम।"

"भाई, तुम्हारा नाम एक जगह लिखाया है।"

"किस जगह ?"

"तुम पुलिस से राज़ लेने लगे।"

"क्या हमसे पूछा गया ?"

"यह बातचीत तो पहले हो चुकी है।"

"इसका यह मतलब नहीं कि हम .खुदा के लिए मुसलमान न रह जायँ।"

"इस दफ़ के लिए मान जाओ।"

"आप पूरा-पूरा हाल बयान कीजिए, वरना..."

"वरना ?"

"हाँ"

"वरना आप सरकार से बदला चुका लेंगे।"

"नहीं चुकवा लूँगा।"

"तुम तो बहुत बिगड़े।"

"बात भी कोई बनाई ?"

"बात तो बनाई ?"

"बातें बनाते हैं।"

"अच्छा तो जो जी में आये कर लो" कहकर थानेदार साहब ने नक़ली ठहाका लगाया।

"मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा।"

थानेदार साहब गर्म पड़े। कहा, "ऐसा भी होगा कि हम तुम्हारा दिल देख रहे हों और अस्लीयत कुछ हो ही नहीं।"

"मुमकिन।" नज़ीर के स्वर में निवेदन न था।

"अच्छा तो आख़िरी बात। अगर आप नहीं माने तो आज ही आपका चालान करा दूँगा।"

नज़ीर घबराये। कहा, "हमारी बात और हमें मालूम भी न हो, क्या तमाशा है।"

"अच्छा तो आप तैयार रहिए।"

"आप भी तैयार रहिए।"

थानेदार घबराये। अज़ीज़ी से कहा, "पुलिस राज़ दे देती है तो उसका बल घट जाता है। काम हासिल नहीं होता। आप मान जाइएगा तो वक्त पर मीठा फल खाने को मिलेगा। नहीं माने तो हाथ मलते रह जाइएगा।"

"पर हमें मालूम कर लेना है।"

यूसुफ़ हार गये। कहा, "हम एक जगह गये थे, कहाँ आपका नाम हमने लिखाया है।" फिर न बताया।

"कहाँ गये थे?"

यूसुफ़ ने एक दूसरी जगह का नाम बताया। कहा, "सरकारी काम था।"

"आप ऐसा कहते हैं तो हमारी छाती दूनी हो जाती है। फिर?"

"फिर और कुछ नहीं। यह याद रहे कि तुम्हारे मामू के तीन लड़के हैं, यह भी लिखाया है।"

"मेरे तो मामू ही नहीं। ख़ुदा के फ़ज़्ल से अब्बा जान के सालियाँ चार थीं, साला एक भी नहीं।"

"आपको हम बचाये हुए हैं, यह आप समझे या नहीं?"

"हाँ, यह तो है।"

"और आप नहीं गये, यह भी साबित है।"

"हाँ, यह भी।"

"आपको ज़िल्लत गवारा करनी पड़ी, इसका हमको अफ़सोस है।"

नज़ीर सर झुकाये खड़े रहे। यूसुफ़ गाड़ी खड़ी करके आये थे। उधर को चले। विचार में नज़ीर को सलाम करने की याद न रही।

गाड़ी तै करके यूसुफ़ बैठे। गाड़ी चली। कुछ दूर पर एक दूसरी गाड़ी किराये पर ली हुई खड़ी थी। कुछ फ़ासले से पीछे लगी वह भी चली।

यूसुफ़ के चले जाने पर नज़ीर के पास वही पहला आदमी गया। बुलाकर पूछा। नज़ीर ने दीन भाव से कहा कि यूसुफ़ की उनसे तना-तनी हो गई है, उन्होंने बतलाया नहीं, जो कुछ कहा—यह वह करके, वह थानेदार हैं, उनसे जान-पहचान है, दूर के रिश्ते में आते हैं।

आगन्तुक ने कहा—"आप हमारे आदमी हैं। इन्होंने आपको फँसा दिया है। हम आपको बचा लेंगे। कुछ रुपये भी देंगे। बाद को काम निकलने पर और मदद करेंगे। अभी आप एक चिट्ठी लिख दीजिए कि आपका यह नाम है, यह वल्दियत, इतने मामू हैं, और इसके इतने लड़के—यह यह।"

नज़ीर ने, बात पक्की है, सोचा। ग़रीब थे। रुपये मिल रहे थे। दावात-क़लम लेकर कुल बातें सामने लिख दीं।

आगन्तुक ने उन्हें पचीस रुपये दिये। नज़ीर हर तरह से उसके आदमी बन गये। यूसुफ़ का पूरा-पूरा हाल आगन्तुक को मालूम हो गया—वह कहाँ रहते हैं, उनके वालिद क्या करते हैं, आजकल क्या रुख़ है, किस कार्रवाई में लगे हैं।

आगन्तुक वहाँ से राजा की कोठी आया। उसके साथी भी आये।

उन्होंने घर का पता और बाप का नाम मालूम कर लिया था। सामने के पान वाले ने बतलाया था, दोनों जगहों की बातें मिल गईं। लोग .खुशी-खुशी टहलते रहे। अली को देखा। अली ने पूछताछ शुरू की। लोगों ने कहा, बर्दवान से आये हैं।

अली ने पूछा—"बर्दवान में सुदेशी का आन्दोलन कैसा है?"

"कौन सुदेशी?" एक ने पूछा।

"यही जो सरकार के ख़िलाफ़ बमबाज़ी हो रही है।"

"आप अखबार तो पढ़ते होंगे?"

"हाँ, हमने कहा...."

दूसरे ने कहा, "बमवाले हैं।"

"कौन?" अली ने कहा—"हमारे साहबज़ादे थानेदार हैं।"

तीसरे ने कहा—"हमारे मामू के साले के ससुर इन्स्पेक्टर हैं।"

(२२)

प्रभाकर को जहाँ रक्खा है, उसी कोठी का पिछला हिस्सा है। दूसरी तरफ़ बुआ रहती थीं। प्रभाकर के दोमंज़िले की छत, दूसरे छोर तक, बरगद और पीपल की डालों से छायादार है। भीतर, कोठों में, अँधेरा। इतना प्रकाश कि काम कुल हों। खुली तरफ़ खिड़की वाला बाग़। दूसरे किनारे मर्दों के लिए बड़ा जलाशय, गहरा, मछलियों की खान। किनारे नारियलों की क़तार। दूसरी पर, आम, जामुन, कटहल, लीची, नारंगी, शहतूत, फ़ालसा, बादाम, रक्तचन्दन आदि के पेड़। कहीं-कहीं गुलचीनी, गन्धराज, अशोक, हींग, अनार, गुलाबजामुन, योजनगन्धा।

खुली, हवादार खिड़कियों के एक बग़ल पलंग बिछा है, मशहरी लगी है। एक बड़ी मेज लगी है; काठ की; मगर अच्छी, कई कुर्सियाँ चारों ओर से रक्खी हैं। दो आलमारियाँ हैं जिनमें सामान, कपड़े और किताबें हैं। भीतर, दूसरी खमसार के रूप, बड़ा बैठका है। बत्ती से ही उजाला होता है। वहाँ प्रभाकर साथियों के साथ काम करता है। बैठक की दूसरी दीवार अकेली है, बड़ी खिड़कियाँ लगी हैं, खोल दी जायँ तो गुप्त कार्य दिखें, लेकिन पेड़ों की घनी छाँह है। फिर भी काम चल जाय, दिये जलाने की दिक्क़त न रहे, पर, डाल पर चढ़े अजनवी से दिख जाने की शङ्का, प्रभाकर खिड़कियाँ बन्द रखता है। ज़ीने को तरफ़ के पहरे से, एक दूसरे आंगन के बरामदे से आने-जाने का रास्ता है। प्रभाकर के कमरे के छोर से तालाब को निकलने का एक बाहरी ज़ीना है। पहले नीचे और ऊपर के दरवाज़ों में ताले पड़े रहते थे; लोहे के पात जड़े बाहर वाले और काठ के भीतर वाले में। यह उसका एकान्त रास्ता है। घिर जाने पर पहरेवाले ज़ीने से उतरने का दूसरा रास्ता है, फिर कई तरफ़ फूटो दालानें, आँगन से आँगन को चलने वाली हैं।

वास निर्जन। निकलने और पैठने की राहें प्रभाकर देख चुका। सरोवर के दूसरी ओर मर्दाना बाग़ है, जिसमें तीन हज़ार पेड़। गढ़ की दीवार के दूसरी तरफ़ गाँव का रास्ता निर्जन। और भी राहें हैं। इससे वह एक रोज़ बाहर के लिए निकल चुका है। रासपुर, बड़ा गाँव, केन्द्र है, चर्खे और करघे का काम होता है, जनता और जुलाहों में प्रचार भी। सभी कमकरों का दिल बढ़ा हुआ। स्वदेशी-प्रचार के

गीत गाते हुए। काम करते हुए। प्रभाकर का व्याख्यान हुआ। निरी-क्षक-जैसे गये थे। बहुत-से दूसरे केन्द्र गये। फिर कलकत्ता चलने का बहाना बनाकर लौटे और रात को अपने प्रासाद-वास पर आये।

बंगाल और सारे देश में आन्दोलन की चर्चा है। सैकड़ों कर्मी प्रान्त में फैले हुए। संगठन और व्याख्यान और काम करते चले। विदेशी का बहिष्कार ज़ोरों पर। जगह-जगह 'युगान्तर' की छिपकर बातें सुरेन्द्रनाथ और विपिनचन्द्र के व्याख्यानों की तारीफ़। अखबार रंगे हुए। वन्देमातरम का पहला समस्वर आकाश को चीरता हुआ। गीत; भिन्न कवियों-गायकों के भी संगठन, काम; दिन-रात काम; एक लगन।

प्रभाकर नहाने चला। सरोवर पर पक्के घाट हैं, लम्बान की दोनों पंक्तियों के बीचो-बीच दूसरा घाट निकट है। एकान्त रहता है। कोठी के पिछले छोर से दूसरी तरफ़ वाला घाट निकट पड़ता है। प्रभाकर उसीमें नहाता है। कोठी के सदर फाटक की बग़ल में सरोवर का राजघाट है। उसमें लोग आते-जाते हैं। दोनों घाटों के चारों ओर मौलसिरी के पेड़ लगे हैं और काफ़ी पुराने हो चुके हैं। बड़ी घनी छाया है। वैसी ही ठंढक भी।

प्रभाकर ने डुबकियाँ लगाकर स्नान किया। भीगे अँगोछे से बदन मला। हाथ-पैर रगड़े। कुल्ले किये। कुछ तैरा, कुछ खेला। इधर-उधर के दृश्य देखे, पानी से भीगी पलकों से कैसे दिखते हैं। फिर निकलकर धोती बदली, धोती धोई और निचोड़कर, गीली धोती और तौलिया लेकर चला।

(२३)

खज़ाञ्ची खोदाबखश, मुन्ना और जटाशङ्कर के पेट में पानी था। तीनों ने बचत सोची। तीनों के हाथ में पकड़ है।

जटाशङ्कर से मिलने का वक्त आया। खज़ाञ्ची कलकत्ता और राजधानी एक किये हुए हैं।

दुपहर का समय। किरणों की जवानी है। हरियाली का निखार। मुन्ना कोठी की बग़ल वाले रास्ते से गुज़र रही है। रुपया रक्खा है, दूर से निगरानी रखती है। कई दफ़े वह अंधेरी कोठरी देखती है। सदर की तरफ़ वाले घाट की बग़ल से, किनारे-किनारे जो सड़क दूसरे घाट को जाती है, उसी पर टहलती हुई। प्रभाकर को दूसरे किनारे से कोठी की तरफ़ चलते, फिर कोठी के भीतर चले जाते देखा। पेड़ों की आड़ है और सिंहद्वार से दूर है। अन्दर-महलवाली दासी के लिए कोठी के दूसरे किनारे तक बढ़ जाना, अन्देशे के वक्त, स्वाभाविक है। उसकी प्रभाकर पर नज़र पड़ी कि तेज़ी आई। चौकन्नी हुई। अपने में पूछा। किसीको उधर से जाते नहीं देखा। वहाँ ज़ीना है, नहीं मालूम। कभी गई नहीं। कोठी का उधर वाला हिस्सा नहीं दिखा। प्रभाकर को किनारे से भीतर जाते देखा।

खज़ाञ्ची अभी नहीं आया। आयेगा, कुछ ठहरकर चलेगा, राह पर मिलेगी। पूछना और काम लेना है। छिपी भी है, देखती भी है। यहाँ से सिंहद्वार और वह रास्ता नहीं देख पड़ता। अनुमान है, वक्त पर लौट पड़ेगी। सजग है—खज़ाञ्ची लौट न जाय।

खज़ाञ्ची बेचैन हैं। घटना घट चुकी। बाजफ़ जमादार के हाथ

पड़ा। परदा फाश हुआ। बँध गये। सरकारी आदमी की शरण ली। काम कर रखने की ठानी। एजाज़ से बातचीत करानी है। राज़ लेना है। निचले वर्ग की औरत से मदद चाहिए। मुन्ना आँख के सामने आई। सहारा मिला। आखिरी हिम्मत बाँधी कि इस जाल से छुट जायँ। सरकार की शिरकत के खयाल ने पाया जमाया।

जटाशङ्कर से मिलना आवश्यक है, खज़ाञ्ची यथासमय आये। खज़ाने की तिजोरियाँ खोलीं, बीजक देखे। जटाशङ्कर भी खड़े हुए देखते रहे। चपरासी के सन्दूक बन्द करने पर खज़ाञ्ची से जटाशङ्कर ने पूछा—"ठीक है?"

"ठीक है।" गम्भीर अप्रसन्नता से खज़ाञ्ची ने कहा। जटाशङ्कर सिपाही की गवाही तैयार कर रहे हैं। दोस्ती रही। लेकिन बीजक छिन गया है। बस नहीं। फँसे हैं। बचकर चले।

जमादार काम ले गये, खज़ाञ्ची से उतरते-उतरते न सहा गया। कहा—"जमादार, क्या यह गवाही अलग से पेश होगी?"

सिपाही समझ गया। पूछा—"कैसी गवाही?" बातें इधर-उधर सुन चुका था। खज़ाने की बातचीत ने जड़ जमा दी। खज़ाञ्ची के सामने सिपाही ने कहा, "मैं समझ गया।"

तेज़ पड़कर खज़ाञ्ची ने कहा—"नहीं सुना? हमने कहा, ठीक है।"

"बाद वाली बातें भी?" सिपाही ने फिर सवाल किया।

जमादार ने कहा—"हम सधे होते तो पूछते क्यों? सवाल मत करो।" मगर सिपाही का भूत न उतरा, शङ्का-समाधान न हुआ। छुटकारा भी न था।

खज़ाञ्ची ने निकलते हुए धीरज दिया, सब लोग एक ही राह से गुज़रेंगे। जहाँ आपकी गवाही होगी ? वहाँ हम भी होंगे।

सिपाही खड़ा रहा। जमादार और खज़ाञ्ची साथ निकले। रास्ते-रास्ते निकल गये। सिंहद्वार वाले घाट से कुछ फ़ासले पर एक कुञ्ज में बात-चीत करने लगे। मुन्ना ने देखा। छिपकर बातचीत सुनने के लिये, रास्ते के किनारों की मेहँदी की बेड़ों से बचती हुई पास पहुँची। खज़ाञ्ची से मिलने का मुकाम कुछ आगे है। जटाशंकर की नाड़ी छुट रही थी। पूछा, क्या खबर है ?

खज़ाञ्ची ने कहा—"अभी दो रोज़ मत बोलो।"

"तब तो हमारी नौकरी चली जायगी।"

"तब और नहीं बचेगी। पहले की बातें भी हमसे बताओ।"

"आप यह बताइए कि आगे की कार्रवाई क्या होगी ?" जटा-शंकर ने पूछा।

मुन्ना समझ गई, इन दोनों का मेल मिल चुका है। कारण समझ में न आया। जमादार के रपोट करने के विचार से डरी। पर जमी बैठी रही।

"अभी कुछ नहीं कहा जा सकता, जमादार।" खज़ाञ्ची ने लाचार होकर कहा।

"अब हमारे मान की बात नहीं।"

"जमादार, सिर्फ़ इस कोठे का धान उस कोठे गया है। दबा जाओ।"

"दबा कहाँ से जायँ ?"

जमादार रिपोर्ट न कर दे, इस डर से मुन्ना निकली। मिलने की ठानी। मेहँदी के किनारे से सड़क पर आ गई।

एकाएक उसके पहुँचने पर दोनों त्रस्त हुए। उसने कहा, सिपाही की ओर से मेरी गवाही होगी।

ख़ज़ाञ्ची सकपका गया। जटाशंकर अपने बीजक की ढाल से तलवार झेल जाने को तैयार था। मुन्ना ने कहा, "मेरा हाल दोनों को मालूम है। हम तीनों का मिलना था। क्योंकि रानी जी हैं। रानी और राजा मिल गये। रुपया हमीं लोगों में है, हमी लोगों का है। मिल्लत से चलना है, क्योंकि हमको बचना है। सिपाही को हम समझा लेंगे। क्या कहते हो जमादार?"

जमादार का बीजक-बल घट रहा था। चुपचाप खड़े थे।

मुन्ना ने सोचा, परदा फ़ाश हुआ तो बुरी हालत होगी, रिश्वत कुछ दे दी जायगी तो अभी मामला दबा रहेगा। कहा—"रानी जी जल्द आज-कल में रुपया देने वाली हैं। आपलोग रानी के तरफ़दार रहिए। यह काम इसीलिए किया गया है। राजा के कान में बात पड़ जायगी तो नासों पानी चढ़ेगा। मामला बहुत बढ़ेगा। नौकरियाँ जायँगी। पुलिस के हाथ गया तो सज़ा की नौबत आयेगी। हमीलोग बधेंगे। रानी और राजा को कुछ नहीं होगा। सङ्गठन रहेगा तो मज़े में चले चलेंगे, क्या कहते हैं?"

"इससे अच्छी और कौन सी बात है?"

जटाशंकर ने भी ख़ज़ाञ्ची की बात दुहराई।

मुन्ना ने कहा—"जमादार, अब तुम चलो, उस सिपाही से मैं बात-चीत कर लूँगी। यह बात हम तीनों की रही। रानी साहबा से तुम मिल नहीं सकते।"

जमादार चलने को न हुए, फिर कुछ कहना चाहा, मुन्ना ने बीच में खुलकर कहा—"अब चलो जल्द, यह मालूम नहीं,—ये रानी साहबा के क्या हैं और होंगे ?"

जटाशङ्कर चले। रास्ते पर सोचा—"राजा को बीजक लेकर न दिखायें। पहले का हाल कहना होगा; नहीं मालूम, मामला पल्टा खाय। जाने दिया जाय।"

(२४)

ख़ज़ाञ्ची और मुन्ना पीपल के पास गये। ख़ज़ाञ्ची ने गम्भीर होकर कहा—"जब कि हमने काम कर दिया है, एक काम हमारा तुम कर दो य रक़म वापस करो। अब बात दो की नहीं रही।"

मुन्ना—"कौन सा काम है ?"

"पहले हम बता दें, तुम्हारा-हमारा फ़ायदा कहाँ है। हमको नहीं मालूम, रुपयों का तुमने क्या किया। यह बता सकते हैं कि जिनको वजह इतना रुपया निकाल सकती हो, उनसे सरकार बड़ी है, वहाँ से और फ़ायदा उठा सकती हो। अगर हमारी बात पर न आईं, तो मजबूरन् यह राज़ सरकारी आदमी को देना होगा। नहीं तो बचत नहीं। जिसके पास रुपया है, चोर साबित होगा। सरकार आसानी से पता लगा लेगी, रुपया रानी के पास है या नहीं। अगर न निकला तो तुम्हारा क्या हाल होगा, समझ लो। इस मामले को लेकर सरकार के पास हमारे जाने के यही माने होते हैं कि हमारा क़ुसूर नहीं, ताली चुराई गई।"

"यह कौन कहता है कि नहीं चुराई गई, कहो मैं भी कहूँ, हाँ;

लेकिन मैंने चुराई, यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? कैसे कहोगे, फलां ने चुराई ? सुनो तिजोड़ी के फिरसे खुलने का सुबूत गुज़र चुका है। इतने उड़ाके न बनो। तुम नप चुके। मेरी के मानी, रानी की पकड़ है, और तुम्हारी—बचत के लिए सरकार की। क्या रानी अपना सत्यानाश करा लेंगी ? तुमसे पहले यहाँ दगेगी। यहीं रहना है। इस आग से सारा खानदान जल जायगा। फिर, माने रहने पर, वह हासिल हो सकता है। रुपये खैर मिलेंगे ही। काम भी सँवर दिया जा सकता है।"

"यह सही है, पर तुम्हारी भी पैठ होगी, और ऐसी जो हमसे नहीं हो सकती। सरकार की तरफ़ से उधर की बातें तुम्हींसे ली जायँगी। तुम्हारे सीधे तअल्लुक़ात होंगे। सिर्फ़ यह कि यह काम हमसे सुनकर तुम्हें करना है, फिर हम सरकार के आदमी से तुम्हारा हाल कहेंगे : वहाँका कोई तुमसे पूछेगा। सम्बन्ध हो जायगा।"

"इस तरह सम्बन्ध नहीं होता। वह कौन सा काम है ?"

"एजाज़ से कुछ पूछना है।"

"हाँ !"

"हमारा फ़ायदा है। यह तुम्हारी समझ में आ जाय तो गुल खिल जाय। तुमसे तुम्हारे आदमी उठेंगे। तुम्हें यहाँ से यहाँ तक बढ़ना है। ज़मींदार तुम्हारे-हमारे आदमी नहीं। हम मुसलमान पहले ऐसे थे जैसे अंगरेज़। अब रैय्यत की रैय्यत हैं। माली हालत हमारी-तुम्हारी एक है। सरकार बङ्गाल के दो टुकड़े कर रही है। इससे तुमको और हमको फ़ायदा होगा यहाँ—ज़मींदार की जड़ हिलेगी, यानी रैय्यत को फ़ायदा होगा। इस काम में सरकार की मदद करनी है।"

मुन्ना पर असर पड़ा। जिससे जाति भर का भला हो वह काम सरकार ही कर सकती है। जाति-प्रथा की सताई मुन्ना का कलेजा डोला। ज़ब्त किये खड़ी रही, चपल अपढ़ औरत। फँसकर कहाँ तक बहती है, देखने की उमङ्ग आई। पूछा—"एजाज़ से क्या पूछना है?"

"एजाज़ से आज-कल में मिलकर पूछ लो, क्या हालात हैं? लौटकर जवाब दे जाओ।"

मुन्ना सहमत हुई। खज़ाञ्ची मन में सोचता हुआ बढ़ा कि रुपये रानी को दिये गये या नहीं।

(२५)

डाल के सैकड़ों हाथों ने मुन्ना पर फल रक्खे। चली जा रही थी, पराग झरे, भौंरे गूँजे। तरह-तरह की चिड़ियों की सुरीली चहक सुन पड़ी। दुपहर के सन्नाटे के साथ मौसम की मिठास। फिर प्रभाकर याद आया। दूर से घुसते देखा है। कोठी में रहता है। कौन है? मुन्ना धीरे-धीरे वहीं चली। कोठी की बग़ल से जानेवाला रास्ता सुनसान रहता है। आदमी इक्के-दुक्के। मुन्ना ज़ीने के पास खड़ी हुई। जहाँ से आये थे वहाँ के लिए अनुमान किया, और घाट की तरफ़ चला नज़र उठाकर इस हिस्से की बनावट देखती हुई। बुआवाले बाग़ के सामने दोमंज़िला है। निकलने का दूसरा ज़ीना है। बाग़ में जाने का ज़ीना नहीं। उसी राह जाना पड़ता है। नीचे वाली मंज़िल में पुरानी चीज़ें कुफ्ल में रक्खी हैं। कोई राह नहीं। एक अंधेरी कोठरी है, एक तरफ़ का दरवाज़ा टूटा है। उसको बाग़ का हिस्सा समझ सकते हैं। तालाब के किनारे की कोठी उसने नहीं देखी; यों बहुत-सा हिस्सा नहीं

देखा। बाग़ीचे की तरफ़ खुले कमरों को देखकर लौटी। उसको जान पड़ा, सुनसान दिखता है। रहने की आहट नहीं मिलती।

रहस्य से मुस्कराकर सिंहद्वार लौटी। जमादार बैठे थे। मुन्ना को सुनाकर कहा—"देखो, रघुनाथ जी की क्या इच्छा है।"

"हम अभी आते हैं।" मुन्ना ने कहा—"बस, आज रानी जी का बदला चुका लिया जाय।"

"कैसे?" षड्यन्त्र वाले की आवाज़ से पूछा।

"अभी आती हूँ: उसको चाहते तो नहीं?"

जमादार सन्न हो गये। मुन्ना ने ज़रा रुककर पूछा, "हम हों या वह?"

"तुमको कौन पाता है? तुम्हारी चल रही है।"

"फिर उसकी तरफ़ लपकना मत।"

"अच्छा, चली आ।"

"मुन्ना घूमी। सिपाही भगता नहीं, जीत की जगह है लेता है। हमारी हो, तो अपनी गरदन नपाये देते हैं।" ड्योढ़ी की ओट में खड़े जटाशङ्कर ने कहा।

प्रेम की आँखों मुन्ना ने देखा।

हम राह देख रहे थे। बता दो, कितने की चोरी हुई?"

"पाँच लाख की।"

"ग़लत है।"

मुन्ना ने जटाशङ्कर को देखा। जटाशङ्कर हाथ पकड़कर काग़ज़ात के कमरे में ले गये। देर तक बातचीत की। हाल

समझकर रुपये बताकर बीजक दे दिया। दोनों के गहरे सम्बन्ध हो गये।

(२६)

मुन्ना की निगाह नीली हो गई, चाल ढीली। चलकर महलवाले भीतरी तालाब में अच्छी तरह स्नान किया। गीली धोती से निकलकर बुआ के कमरे में गई। एक बज चुका था। चुन्नी फ़र्श पर चटाई बिछाकर दुपहर की नींद ले रही थी। मुन्ना की थाली चूल्हे पर रक्खी हुई। भोजन करके चटाई बिछाकर लेटी। आँख लग गई।

जब उठी, चुन्नी काम कर रही थी। बुआ लेटी हुई थीं। बगल की दूसरी कोठरी में मौसी बैठी हुई खाने का मसाला तैयार कर रही थीं?

मुन्ना, कुछ नोट ले आई। बरामदे पर गिने। दस और पाँच रुपये के पहचानती थी। ये थोड़े थे। जटशङ्कर को एकान्त में बुला ले गई और कहा—"आज ही सिपाही इकट्ठे कर लेने हैं, बाज़ार चले जाओ, पुलिस के साफ़े वाला कपड़ा ख़रीद लो। सबको सिपाहियों की तरह पेश करना है कि बाहर के पहरेवाले न पहचान पायें। पहले रानी का बदला। राजा से एक जवाब तलब करा लूँ, फिर ख़ज़ाञ्ची की ख़बर लूँ।"

"उससे क्यों तन गईं?"

"कट गया। फिर फाँसा। मैं फँसी। इसका काम करना है। मगर अकेली रही तो इसको अपने रास्ते न ला पाऊँगी। तुम्हारी मदद पार कर सकती है। तुम हमारा हाथ न छोड़ो, तुमसे दिल टूट चुका था। मगर तुमने, डराकर भी बाँध लिया। इस मामले में हम अकेले थे, अब दो-

दो हैं। भेद किसी दिन खुलेगा, तब वक्त बच निकलना है, या पुख्ता सूरत निकाल लेनी है। तुम हमसे मिले, खज़ाञ्ची से भी, हमारा खज़ाञ्ची का यही हाल। हम एक दूसरे को फाँसना भी चाहते हैं। खज़ाञ्ची सरकार की मदद लेगा।"

"पहले हमको भेद बतला दिया होता ?"

"तो न उधर का फँसना होता, न इधर का।"

"अब तो सारा संसार फँस गया।"

"नहीं तो मतलब नहीं गठ रहा था।"

"रुपये रानी जी के पास नहीं, यह टेढ़ा है।"

"टेढ़ा हो, सीधा, बचत न थी अगर तुम बीजक रख लेते।"

"कहो, बचत के लिए दे दिया।"

"नहीं, मर्दानगी के लिए।"

(२७)

मुन्ना बुआ के पास गई। बुलाकर बाग़ ले गई। सूरज नहीं डूबा। पेड़ों पर सुनहली किरणों का राज है। तेज़ हवा बह रही है। बुआ का शानदार आँचल उड़ रहा है। मुन्ना सिपाही या फ़ौजी हिन्दुस्तानी औरत की तरह दोनों खूँट कमर में खोंसे हुए है। अनन्नास के झाड़ की बग़ल में मौलसिरी का बड़ा पेड़ है, तने के चारों ओर कमर भर ऊँचा पक्का गोल चबूतरा बँधा हुआ है। दाईं ओर कुछ दूर तालाब, पीछे और बाईं ओर ऊँची चारदीवार, सामने कोठी; वही जगह जहाँ प्रभाकर रहता है। मुन्ना देर तक बैठी हुई बरामदे पर आँख गड़ाये हुए बुआ को फूल-पत्तियों की बातचीत में बहलाये रही।

प्रभाकर के बरामदे पर एक चिड़िया न दिखी। बुआ से उसने कहा, "कैसा समय है?"

"बहुत अच्छा।"

"क्या चाहता है जी?"

"बहुत कुछ।"

"सबसे पहले क्या?"

"हमको लाज लगती है। हमारा जी कुछ नहीं चाहता। जब भाग फूट गया, तब चाह कैसी?"

"यह तो हमारे लिए भी है। लेकिन न जाने क्यों, चाहना पड़ा, भाग को जगाना पड़ा।"

बुआ का ब्राह्मणत्व ज़ोर मारने को था, मगर सँभल गईं। कहा—"जैसा कहा जाता है, वैसा करती ही हूँ।"

"हमको रानी जी की हैसियत से कहना पड़ता है। तुम यह समझ चुकीं कि पीछा नहीं छूटता। तुमको ऐसा करना चाहिए कि पीछा छुड़ा कर मर्द भगे।"

"अच्छा नहीं जान पड़ता। परमात्मा के घर जाना है। जी को बेपरदगी पसन्द नहीं। लाज बड़ी चीज़ है। दूसरा ज़बर्दस्ती खोलता है तो बचाव की जगह रहती है।"

"तुमने दिल दे दिया। यह दिल मर्द को न दो। लेने लगोगी तो मालूम होगा कि वह तुम्हारा नहीं। या तो वह तुम पर है या तुम उस पर। आज तक मर्द को ही तुमने अपने ऊपर पाया होगा। अब उल्टा नज़र आयेगा। बचत की और जगह मिलेगी। मर्द झुका रहेगा।"

बुआ को बल मिला। पूछा—"क्या मर्द के पीछे लगना होगा ?"

"हाँ, और वह इतना बड़ा मर्द है कि यहाँ उससे बड़ा मर्द नहीं।"

"वह कौन है ?"

"वह राजा है। वही यह अपमान कराता है। आज तुमको रानी का सम्मान दिया जायगा। साथ सिपाही रहेंगे। यह न समझना कि तुम रानी नहीं, बुआ हो। कभी यह न ज़ाहिर करना कि किसी मतलब से तुम गई हो। तुम्हारे साथ सब पुलिस के सिपाही रहेंगे। ख़ूब याद रहे, कहना, मैं रानी। तुमको कोई पहचान न पायेगा। मैं साथ रहूँगी, लेकिन दूर। जो सिपाही बहुत पास रहेगा, उसको अपना जिगरी मत समझना।"

"हमको डर लगता है।"

"हम कई आदमी साथ रहेंगे। डर की कोई बात नहीं। कहो, क्या कहोगी।"

"मैं रानी।"

"हाँ।"

सन्ध्या की छाया पड़ने लगी। मुन्ना ने बरामदे की तरफ़ देखा, कोई नहीं देख पड़ा। बुआ को साथ लेकर लौटी। हवा और सुहानी हो गई। बुआ को पहले शङ्का थी, मगर हृदय के कपाट जैसे खुल गये; जान पड़ा, संसार में धर्म का रहस्य कुछ नहीं—सब ढोंग है।"

बुआ को टहलने के लिए छत पर छोड़कर मुन्ना सिपाही के पास गई और उस तरफ़ जाने के लिए कहा।

सिपाही ने कहा—"वह देख, बरामदे का दरवाज़ा बन्द है। वहाँ,

माल की निगरानी करने वाला जाता है।"

"वहाँ कोई रहता नहीं ?"

"नहीं।"

"तुमको और कुछ मालूम हुआ ?"

"हाँ, जमादार ने सब को हाज़िर रहने के लिए कहा है, और यह ख़बर है कि रानी जी ने इनाम भेजा है, सब सिपाही इस कोठी के आ जायँगे, तब दिया जायगा।"

[२८]

रात आठ का समय होगा। प्रमोद वाले कमरे में राजा साहब बैठे हैं। कुल दरवाज़े और झरोखे खुले हैं बड़े-बड़े। सनलाइट का प्रकाश। तेजी से, लेकिन बड़ी सुहानी होकर हवा आती हुई। दूर तक सरोवर और आकाश दिखता हुआ। सरोवर में बत्तियों की जोत वाले कमल बिम्बित। कहीं-कहीं हवा से होता लहरों का नाच दिखता हुआ। चारों ओर साहित्य, संगीत, कला और सौन्दर्य का जादू। साज़िन्दे बैठे हैं। कान के बाहर से साज चढ़ाकर बजाने की आँख देख रहे हैं। बेबसी से बचने की उम्मीद भी है। प्याले चल चुके हैं। फ़र्श पर बिछी ऊँची गद्दी पर एजाज़ और राजा बैठे हैं। एक बग़ल प्रभाकर है। नीचे-क़ालीन-बिछी चद्दर पर साज़िन्दे।

राजा साहब ने एजाज़ से पूछा, एजाज ने सम्मति दी। साज़िन्दों ने अपने-अपने साज़ पर हाथ रक्खा। एजाज़ ने गाया—

"ज़ाहिद, शराबेनाब से जब तक वज़ू न हो,
क़ाबिल नमाज पढ़ने के मसजिद में तू न हो।
पहलू से दिल जुदा हो तो कुछ ग़म नहीं मुझे,
ऐ दर्देदिल जुदा मेरे पहलू से तू न हो।
वह गुमशुदा हूँ मैं कि अगर चाहूँ देखना,
आइना में भी शक्ल मेरी रूबरू न हो।
शाखें उसीकी हैं यही जड़ है फ़साद की,
पहलू में दिल न हो तो कोई आरज़ू न हो।
मसजिद में मैंने शेख को छेड़ा यह कहके आज,
मय लाऊँ मैकदे से जो आबेवज़ू न हो।
सारी दमक-चमक तो इन्हीं मोतियों से है,
आँसू न हो तो इश्क़ में कुछ आबरू न हो।

फिर गाया—

"बाजी कहूँ बैरन, बिखभरी सवत बाँसुरी,
अधर-मधुर ध्वनि नेक सुरन सों
कूक कूक तड़पाय, सखी री, वाकी
गाँस फाँस जिय हूक। छन आँगन, छन
चढ़त अटा पर, कर मल मल
पछितात सेज पर,
बैरन सवत सताये, चाँद,
रह-रह के तान नई फूँक।"

ठुमरी का रङ्ग जमा। राजा साहब ने प्रभाकर से गानेका अनुरोध किया। प्रभाकर ने गाया—

"प्रथम मान ओङ्कार।
देव मान महादेव,
विद्या मान सरस्वती
नदी मान गङ्गा।
गीत तो सङ्गीत मान,
सङ्गीत के अछर मान,
बाद मान मृदङ्ग,
निरतय मान रम्भा।
कहें मियां तानसेन,
सुनो हो गोपाल लाल,
दिन को इक सूरज मान,
रैन मान चन्दा।"

प्रभाकर के गाने के भाप पर तूफ़ान उठा। एजाज़ की गायिका हिली। स्वदेशी आन्दोलन में आज की धनिक और श्रमिक की जैसी समस्या न थी; पर आन्दोलन को असफल करने के लिए यह समस्या लगाई गई थी। प्रभाकर विचार करता था तबतक साहित्य द्वारा रूस के जन-आन्दोलन की खबरें आने लगी थीं। ज़मींदार मुसलमान स्वदेशी के तरफ़दार थे; इसलिए मुसलमान रैय्यत बहुत बिगाड़ नहीं खड़ा कर सकी। पुराणों का राज्य समाज में तब और प्रबल था, बादशाहत का लहजा नहीं बिगड़ा था। प्रभाकर सोचता हुआ बैठा

रहा। गाने की तरङ्ग उठकर जैसे निकल गई। एजाज़ उसकी गम्भीर मुद्रा से प्रभावित हुई। राजा साहब भी खामोश बैठे रहे। देशप्रेम जुआ था। रौशनी, पश्चिम का बानिज। स्वामी विवेकानन्द की वाणी लोगों में वह जीवनी ले आई, खास तौर से युवकों में, जिससे आदर्श के पीछे आदमी जगकर लगता है। प्रभाकर राजनीति में इसीका प्रतीक था। धैर्य से बैठा रहा।

इशारा पाकर साज़िन्दे चले। प्रभाकर उठने को था कि दिलावर भीतर आया; राजा साहब के कान में कान लगाया। खबर राजनीतिक है। राजा साहब ने प्रभाकर के सामने पेश करने के लिए कहा। दिलावर उछल पड़ा। कलकत्तावाले सुबूत दिलायें:—वह कागज़, नज़ीर के नाम से यूसुफ़ का आकर ठहरना, बातचीत करना, होटल में ग़लत नाम लिखाना।

एजाज़ ने हुलिया पूछा। आदमियों ने बताया। एजाज़ खामोश हो गई।

प्रभाकर आग्रह-धैर्य से सुनता रहा। राजा साहब ने धन्यवाद देकर सबको बिदा किया। इनाम की घोषणा की।

राजा राजेन्द्र प्रताप ने प्रभाकर से पूछा—"आपका क्या अन्दाज़ है?"

"चर है, सरकारी।"

"अब हमको एक छन की देर नहीं करनी। कलकत्ता रवाना हो जाना है। बँध गया। हमारे पास भी मसाला है। यह वही आदमी है।" एजाज़ ने कहा।

"लिखा प्रमाण हमको दीजिए।" प्रभाकर ने कहा।

राजा साहब ने कहा—"नहीं, हमीं रक्खेंगे वैरिस्टर साहब से सलाह लेंगे, इस तरह आपका भी हाथ हो गया।"

"तो हमें भी आपके साथ या कुछ पीछे, या दूसरे रास्ते से चलना चाहिए।"

आप परसों या और दो रोज़ बाद आइए।

प्रभाकर शान्त भाव से उठा और कहा—"अच्छा, तो आज्ञा दीजिए।"

राजा साहब ने नमस्कार किया।

[२६]

मुन्ना ने देखा, दस बज गये। सिपाहियों को २०) २०), रुपये इनाम दिया था। बाज़ार से कपड़ा आ गया था। टुकड़े काटकर साफ़े बना लिये। रानी के अपमान का प्रभाव सबपर है। सब चाहते हैं, राजा ऐसा न करें कि उनके रहते एजाज़ को रक्खें।

डंडे सबके हाथ में, पुलिसवाले नहीं, मिर्ज़ापुरी। चमरौधे की नोक देखते, सिंहद्वार की बत्ती के इधर-उधर टहल रहे हैं।

रुस्तम को सिखा दिया। चलने और पहुँचने का रास्ता और समय मुक़र्रर कर दिया। पहरे की दो तलवारें निकलवा लीं। रुस्तम को दीं। एक बुआ के बाँधकर ले चलने के लिए, एक ख़ुद बाँधे रहने के लिए। एकान्त में दो घन्टे तक रहना है कहकर ध्वनि में समझा दिया, और विश्वास बँधा दिया कि बुआ को उसने समझा दिया है।

बुआ उसकी बात पर आ चुकी थीं, एक सत्य, एक न-जाना दबाव

एक तड़प थी जिससे उनके पैर उठे। ढाढस बँधा, मुन्ना मिलेगी। कुछ बिगड़ने न पायेगा, अगर वे ख़ुद न बिगाड़ बैठीं।

बुआ को सबसे पहले मुन्ना ने खिड़की से निकाला। सिपाहियों को यह बात नहीं मालूम। रुस्तम कोठी की खिड़की की दूसरी तरफ़ खड़ा राह देख रहा था। दोनों कन्धों पर पेटी से बँधी म्यान के साथ दो तलवारें लिये था। मुन्ना ने बुआ को रुस्तम के हवाले किया और लौटी। मन में ब्राह्मणों के सत्यानाश का दरवाज़ा खोला।

बुआ शरमाईं। मुन्ना को देखकर एक दफ़े जैसे बल खा गईं। सँभल कर निगाह बदली और रुस्तम के साथ चल दीं।

मुन्ना मुस्कराई। जमादार के पास आई। सिपाहियों को मिठाई और पूरी और दस-दस बीड़े पान बाँध लेने के लिए बाज़ार भेजा। दो घंटे का वक्त निकाला। जमादार को एकान्त में लेकर बातचीत करने लगेगी।

[३०]

रुस्तम बुआ को लेकर चला। रात के दस के बाद का समय। गढ़ सुनसान। मर्दाना बाग़ से चला। बुआ को शङ्का हुई। फिर मिट गई।

"देखती हो दो तलवारें हैं?" रुस्तम ने प्रेमी गले से पूछा।

"हाँ," शरमाकर बुआ ने कहा।

"एक तुमको बाँधनी है।"

"हाँ?"

"बाँधना आता है?"

"नहीं।"

"हमी बाँधेंगे। सुना है?"

"हाँ।"

"इसका मतलब समझ में आया?"

बुआ लजा गई। सामने आमों के पेड़ थे। रुस्तम बढ़ा। एक की झुकी डाल पर दोनों तलवारें टाँग दीं।

"यहाँ सिर्फ़ हम हैं और तुम।"

बुआ शरमाईं। रुस्तम का पुरुष पूरी शक्ति पर था। कहा—"उस रोज़ नहाकर तुम जैसी निकलीं, वैसा ही हो जाना है।"

बुआ का हाथ रुका। जी ऊबा।

रुस्तम ने पूछा—"तालाब में और लोग थे, वे क्यों थे?"

"हमको नहीं मालूम।"

आवाज़ से रुस्तम समझ गया कि जमादार का कहना दुरुस्त; वे फँसाये गये, अपनी तबियत से नहीं गये।

घबराया कि इसका धर्म बिगाड़ा तो बुरा हाल न हो; फिर सोचा, मुन्ना का इशारा कुछ ऐसा ही है।

कहा—"हम वे हैं जिनके बहुत-सी बीबियाँ होती हैं?"

"यह हमारे यहाँ नहीं?"

"तुमको आज हमारी बीबी बनना होगा।"

"मैं बीबी नहीं बनती।"

"तुमने उससे कुछ कहा, उसकी बात मानी?"

"ज़बरदस्ती कहलाने से कोई कहना है या मानना।"

"लेकिन हमारे साथ के लिए तुम बात हार चुकी हो।"

"मैं बात नहीं हारी।"

"यह तलवार कैसे बाँधी जायगी? कमर नापनी पड़ेगी या नहीं? इससे कुछ समझ में नहीं आया? राजे से बातचीत हँसी-खेल है? हम बग़ल में रहेंगे, इससे तुमको इशारा कर दिया गया, तुम्हारी मंज़ूरी ले ली गई, इतनी दूर तुम निकलकर आ गईं। यहाँ हम पकड़ जायँगे, तो कोई क्या कहेगा? ये दोनों इतनी रात को यहाँ क्या करते थे, क्यों आये थे, इनका आपस में क्या रिश्ता है? हम तभी बच सकते हैं जब मियाँ-बीबी—तुम रानी, हम राजा। वहाँ तुमसे क्या कहलाया जाना है?"

बुआ झेपीं, मगर यह झेंप मंज़ूरी नहीं।

"हम तुम्हारी कमर नापें?"

"हे भगवान!" बुआ अन्तरात्मा से रोईं।

"कौन हो तुम?" रुस्तम के पास पहुँचकर किसीने पूछा। भरी आवाज़।

रुस्तम डाल की ओर बढ़ा और मूठ पकड़कर तलवार निकाल ली।—"सुअर, कौन है तू?" पूछा—

तलवार के निकलते ही पिस्तौल की आवाज़ हुई, मगर आदमी के निशाने पर नहीं; मर्द का गला गरजा—"भग यहाँ से, या रख तलवार, नहीं तो खाता है गोली।"

रुस्तम भगा। बग़ीचे में पहले का जैसा सन्नाटा छा गया।

प्रभाकर डेरे आ रहा था। यही उसका रास्ता था। आते हुए देखा। बुआ से पूछा,—"आप कौन हैं?"

घबराहट के मारे बुआ का बोल बन्द हो गया, प्रभाकर खड़ा रहा। धैर्य देकर पूछा,—"आप कौन हैं?"

"हम बुआ।" लड़की के स्वर से, रक्षा पाने के लिए, बुआ ने कहा।

देर अनुचित है सोचकर प्रभाकर ने कहा,—"बचना है तो हमारे साथ आइए।"

"यह तलवार ले लूँ।"

तलवार एक और है, समझकर प्रभाकर चौंका। कुछ समझ में न आया। कहा,—"हमारी निगाह में अब तलवार का ज़माना नहीं रहा। जिनकी तलवार होगी, वे ले लेंगे। यहाँ इस आदमी के अलावा और कोई था?"

"और कोई नहीं?"

"यह कहाँ से तुमको ले आया?"

"मुन्ना ने इसके साथ कर दिया था और बहुत से काम करने के लिए कहे थे।"

"किसके ख़िलाफ़?"

"राजा के।"

"आदमी किनके?"

"राजा के।"

"तरफ़दारी किनकी?"

"रानी की।"

"अच्छा" प्रभाकर मुस्कराया।

"आपको रहना मंजूर है या हमारे साथ चलना ?"

"हम एक छन इस नरकपुरी में नहीं रहना चाहते।"

"हमारे साथ आइए।"

प्रभाकर बढ़ा। बुआ पीछे हो लीं। तालाब के किनारे बुआ को खड़ा किया। दो-एक सवाल और पूछे। समझ की निगाह उठाई और अपने ज़ीने की ओर चला।

कोठी पर कमरे में गया। दो साथियों को बुलाया। कहा,—"बाहर एक औरत है। ललित, उसको लेकर बेलपुर जाओ। हम दो-तीन दिन में आते हैं। महराजिन बताना। भेद न देना। बाहर वालों से मिलाना मत। काम किये-कराये जाना। इसको भी लगाये रहना। मामला रङ्ग पकड़ रहा है। यहाँ से आजकल में बोरिया-बधना समेटना है। प्रकाश ताली लगाकर चले आयेगें। गढ़ की चारदीवार में बहुत से दरवाजे हैं। हमारे की ताली दूसरे के पास भी है या नहीं, सही-सही नहीं मालूम।"

साथियों को लेकर प्रभाकर नीचे उतरा। चिन्ता की हल्की रेखा मन पर। बुआ के पास पहुँचकर कहा,—"इस आदमी के साथ चली जाओ, यह जैसा कहे करो। कोई हाथ नहीं उठाएगा। बाद को जहाँ कहिएगा पहुँचा देगा।" बुआ को जान पड़ा, एक अपना आदमी, जिसको औरत अपना आदमी कह सकती है, बोला। वे सहमत हुईं।

प्रकाश ताली लेकर चला।

[३१]

रुस्तम के जैसे पर लग गये ऐसा भगा। फैर से दिल धड़का, पैर

उठते गये। खेत से भगे सिपाही की तरह सिंहद्वार में घुसा। बात रही, हथियार नहीं डाला। हाँफ रहा था। जैसे दम निकल रहा है। ३-४ सिपाही बाज़ार गये थे, बाक़ी हैं। मुन्ना भी है।

रुस्तम को देखकर लोग चकराये। मुन्ना की आँख चढ़ गई। पूछा, "क्या है रुस्तम?"

रुस्तम बोल न पाया।

रुस्तम के घबराये हुए हाँफते रहने पर सिपाहियों को उतना आश्चर्य न हुआ जितना तलवार लिये रहने पर।

जटाशङ्कर का काठ में पैर पड़ा। धीरज उनके स्वभाव में है बैठे देखते रहे।

रुस्तम ने आधा घन्टा लिया। मुँह धोया गया, कुल्ले कराये गये, सर पर पानी के छींटे मारे गये, पंखा झला गया।

रुस्तम ने कहा,—"देव है। आदमी ऐसा नहीं होता। गढ़ के अन्दर ऐसा आदमी!"

लोग कुछ नहीं समझे। ऐसे आदमी के बारे में किसीसे नहीं सुना, नहीं देखा।

मुन्ना ने कहा,—"हम पूछकर बताते हैं।" रुस्तम को बुलाकर ले चली।

एकान्त में पूछा,—"क्या हुआ?"

रुस्तम ने कहा,—"एक आदमी मिला। मैं भगा, नहीं तो गोली का शिकार हो गया होता।"

मुन्ना को नहाकर लौटी सूरत याद आई। पूछा,—"कैसा है?"

रुस्तम ने एक बाबू का हुलिया बतलाया।

"बुआ का क्या हुआ?"

"हमको उसीकी कारवाई मालूम होती है।"

मुन्ना को विश्वास हो गया।

ठहरकर पूछा,—"बुआ क्या उस आदमी के साथ रह गई?"

"हाँ", रुस्तम ने कहा।

मुन्ना ने तीन सिपाही लिये। रुस्तम से घटनास्थल ले चलने के लिए कहा।

लोग चले। जहाँ घटना हुई थी वहाँ अँधेरा है। रुस्तम ने ढाल देखी। दो म्यान और एक तलवार लटक रही है। बुआ का निशान नहीं।

मुन्ना तुरन्त घूमी। जहाँ प्रभाकर का जीना है चली। आदमी भी साथ।

तब तक प्रकाश ताली लगाकर लौट चुका था। लोगों ने ज़ीने के दरवाज़े सिपाही की हैसियत से आवाज़ें लगाई। कोई न बोला।

कोठी घूमकर मलखाने के पहरे से जाना चाहा, दरवाज़े बन्द मिले। खुलते ही नहीं।

एक दफ़े पुलिस की याद आई। खज़ाञ्ची बैठा न रहेगा, सोचा। राजा से रानी के बदले की बात गई, बल जाता रहा।

रुपये निकालने गई। पाँच रुपये और दस रुपये के नोटों के बन्डल दो-दो करके निकाल सके, इस तरह रक्खे थे। एक हज़ार के

करीब नोट निकाले और ५०) ५०) रुपये सिपाहियों को और दिये। बाक़ी जमादार को।

नोटोंवाली तिजोड़ी बाहर गड़वा दी।

[३२]

घटना क्या, अनहोनी हो गई। मुन्ना को खज़ाञ्ची का डर था। जमादार भी बचत चाहते थे। इसीसे उलझते गये। बेधड़क बढ़े। फँसे सिपाहियों ने रानी का पल्ला पकड़ा। निगाह धर्म पर थी। तिजोड़ी के गाड़ जाने पर सिपाहियों की नसें ढीली पड़ीं। एक ने डूबते स्वर से कहा, रानी से राजा का सितारा बुलन्द है। मुन्ना ने कहा, गई, चलते ठोकर लगी, ईंट दूसरे की रक्खी है, वह रानी का ही आदमी है, नादानी कर रहा है; न इधर का होगा न उधर का। मुमकिन, बदला चुकाने को रानी ने दूसरा हथियार चलाया हो। धीरज छोड़ने की बात नहीं; कल-परसों तक आज का अँधेरा न रहेगा। अगर कहो कि इसके लिये सज़ा होगी, तो काँटा न लगेगा। सब लोग बाल-बाल बच जायेंगे। रुपये भी मिलेंगे। अभी साँस काफ़ी है।

सिपाही ख़ुश हो गये। सबको अपनी-अपनी जगह जाने के लिए मुन्ना ने कहा। कहा,—"रानी का हाल मालूम हो तो जी में जी आये। यह कहकर रात-ही-रात नई कोठी की तरफ़ चली।

जहाँ दासियाँ सोती हैं, वहीं घुसकर, एक बग़ल लेट रही। नींद नहीं आई। दूसरे को बहलाने से अपना जी नहीं मानता। तरह-तरह की उधेड़-बुन से रात कटी। पौ फटी कि उठकर बुआ के महल के लिए चली। नई कोठी में शोर था कि सूरज की किरन के साथ जहाज़

खुल जायगा। जागीरदार साहब कलकत्ता रवाना हो रहे हैं। मुन्ना ने एक कहार को तैनात किया कि जागीरदार साहब के साथ कौन-कौन जाता है, देख आये, रानी जी का हुक्म है।

कहार मुस्कराया, कहा—"वे तो जायेंगी ही।"

"कौन ?"

"कौन हैं जो गाती है ?"

"और कौन-कौन जाता है; खास तौर से यह देखना, कौन-कौन औरत जाती है; उसके साथ एक ही बाँदी है, और भी कोई यहाँ की बाँदी जाती है या नहीं। रानी साहबा इनाम देंगी। समझ गया ?"

"रानी साहबा अभीतक चाहती हैं। मैंने अरई कहारिन को छेड़ दिया, कहा, तेरी शक्ल उससे मिलती है। उसने कह दिया। वह एक पन्दरहीं नहीं बोली। अरई के लिए माफ़ी मँगा ली, तब दम लिया सो भी कब जब अबकी तनख्वाह से गुच्छी-करनफूल बनवा देने का कौल करा लिया।" कहकर मटरू हँसा। अपनापे से पूछा,—"मुन्ना, तेरी कैसी कटती है ?"

"फिर तो नहीं माफी माँगेगा ?"

"मैंने कहा जात की है, कहीं बैठ जा, या बैठा ले। राम दोहाई, आँख झप जाती है जब देखता हूँ, तेरे लिए बारोमहीने कातिक है। सिपाही कुत्ते जैसे पीछे लगे रहते हैं। बहँगी में तीन-तीन को लादकर फेकूँ।"

"अच्छा चला जा। देखें, कितनी जानकारी रखता है। इनाम में एक थान के दाम मिलेंगे; मगर पक्की खबर दे।"

मटरू ख़ुश होकर जहाज़ घाट की ओर चला।

राज का ही जहाज़ है। मटरू जानता है। आदमियों में सबसे छना, कहार। पहचानकर सबने राह दे दी। उस वक़्त तक राजा या एजाज़ का आना नहीं हुआ था। मटरू सारा जहाज़ घूम आया। फिर एक किनारे खड़ा हुआ।

आधे घन्टे के अन्दर एजाज़ की पालकी आई। एजाज़ किनारे उतरकर काठ की सीढ़ी से जहाज़ पर गई—इनाम भेजा।

राजा की सवारी आई। शान से चढ़े। लोग चढ़ने लगे। जहाज़ खुला।

मटरू ने एक-एक को देखा। रह जाने वाले लोगों के साथ लौटा। एक पहर दिन चढ़ चुका है।

लौट कर मुन्ना से एक-एक बात कही। और पुरस्कार के लिए लाचार निगाहों से देखकर मुस्कराया।

मुन्ना समझ गई। संवाद से ख़ुश होकर पीपल वाले चबूतरे के पास दुपहर ढलते बुलाया। मटरू मानकर खुले दिल से दूसरे काम को चला। मुन्ना पुरानी कोठी चली।

[३३]

प्रभाकर सचेत हो गया। मौक़ा देखकर बचा हुआ मसाला पानी में फेंक दिया और प्रकाश को दिन होने पर पास के केन्द्र भेज दिया। दो आदमी और रहे और प्रभाकर। देख-रेख के लिए दिलावर और दो नौकर हैं, जिनके बाहर के मानी छत से हैं। श्री रघुनाथ जी वाली छत से, जल भरने वाले कहारों से, दिलावर पानी चढ़वा लेता है।

उसी ज़ीने से दिन रहते-रहते नौकर और पाचक एक दफ़ा बाहर की हवा खा आते हैं।

मुन्ना जमादार से मिली। जमादार के होश फ़ाख्ता थे। राजा को बुआ के ग़ायब होने की खबर नहीं दी गई।

मुन्ना को देखने पर साथी का बल मिला। रास्ता निकालने की सोची। पूछा—"क्या इरादा है।"

मुन्ना ने कहा—"बुआ लापता हैं, यह सबसे ख़तरनाक है।"

"क्या तअज्जुब, रुस्तम ने उड़ा न दिया हो।" जमादार ने कहा।

"हो सकता है, मगर बात झूठ भी हो सकती है। पहले पता लगा लेना चाहिए। एक बात जंचती है। उधर एक आदमी रहता है। वह कोठी में ही रहता है। वह कौन है, उसका हाथ हो सकता है।"

"हाँ," जमादार सँभले, "राजा का गुप्त रूप है, यह रामफल से सुना है। उन लोगों की आमदरफ्त दूसरी है। वहाँ पुजारी जी का हाथ है।"

"तुमको यह नहीं मालूम, रहने वाला काला है या गोरा है?"

जमा०—"या एक है या तीन, नहीं।"

मुन्ना—"एक दूसरी शाख है?"

जमा०—"हाँ"

मुन्ना—"माई के लाल बहुत हैं।"

जमा०—अब बचना कठिन है।"

मुन्ना—"जहाँ तक हो आंट पर न चढ़ो।"

जमा०—"कैंची काटती हो ?"

मुन्ना—"हमारे ही साथ सती होना है।"

जमा०—"तभी तो कहा, कैंची काटती है।"

मुन्ना—"बस, अब साथ न छोड़ो। अगर भगें तो साथ।"

जमा०—"रास्ता और क्या है ? इतनी बड़ी चोरी के बाद गाँव में क्या मुँह दिखावेंगे और क्या पुलिस के हाथ बचेंगे ?"

मुन्ना—"हमारा प्रेम ही ऐसा है। पति को खा गई।"

जमा०—"हमारा ही कौन कमज़ोर है ?"

मुन्ना—"इस आदमी का पता लगाना है। जमादार अब ताक़त बाहर की आ गई है। खतरा बहुत है। हमारे पास धन है, लेकिन इसको इस रूप में हटाकर हम बहुत दिन खा नहीं पायेंगे। सहारा लेना है। कुछ मददगार बनाने हैं।"

जमा०—"हाँ।"

मुन्ना—"राजा का रवाना होना मतलब से खाली नहीं।"

जमा०—"कुछ लगाया ?"

मुन्ना—"खज़ाञ्ची की तरफ़ की कोई कार्रवाई होगी। इसका भी, जिसके लिए मैं कह रहा हूँ, कोई हाथ हो सकता है।"

जमा०—"हमारी हैसियत तो इतनी ही है। पहले तो यह कि नम्बरी नोट चलाये नहीं चलेंगे। दूसरे, इतना रुपया हज़म करने वाला हमारा पेट नहीं।"

मुन्ना—"मगर रुपयों के साथ अब जान पर ही खेलना है, यानी जान रहते रुपये न जायँ, और जायँ तो हम दुनिया भी दूर तक देख लें

इतने रुपयों से इतना भेद खुल सकता है। सिर्फ़ पकड़ में नहीं आना।"

जमा०—"अब हमको बयान बदल देना है।"

मुन्ना—"हाँ, तभी बचाव है।"

जमा०—"सन्दूक़ गाड़ दिया गया। ताली फेंक दी गई। बीजक अपने पास है ही। उसमें लिखा है। क्यों री, तू इतनी भी बँगला नहीं पढ़ी कि मालूम हो जाय कि कितने-कितने के नोट हैं?"

मुन्ना—"यह मालूम हो जायगा। दम कहाँ मिला? मगर ख़र्च बहुत होगा।"

[३४]

कहार से बातें मालूम करके, इनाम देकर, मुन्ना पिछली तरफ़ वाले घाट पर चलकर बैठी। मन में खलबली थी। बुआ का पता नहीं चला। जल्द कोई कार्रवाई होगी दिल कह रहा था। धड़कन त्यों-त्यों बढ़ रही थी। बचाव की सूरत नज़र आती थी और कुछ देर बाद मिट जाती थी। मुन्ना ने देखा, किरनों में कई हाथ पानी के नीचे मछलियाँ दिख रही हैं। फिर देखा, पास की डालवाले पत्तों की रेखाएँ गिनी जाती हैं। दूसरी तरफ़ आँख उठाई, सघन बग़ीचे में छिपने लायक़ अँधेरा नहीं। सब कुछ खुल गया है। अपने भविष्य पर डरी।

इसी समय देखा, जीने का दरवाज़ा खुला, एक युवक निकला, जीना बन्द किया और घाट की तरफ़ चला। उसकी शांति में घबराहट नहीं, बड़ी दृढ़ता है। एक ऐसा सङ्कल्प है जो आप पूरा हो चुका है।

जवानी की वह चपलता नहीं जो औरत को डिगा देती है, बल्कि वह जो साथ लेकर ऊपर चढ़ जाती है, और जहाँ तक औरत की ताक़त है वहाँ तक चढ़ाकर अपने पैरों खड़ा करके, और चढ़ जाती है। चरित्र के पतन से बचकर और भले कामों की तरफ़ रुख फेरती है। मुन्ना को ज्ञान पड़ा, उसका हृदय खुल गया। वह निर्दोष है। यह युवक उसको इस अवस्था में सदा रख सकता है। दिल की बातें उससे कह देने के लिए उतावली हो गई।

जैसे-जैसे प्रभाकर पास आता गया, मुन्ना के बुरे कृत्य भी जो नीची तह के किये हुए थे—उसके ऊँचा उठने के कारण छुटे हुए, काई की तरह सिमटकर पास आते गये। प्रभाकर की चाल के धक्के से निकलते गये। मुन्ना जैसे बदल गई प्रभाकर से मिलने के लिए। जो मुन्ना होगी उसके बुरे संस्कार छुटने लगे।

वह अपने स्वरूप में आई। अभीतक प्रभाकर की नज़र नहीं पड़ी। अपने काम की बातें सोच रहा था।

हवा चल रही थी। पेड़ों की पत्तियाँ और डालें हिल रही थीं। चिड़ियाँ उड़ रही थीं। सरोवर पर लहरें उठ रही थीं। उन पर किरनें चमक रही थीं।

प्रभाकर आया। बाईं तरफ़ एक औरत की छाँह देखी। उसने घाट के फ़र्श पर सर टेककर प्रणाम किया। प्रभाकर ने विचारशील आँखें उठाकर देखा। पूछा—"कौन हो?"

"मैं मुन्ना हूँ।"

"क्या काम है?"

"मैं रानी साहबा की दासी हूँ।"

प्रभाकर स्थिर हो गया। सोचा, कोई काम है। पूछा—"फिर?"

"आप कौन हैं, यह मालूम हो जाना चाहिए।"

"यह राजा साहब से मालूम हो जायगा।"

"वे तो चले गये हैं।"

"फिर लौट सकते हैं, या जहाँ गये हैं, वहाँ से।"

"आपके दिल में रानी साहबा की जगह है?"

"क्या है?"

"आप जानते हैं, राजा साहब के साथ रानी साहबा नहीं।"

प्रभाकर दुखी हुए।

मुन्ना को मौक़ा मिला। कहा—"रानी साहबा आपके लिए कुछ नहीं कर सकतीं अगर आप उनकी सहायता करें?"

प्रभाकर पेंच में पड़े। काट न चला। सहानुभूति आई। दिल कमज़ोर पड़ा। कहा—"हमारा काम दूसरा है।"

"वह कौन-सा?"

"क्या तुम और रानी साहबा उसमें हो?"

"हाँ, हम हर तरह आपके साथ होंगे।"

"हमको दोनों की सहानुभूति चाहिए।"

"रानी साहबा धन और जन से आपकी मदद कर सकती हैं।"

"विश्वास है। रानी साहबा से हमारी बातचीत हो सकती है?"

"हाँ।"

"मगर आज होनी चाहिए।"

"हाँ, आपसे शाम को यहीं मिलूँगी। आपको मालूम है, रानी जी के लिए दूसरे से बातचीत करना मना है।"

"हाँ।"

"मगर काँटा निकालने के लिए मिलेंगी।"

प्रभाकर कुछ न बोले। एजाज़ का स्वभाव उन्हें पसन्द है। रानी साहबा कैसी हैं, देखना चाहते हैं। उनका काम केवल मर्दों के हाथ से ज़्यादा औरतों के साथ से बढ़ेगा। स्वदेशी का, देशप्रेम का जितना प्रचार होगा, देशवासियों का कल्याण है।

"रानी साहबा पढ़ी-लिखी हैं?"

"जी हाँ।"

"सुन्दरी भी हैं?"

मुन्ना मुस्कराई। कहा—"हाँ, बहुत।"

"राजा साहब को व्यसन होगा। गाती भी हैं?"

"जी हाँ।"

"काँटा निकल जायगा। राजा साहब जिस रास्ते के पथिक हैं, रानी साहबा भी उसकी होंगी, तो मेल स्वाभाविक है।"

"वह कौन-सा रास्ता?—क्या हम लोग उस रास्ते आपके पीछे चल सकते हैं?"

"पहले तुम्हीं लोगों का काम है। यों फ़ायदा नहीं कि ज़मींदारी ज़मींदार की रहे: मगर यों है कि तुम अपने आदमियों के साथ रहो, अपना फ़ायदा अपने हाथों उठाओ। इसमें दूसरे तुमको बहका सकते हैं, बहकाते होंगे। बाज़ी हाथ आने पर, हम खुद जीने की सूरत

निकाल लेंगे। अच्छा, बताओ, यहाँ कोई औरत रहती थी जो लापता है?"

मुन्ना घबराई। प्रभाकर आँखें गड़ाये थे। झूठ नहीं निकली, कहा—"जी, हाँ।"

"वह कौन है?"

"वह कुमारी जी की फूफी-सास हैं। आपको मालूम है, वे कहाँ हैं?"

"हम नहीं कह सकते। मगर बचा दे सकते हैं। पुलिस के हाथ बुरा हाल होगा।"

मुन्ना ने पैर पकड़ लिये, कहा—"आप बचा सकते हैं। आपका काम करूँगी।"

प्रभाकर मुस्कराते रहे। कहा—"अच्छा नहाते हैं, शाम को आना। घबराना मत। हमारा काम, तुम्हारा काम है। अब चलो।"

मुन्ना ख़ुश होकर चली। जान पड़ा, भगवान ने बचा लिया।

प्रभाकर नहाने लगे।

[३५]

जमादार सूख रहे थे, चोरी खुलेगी, बहाना नहीं बन रहा। घबराये जो कलङ्क नहीं लगा, लगेगा, जेल होगी; बाप-दादों का नाम डूबेगा। राजा गये; दूसरी आफ़त रहेगी।

इसी समय मुन्ना मिली। जमादार ने देखा, उसमें स्फूर्ति है। उनकी बाछें खिल गईं, सोचा, बचत निकल आई।

मुन्ना ने अलग बुलाया। वे चले। दोनों घाट की चारदीवार की आड़ में एक मौलसिरी की छाँह में बैठे।

मुन्ना ने कहा—"अब किनारा साफ़ नज़र आ रहा है।"

"क्या बात है?" जमादार ने पूछा।

"एक महात्मा मिले हैं, उनसे आशा बँध रही है।"

"कहीं, धोखा तो नहीं?"

"नहीं, सिर्फ़ तुम्हारा विचार है कि कहीं नीचा न दिखा दो। नहीं तो, लकड़ी साफ़ बैठेगी।"

"कैसे?"

"पहले बताओ, तुम हमारे साथ रहोगे या नहीं।"

"हमने तो बीजक तक दे दिया!"

"ठीक है। बात यह, हम दूसरी चाल चलेंगे।"

"क्या?"

"रानी को दूसरी तरह हाथ में करना है। पहला वार खाली गया। वह राह कट गई, अच्छा हुआ। वह सूझ खज़ाञ्ची की थी, अपनी भी। अब लाठी भी न टूटेगी और साँप भी मरेगा।"

"समझ में नहीं आया।"

"जमादार बहुत गहरी बातें हैं। एकाएक समझ में न आयेंगी। खज़ाञ्ची का साथ किसी सरकारी आदमी से है। खज़ाञ्ची की मार्फ़त एजाज़ से राज़ लेना चाहता है और हमारे राजा साहब का। राजा साहब सरकार के खिलाफ़ फँस जायँगे; क्योंकि वे रास्ता बताने वाले हमारे नये गुरुदेव के मददगार हैं और गुरुदेव सरकार के खिलाफ़ कार्रवाई

करने वालों में हैं। स्वदेशी का जो आन्दोलन चला है, गुरुदेव उसमें हैं। सरकार चाहती है, बङ्गाल के दो टुकड़े कर दे। ज़मींदार ऐसा नहीं चाहते। उनको डर है कि स्थायी बन्दोबस्त फिर न रह जायगा। इसका देश में आन्दोलन है। सरकार के लोगों का कहना है, स्थायी बन्दोबस्त न रहने पर इतर जनों को फ़ायदा पहुँचेगा, मुसलमान जनता सरकार के पक्ष में की जा रही है। असली बात इतनी है। हम लोग बहुत काफ़ी बातचीत सुन चुके हैं। सच जो कुछ भी हो, मगर गुरुदेव की बात का असर पड़ता है। उन पर अपने आप विश्वास हो जाता है। बड़े अद्भुत आदमी हैं। इतर जन ही हम लोग हैं। हम लोग भी सहानुभूति और अधिकार चाहते हैं। यह हमको सरकार से तब मिलेगा, जब हम सरकार की जड़ मज़बूती से पकड़ेंगे। मगर हमको रहना तुम्हीं लोगों में है।"

"हमारे जो कुछ था, हम दे चुके।"

"हाँ, मगर समाज से डरते हो; हम समाज की बात कहते हैं।"

"भीमसेन ने हिडिम्बा से ब्याह किया, महाभारत में है, तो किसने उनको जाति से निकालकर बाहर कर दिया?"

"मगर हिडिम्बा के अधिकार वैसे न रहे होंगे जैसे द्रौपदी के।"

"अधिकार वैसे ही थे, भेद यह रह गया था कि एक राक्षस की बेटी रही, दूसरी क्षत्रिय की। क्या आप भी बदल गये?"

मुन्ना गम्भीर हो गई। कहा—"बुआ का पता इनको मालूम है। रुस्तम शायद इन्हींकी बातें करता था।"

जमादार ज़र्द पड़े। कहा—"कुल भेद खुला। बुआ ने एक-एक गाँठ सुलझाई होगी।"

"सम्भव। ताल पर चलना है। नहीं, गिरेंगे। बुआ राजा के साथ न थीं। बचाव का मिलकर बचकर रास्ता निकालना है।"

"बुरा हुआ। सरकार के खिलाफ़ हैं तो ज़रूर बचकर रहना है। हम भी पकड़ा सकते हैं अगर पकड़ में हैं।"

"हाँ, मगर नहीं। राजा ने रक्खा है तो मिल जाना चाहिए।"

"हाँ।"

"राजा खिलाफ़ न हों तो खिलाफ़ गवाही देते अकेले हो जायँगे, मगर खज़ाञ्ची का एक गरोह है, हम उसमें हैं, बचत है।"

"हाँ।"

"ये इसी कोठी में रहते हैं, तुमको मालूम था ?"

"नहीं।"

"राजा ने तुमसे छिपाया है। कोई होगा, जिसको देख-रेख सौंपी गई। यहाँ रहना मायने रखता है।"

"हाँ।"

"फिर साथ होते अड़चन नहीं। रानी का उपकार करेंगे। कारण साथ है। राजा को ये मिला दे सकते हैं।"

"हाँ।"

"आदमी सज्जन हैं। रानी से मिलाना है। बातचीत सुननी है। अगर रानी ने किसी की मार्फ़त बातचीत कराई तो मैं हूँगी; खुद की तो सुनूँगी। बहाना है।"

"हाँ।"

"इनका भेद मिलेगा, आगे भी मिलता रहेगा। इनको काम के लिए धन चाहिये। मैं मदद करूँगी। इस तरह इनका बाजू पकड़े रहना है। पूरी जानकारी हासिल होगी। जैसे अँधेरे में हूँ। तुमने लम्बी दुनियाँ देखी है।"

"हमारा देश छः सौ मील है।"

"तुम जगह देखना चाहो, चलो दिखा दूँ। रानी के पास ले चलते वक्त दूर से देख लेना छिपकर।"

[३६]

चार का समय, दिन का पिछला पहर रानी साहबा की फूलदानियों में ताज़े फूल दोबारा रक्खे गये। हार आ गये केले के पत्ते में लपेटे हुए। बर्फ़-क्रीम-फल तश्तरियों में नाश्ते के लिए आ गये। दक्खिन-वाले बड़े बरामदे में छप्परखाट पर थीं। दखिनाव तेज़ चल रहा था। इक्की-दुक्की दासी घूम जाती थी। दुपहर के आराम के बाद गद्दी से उठकर काठ के ज़ीने से रानी साहबा उतरीं और चन्दन की चौकी पर बैठीं जिस पर बढ़िया क़ालीन बिछा था। मुन्ना आई। बाहर की आज्ञा-वाहिनी दासी से कह आई थी, कोई न आये।

मुन्ना को देखकर रानी साहबा ने सहृदयता से पूछा—"क्या खबर है?"

मुन्ना ने प्रणाम करके दूसरे एकान्त वाले कमरे में बुलाया जहाँ प्रायः रानी साहबा रहती थीं। वे उठकर चलीं एक मख़मल की गद्दी वाली कुर्सी पर बैठीं। मुन्ना को स्टूल लेकर बैठने के लिए कहा। मुन्ना

पंखा यह चलाने के लिए बाहर आज्ञा दे आई, फिर स्टूल लेकर बैठी। प्रसन्न है, रानी ने ग़ौर से देखा। दिल में ग़म है, मुन्ना ताड़ रही थी। राजा साहब के लिए जगह है।

सँभलकर कहा—"हुज़ूर के दर्शन हुए। यहाँ एक भले आदमी टिके हैं। राजा साहब टिका गये हैं। पुरानी कोठी में रहते हैं। दूसरों की आँख बचाई जाती है। और भी उनके साथी हों, सम्भव है। आज पता चला है। बातचीत की है। राजा साहब गये, अब वे भी जायँगे। सच्चे और अच्छे पढ़े-लिखे आदमी हैं। अभी नौजवान हैं। तेजस्वी हैं। क्यों हैं, क्या हैं, यह हुजूर को और मालूम होगा। मैं समझती हूँ, उनसे काम निकल सकता है।"

"हमारे मनीजर के इतने पढ़े होंगे?"

"हाँ, जान ऐसा ही पड़ता है।"

"मनीजर को बुलाना होगा।"

"हुज़ूर, मैं मनीजर साहब की मार्फ़त बातचीत कराने का बीड़ा नहीं लेतीं। जब राजा साहब के खास हैं, तब मनीजर साहब से बातचीत नहीं भी कर सकते।"

"फिर क्या सलाह है?"

"आपका भला हो सकता है।"

"अच्छा, कब बुलाना ठीक होगा?"

"शाम के वक्त, दीयाबत्ती हो जाने पर।"

"बुला लेना। यहाँ से कलकत्ता जायँगे?"

"सरकार!"

"एजाज़ वालों में है ?"

"नहीं, यही आपको जान लेना है।"

"अच्छी बात है।"

"पालकी बड़ी ले जाने का विचार है।"

"ले जा।"

मुन्ना आज्ञा मिलने पर बाहर निकली। कहारों को बड़ी पालकी ले चलने के लिए कहा, ख़ास रानी जी वाली। कहारों ने तैयारी की। मुन्ना साथ पुरानी कोठी की तरफ़ चली। कहारों को अचम्भा हुआ। मगर चलते हुए सोचते रहे, रानी साहबा वहाँ कहाँ मरीं। तालाब की बग़ल पालकी रखाकर मुन्ना ने कहारों को हट जाने के लिए कहा। कहारों ने वैसा ही किया। दिल से उमड़ रहे थे जैसे कोई बात पकड़ी हो, कलङ्क पकड़ा हो। प्रभाकर तालाब के घाट पर बैठे थे। मुन्ना गई, और पालकी चलने के लिए रक्खी है कहा, प्रभाकर सन्ध्या की सुगन्ध के भीतर से चले। मुन्ना कुछ देर फिर उनकी चाल देखती रही।

[२७]

आमों की राह से होते हुए गुलाबजामुन के बाग़ के भीतर से मुन्ना पालकी ले चली। कई दफ़े आते-जाते थक चुकी थी। उमङ्ग थी। एक नई दुनिया पर पैर रखना है। लोगों को देखने और पहचानने की नई आँख मिल रही है।

खिड़की पर कहारों और पहरेदार को हटाकर दरवाजा खोलकर

प्रभाकर को ले गई। पंखे से समझ गई, रानी साहबा उसी बैठके में हैं। बड़े वाले में ले गई।

प्रभाकर ने देखा, एजाज़ वाले बँगले से यह आलीशान और खुशनुमा है। बड़ी बैठक है। छप्परखाट बड़ी मेजें बड़ी। आईने बड़े फूलदानियाँ बड़ी। दरवाज़े बड़े। झूलें बड़ीं, सनलाइट की बतियाँ भी बड़ी। अधिक प्रकाश, अधिक स्निग्धता, अधिक ऐश्वर्य, अधिक सजावट। संगमारवर का फ़र्श, खुला हुआ, हिन्दूपन के चिन्ह। दीवारों और छतों पर अत्यन्त सुन्दर चित्रकारी।

प्रभाकर को चाँदी की कुर्सी पर बैठालकर पास एक सोने के डन्डेवाली गद्दीदार कुर्सी रख दी। प्रभाकर साधारण दृष्टि में बड़प्पन लिए हुए देखता रहा। मुन्ना रानी साहबा के कमरे में गई। हाथ जोड़कर खबर दी।

रानी साहबा ने हार पहना देने के लिए कहा। फिर दूसरी दासी से घन्टे भर में भोजन ले आने के लिए कहा।

हार पहनाकर मुन्ना ने कहा, "रानी जी आ रही हैं।" जूतियों की मधुर चटक सुन पड़ी। प्रभाकर ने देखा, एक सुश्री सुन्दरी आ रही थीं। समझकर कि रानी हैं, उठकर खड़े हो गये। हाथ जोड़े। रानी साहबा ने म्लान नमस्कार किया। अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गईं। मिहमानदारी के विचार से आँचल गले में डाल लिया था।

प्रभाकर की ऐसी कुर्सी थी कि सनलाइट का प्रकाश मुँह पर पड़ता था। रानी साहब मुँह देखकर बहुत खुश हुईं।

हवा के साथ बाहर के बग़ीचे से फूलों की खुशबू आ रही थी। उनके आने पर उस बैठक में पंखा चलने लगा।

"आपका शुभ नाम?" रानी ने पूछा।

"जी, मुझको प्रभाकर कहते हैं।"

"आप यहाँ हैं, हमको न मालूम था। कितने दिनों से हैं?"

"यह आप राजा साहब से ......" प्रभाकर सहज लाज से झेंपे।

"आपका इधर राजा साहब के बँगले जाना नहीं हुआ?"

"जा चुका हूँ।"

"उसको देखा होगा?"

"जी, हाँ।"

रानी जी को एक धक्का लगा। संभालने लगीं। कहा—"हम भँज गये हैं। उससे भी मिले?"

"जी, हाँ, मिले।"

रानी साहबा झेंपी। कहा, "बाज़ार का अच्छा माल है। राजा साहब खरीदेंगे तो अच्छा देखकर।"

प्रभाकर खामोश रहे। ज़ब्त करते रहे। कहा—"आदमी की पहचान मुश्किल है।"

"हाँ।" रानी साहबा ने कहा—"हमने देखा है, कलकत्ते में, मगर फूटी आँख। तारीफ़ थी। उससे क्या काम?"

"तरफ़दार बनाना।"

"आप दमदार हैं। गला बतलाता है। पहले किसीसे बातचीत

ऐसी ही, मिल्लतवाली रहेगी, फिर, दिल में जम गया तो फ़ायदे की सोची।"

शराफ़त भरे बड़प्पन से प्रभाकर सर झुकाये रहे। हल्का मज़ाक़ किया—"राजा साहब को चाहिए था, पहले आपसे मिलाते।"

"हम खुद मिल लिये। राजा साहब का क़ुसूर हट गया।"

"जी।"

रानी साहबा ने पूछा—"आप सिगरेट-पान शौक़ फ़रमाते हैं?"

"पान खा लूँगा।"

मुन्ना एक बग़ल खड़ी थी। रानी साहबा ने देखा, वह गिलौरी-वाली तश्तरी उठा लाई। प्रभाकर के सामने मेज़ पर रख दी। प्रभाकर ने पान खाये। मुन्ना हटकर अपनी जगह खड़ी हो गई।

"आप कबतक कलकत्ता रवाना होंगे?" रानी साहबा ने पूछा।

"दो ही एक दिन में, अभी समय का निश्चय नहीं किया। ज़रूरी काम है।"

"कैसा काम आपके सिपुर्द है, क्या आप बतलाएँगे?"

"अभी नहीं। काम आपके फ़ायदे का है।"

"आपकी हम क्या मदद कर सकते हैं?"

"सहयोग।"

"यह तो यों भी है। आप हमारे घर हैं। आपको नहीं मालूम, हम ऐसी हालत में आपके दोस्त रहेंगे या दुश्मन।"

"सही।"

"आपकी हमारी बातचीत पक्की, मगर राजा साहब से हमारा भेद न खुले।"

"हम ऐसा काम नहीं करते। भेद एक ही है हमारा। उससे आपको फ़ायदा होगा तो होगा। आप अपनी परिचारिका से समझ लें, जो हमको ले आई है। फिर हमारे काम से, जो हर तरह नेकचलनी का है, आप मददगार हों; राजा साहब भी हैं; आपकी और उनकी पटरी इस तरह बैठ जायगी।"

"मदद की सूरत क्या हो?"

"आपके यहाँ हमारे केन्द्र हैं, देशी कारोबार बढ़ाने के; आप महिला होने के कारण उनकी स्वामिनी; गृहलक्ष्मी शब्द का उपयोग आप ही लोगों के लिए होता है; आप उसकी चारुता बढ़ाने, प्रसार करने में सहायता करें। देश में विदेशी व्यापारियों के कारण अपना व्यवसाय नहीं रह गया। हम उन्हींके दिये कपड़े से अपनी लाज ढकते हैं; उन्हींके आईने से मुँह देखते हैं; उन्हींके सेन्ट, पौडर, लेवेन्डर, क्रीम लगाते हैं; उन्हींके जूते पहनते हैं; उन्हींकी दियासलाई से आग जलाते हैं। ब्राह्मण की आग गई; क्षत्रिय का वीर्य गया; वैश्य का व्यापार चौपट हुआ। यह सब हमको लेना है। इसीके रास्ते हम हैं। बङ्गभङ्ग एक उपलक्ष्य है। दूसरे प्रान्त अभी बहुत जाग्रत नहीं, यों कांग्रेस से सभी हैं, यह स्वदेशी वाला भाव हमको घर-घर फैलाना है। आप गृहलक्ष्मी तभी हैं। इस समय रानी होकर भी दासी हैं। आपके घर की तलाशी ली जायगी तो अधिकांश माल विदेशी होगा। आप इसीमें हमारी मदद करें। आपकी सहानुभूति भी हमारे लिए बहुत है।"

मुन्ना .खुश हो गई। रानी साहबा दासी हैं, उसको बहुत अच्छा लगा। उसमें रानी का सही स्वत्व आया। वह तन गई।

प्रभाकर कहते गये—"और यहीं से। इस उलझन का खात्मा नहीं हो जाता। अर्थशास्त्र की उलझनदार बड़ी-बड़ी बातें हैं, दूसरे मुल्कों से हमारे क्या सम्बन्ध रह गये हैं, हम कितने फ़ायदे और कितने घाटे में रहते हैं, बैंक क्या हैं, कारोबार की क्या दशा है, यह सब एक मुद्दत की पढ़ाई के बाद समझ आता है। राज्य और राजस्व बिगड़ा हुआ है। यह प्रकार कभी हमारा उत्थान नहीं ला सकता। जाति की नसों में राजनीतिक .खून दौड़ाकर एक राजनीतिक जातीयता लाने में कितना श्रम चाहिए, इसका अनुमान आप लगा सकती हैं। मैं आपका एक ऐसा ही सेवक हूँ।"

रानी साहबा को जान पड़ा, उनका पहला अस्तित्व स्वप्न हो गया है। दूसरा जीवन से उबलता हुआ। देखा, वे मुन्ना से छोटी पड़ गई हैं। मगर उनको बुरा नहीं लग रहा। हृदय के बन्द-बन्द खुल गये हैं। मुन्ना खड़ी मुस्करा रही है।

रानी साहबा ने कहा—"हम आपसे सहमत हैं। आप जैसा कहेंगे, हम करेंगे।"

प्रभाकर सोचते रहे, कहा—"इसकी मार्फ़त हम खबर भेजेंगे और भेजते रहेंगे।" मुन्ना की तरफ़ इशारा किया। और कहते गये, "हर-एक की अपनी सुविधा होती है। दूसरे की आज्ञा वह अपनी सुविधा को छोड़कर नहीं मान सकता या मान सकती। इसका अनुभव महीने

दो-महीने साथ रहने पर हो जाता है। फिर हमारे बहुत तरह के काम हैं, कौन किस योग्य, इसकी पहचान की जाती है।"

"आप इसकी मार्फ़त खबर भेज दीजिएगा, और काम बढ़ाते रहिएगा। आज यहीं भोजन कीजिए। काफ़ी वक्त हो गया। आपको अपनी जगह जाना है।" यह कहकर रानी साहबा उठीं और अपने पहले वाले कमरे में गईं। प्रभाकर ने उठकर विदा किया। पाचकाथाली एक मेज़ से लगा गया था।

हाथ-मुँह धुलाकर भोजन से निवृत्त करके मुन्ना प्रभाकर को उसी तरह उनकी कोठी पर भेज गई। उनकी आज्ञा भी मिली।

[३८]

प्रभाकर बहुत काम न कर सके। कुछ किया और कुछ बरबाद कर दिया। भेद खुल जाने की शङ्का से इसी रात रवाना हो जाने की सोची। मुन्ना को कह दिया कि अच्छा हो अगर रानी साहबा के साथ या अकेली कलकत्ते में राजा साहब की कोठी पर मिले। घनिष्ठता के लिए पास रहना ज़रूरी है। अगर दल में आने की इच्छा होगी तो कर्मियों के साथ, अनेकानेक गृहकार्य करने के लिए, आ सकती है। मुन्ना ने कलकत्ते में मिलने के लिए कहा।

प्रभाकर आज ही रात रहे लोगों को लेकर बेलपुर रवाना हो गये। रहा-सहा व्यवहारवाला सामान कलकत्ते वाली राजा की कोठी में ले जाने के लिए समझा दिया। रात प्रभात होते मुकाम पर पहुँच गये।

पौ फटते पहुँचे। बुआ जग गई थीं। स्नान से निवृत्त हो चुकी थीं दिन भर घर से बाहर न निकलती थीं। एक साधारण ज़मींदार ने जगह

दी थी। बाँस के घेरे में मिट्टी लगाकर दीवार बनाकर छा लिया गया था। तीन-चार कोठरियाँ थीं, तीन-चार चारपाइयाँ और चरखे-करघे आदि। बुआ भोजन पकाती थीं। कर्मी वस्त्र-वयन आदि करते थे। काम जितना था, जोश उससे सैकड़ों गुना अधिक। हिन्दू और ज़मीदारी प्रथा से फँसी जनता साथ थी। जितना अभाव था, पूर्ति उससे बहुत कम। चारों ओर पूर्ति का मन्त्रोच्चार था। लोगों में भक्ति थी। इससे बुआ का स्वास्थ्य अच्छा रहा। लोगों को एक सहारा मिला। राज लेने वाले ज़मींदार को भी यह पता न हुआ कि एक औरत आई है।

किरण फूटी। प्रभाकर हाथ-पैर धोकर बैठे थे। दूसरे साथी भी बैठे थे। दरवाज़ा बन्द था। बुआ प्रभाकर को प्रणाम करने आईं। आँखों में भक्ति और उच्छ्वास, काम की एक रेखा। मुख पर प्राची का पहला प्रकाश। प्रभाकर देखकर खड़ा हो गया। हाथ जोड़कर नमस्कार किया। बुआ ने भी किया। प्रभाकर ने पूछा—"कैसी रहीं।"

बुआ ने इशारे से समझाया—"अच्छी तरह।" अभी वे बँगला बोल नहीं सकतीं। थोड़ी-थोड़ी समझ लेती हैं। यहाँ आने पर उनका मन बिलकुल बदल गया। वहाँ के प्रभाव का दबाव जाता रहा। ललित ने कहा—"थोड़ी-सी चाय पिला सकती हैं?"

बुआ चूल्हा जलाने वाली थीं। चलकर जलाया। कर्मी चाय पीते हैं। सामान है। पानी उबालने लगीं। आधे घन्टे में बढ़िया चाय बनाकर प्यालों में ले आईं। तश्तरी में सुपाड़ी, लौंग, इलायची, सौंफ, जवाइन मुखशुद्धि के लिए। लोग मुँह धो चुके थे। चाय पी,

लौंग-सुपाड़ी खाई । काम की बातचीत करने लगे, कितना कपड़ा महीने में बनकर कलकत्ता जाता है, कितना काम बढ़ाया जा सकता है, लोगों की सहानुभूति कैसी है, अधिक संख्या में लोग व्यापार के लिए तैयार हैं या नहीं । जवाब मिला, ज़मींदार आये थे, दरवाज़े बैठे थे, कहते थे, सरकारी लोग खलमण्डल करते हैं; कारोबार चलने नहीं देना चाहते; डरवाते हैं, जड़ समेत उखाड़ कर फेक देंगे; सज़ा कर देंगे; बदमाशी के अड्डे हैं, कहते हैं ।

प्रभाकर ने कहा—मिलों का मुक़ाबला है, मुश्किल मुकाम है; मिल वाले ज़मींदारों की तरह इस आन्दोलन में शरीक नहीं, सरकार को उनकी तरफ़दारी प्राप्त है; दलाल हैं ये लोग; विघ्न डालेंगे; देहात के बाज़ारों में इनका माल आता है; ज़्यादातर विदेशी माल है; दूकानदारों को ये लोग बाँधे हैं; माल खपाते हैं; विदेशी बनियों का भी सरकार पर प्रभाव है; वे ज़्यादती करने की प्रेरणा देते होंगे; बड़ी मुश्किलों का सामना है । इन देश के गधों से ईश्वर पार लगाये ।

बुआ सुन रही थीं । प्रभाकर से सहानुभूति थी ।

ललित ने पूछा—"मछली पका सकती हैं ? आज प्रभाकर बाबू को यहाँ के ज़मींदार के तालाब से पकड़कर खिलाई जाय, हम लोग भी खायँ, हम बता देंगे, या हमी बनायेंगे ।"

बुआ ने कहा,—"बाद को बना देंगे, हमारे घर में लोग मछली खाते थे । खास तरह की हो तो बता देना ।"

ललित एक साथी लेकर मछली की तलाश में गया । बुआ ने आलू-परवल के भाजे, डालना, रसेदार, शकरक़न्द की इमली और

शकरवाली तरकारियाँ पकाईं, दाल बनाई, भात बनाया; कुल बंगाली प्रकार जैसा बताया गया था। दुपहर तक भोजन तैयार हो गया। मछली भी आई थी, भोजन एक किनारे रखकर उसको भी बना दिया। आसन बिछाये। गिलासों में पानी रक्खा, पतलें लगाईं। कटोरियों में दाल रक्खी; मिट्टी के पियालों में रसेदार तरकारी और मछली। फिर सबको खिलाया। प्रभाकर बुआ के काम से बहुत प्रसन्न हुए। देहात निरापद नहीं, खासतौर से जब यह तैयारी हो रही है।

दूसरे दिन बचकर बुआ लेकर वे कलकत्ता रवाना हुए। कुछ दूर चलकर नाव किराये की, फिर रेल पकड़ी।

[३६]

युसुफ़ छनके। पिता से कुल हाल कहा। अली स्वदेशी के मामले से, राजों के कलकत्ते वाले कोचमैनों से मिले, उनमें किसीका लड़का थानेदार न हुआ था, अली को इज्ज़त से बैठाला। सच-झूठ हाल सुनाकर आन्दोलन में सरकार की मदद के लिए अली ने उनको उभाड़ा उन्होंने साथ देने को कहा और अली के गरोह में आ गये। खिलाफ कार्रवाई में भेद देने का इरादा पक्का कर लिया। कुल काम कर चले।

इसी लगाव से अलीने एजाज़ के घर एक कोचमैन भेजा। नोटबुक के अनुसार 'सीन' कहने के लिए कहा और क्या जवाब मिलता है, खामोशी से लौटकर सुनाने के लिए समझाया। गरोह की पहचान के लिए दूसरे-दूसरे राजों के दो कोचमैन भेजे, ताकि हिम्मत बँधी रहे, यों सरकारी आदमी को कोई खतरा नहीं, यह भी कहा। लोग गये

आगे-पीछे रहे। एजाज़ की कोठी देखी। बगीचे देखे। दरबान से बातचीत की। 'तीन' कहा। नसीम को मालूम हुआ। एज़ाज आ गई थी। समझकर कह दिया। "फँस गया।" लौटकर लोगों ने अली से कहा। अली बहुत ख़ुश हुए। यूसुफ़ से कहा।

युसुफ़ को जान मिली। कुछ अरसा किया फिर गये। ख़ुशी और कामयाबी का दरिया बह रहा था। तरह-तरह की मवरें उठ रही थीं। दिल में गड़ गया कि एक नाका तोड़ लिया इसी रास्ते चले चलेंगे। बग्घी किराये की। दो आदमियों को बैठालकर चले। डोर लगी थी। बढ़िया-बढ़िया स्कायर और रास्ते पार करती बग्घी चली, बढ़िया-बढ़िया मकान। एक बढ़िया फाटकदार बँगलानुमा प्रासाद में बग्घी गई। यूसुफ़ को उतारकर रास्ते पर खड़ी हुई। यूसुफ़ दरबान से कहकर गेस्टरूम में बैठे। सेक्रेटरी आये। देखकर पहचान गये। यूसुफ़ ने कहा,—"तीन और तीन"

सेक्रेटरी मुस्कराकर दबे-पाँव एजाज़ के पास गये। एजाज़ मेज़ से थीं, खत-किताबत कर रही थीं। सेक्रेटरी को देखकर मुख़ातिब हुईं। सेक्रेटरी "तीन और तीन" के साथ आये आदमी का परिचय भी दिया।

एजाज़ ने कहा—आप अपने नोटबुक में दर्ज कर लीजिए कुछ मेरा भी हिसाब है। यहाँ के सुबूत जहाँ तक हैं, लिये रहिए। वकील की मार्फ़त भेजिएगा। कुर्सी डलवा दीजिए। सेक्रेटरी गये। एजाज़ ने नसीम को अपने पाजामे-दुपट्टे से भेजा। कामदार जूतियाँ। सिखला भी दिया। यों नसीम भी भेद लेना जानती थी।

नीचे सेक्रेटरी की बग़लवाले कमरे में कुर्सियाँ डाली गईं। वह आकर बैठी। यूसुफ़ से चलने के लिए कहा गया। वे गये। नसीम ने उठकर सलाम किया। फूलदानी की बग़ल से, कुर्सी पर बैठने के लिए हाथ बढ़ाया। यूसुफ़ ने बैठे देखा यह वही हैं। पूछा —"मिजाज़ अच्छा ?"

"जी, हाँ।"

"हमको पूरी जानकारी चाहिए।"

"हम अपना भी हिसाब रखेंगे।"

"इससे सरकार की तरफ़ से बहुत फ़ायदा न होगा। क्योंकि ख़ैर-ख़्वाही की सिफ़ारिश पहले हमारी ली जायगी। यह एक तरह की कमज़ोरी है और इससे सरकार के कान खड़े होते हैं। आपकी तबियत, जैसा आप चाहें, करें।"

× × ×

(अगले खण्ड में देखिए)